Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

फरवरी १९८३

जन ज्ञान [मासिक]

माघ २०३९

मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रचार साहित्य बांटिए !

१.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पैसे
२.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षुः	४० पैसे
३.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	४० पैसे
४.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षुः	४० पैसे
५.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	५ रुपये
६.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	४० पैसे
७.	पोस्टर—दो प्रकार क	८० पैसे
८.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	४० पैसे
९.	शुद्धि का मंत्र—कुंवर चाँदकरण शारदा	८० पैसे
१०.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ—जहीर नियाजी	४० पैसे
११	हिन्दू जागे ! देश बचाओ !	४० पैसे
१२.	इस्लाम—एक परिचय	४० पैसे
१३.	Bible in the Balance	६० पैसे
१४.	A Challenge to the Christian Faith	२५ पैसे
१५.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षुः	४० पैसे
१६.	पादरियों को चुनौती	२५ पैसे
१७.	बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी	४० पैसे
१८.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	४० पैसे
१९.	और पादरी भाग गया	४० पैसे
२०.	Christianity Unmasked	१.०० रु०
२१.	The Clarian Call	४० पैसे
२२.	जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	६ रुपये
२३.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	५० पैसे
२४.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	१-५० पैसे
२५.	तमिल ट्रैक्ट	५० पैसे

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत कमीशन

५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, वेद मन्दिर

नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द सरस्वती

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५

—

दूरभाष : ५६२६३६
५६४७४१
८०१२११

—

सम्पादक
राकेशरानी

—

वार्षिक शुल्क : २५ रुपए
विदेश में : विमान से ६ पौंड
: समुद्री डाक ३ पौंड
आजीवन : ५०१ रुपये
एक प्रति २.५० रुपये
संवत् २०३९ : फरवरी १९८३
वर्ष १५ : अंक ९

ओ३म्

नमः शिवाय

परमात्मा के कल्याणकारी रूप को हम शिवरात्रि के दिन नमन करते हैं। हम नमन करते हैं उस शक्ति को जो कल्याणकारिणी है।

कल्याण के लिए अ-शिव शक्तियों का; आसुरी बल का, राक्षसी उन्माद का दमन करने का हम संकल्प लेते हैं। हम अपनी आहुति देकर भी प्रलयंकर बन कर उन सब का संहार करेंगे, जिन्होंने धरती की शांति को संकट में डाला हुआ है।

शिवरात्रि का पर्व बोध का पर्व है। जो सोए पड़े हैं या असुरों की चाटुकरिता द्वारा राष्ट्र के सर्वनाश का उपक्रम जुटा रहे हैं, उनकी समाप्ति हमारी नीति है।

हम ने शंख ध्वनि की है। हमने अपना सबल स्वर गुंजाया है, राष्ट्र के लिए धर्म के लिए।

वेद-शास्त्र, रामायण, गीता, महाभारत उपनिषदादि जितने भी अनमोल ग्रंथ हैं उन को प्रभु की धरोहर समझ हम उनकी रक्षा करेंगे।

गौ—गंगा—गायत्री को मिटाने की सोचने वाले असुरों के संहार करेंगे—धर्म, शान्ति, सत्य, अहिंसा की रक्षा के लिए हम प्राण देंगे पर इन्हें मिटने न देंगे।

भारत की अखंडता, एकता, स्वतंत्रता को जो मिटाने की सोचेगा, हम उस का अस्तित्व भूतल से मिटा देंगे—

शिवरात्रि पर यह हमारा संकल्प है।

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िए

सम्पादकीय ३
मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूं—वेदभिक्षु: ६
आप ही के पत्र ९
हिन्दुत्वनिष्ठ कार्यकर्ताओं का सम्मेलन १३
स्वामी अखिलानन्द जी !—प्रो० रत्नसिंह १५
(अंडाल) प० बंगाल में विशाल हिन्दू सम्मेलन—(रिपोर्ट) १८
मुस्लिम अत्याचारों की कहानी—दीनानाथ सिद्धांतालंकार २७
ये सफेद हाथी !—वि. स. विनोद ३१
भगवन्, हमें पवित्र बुद्धि दो—सुरेशचन्द्र वेदालंकार ३३
धर्मो रक्षति रक्षितः—ज्येष्ठवर्मन् ३७
मुझे भी सय्यद शहाबुद्दीन से कुछ कहना है —कन्हैयालाल चतुर्वेदी ४८
आर्यसमाज अकालियों की राह पर—प्रो. धर्मवीर ५०
भारत के मुसलमान भारत में १९४७ से
पूर्व की स्थिति लाना चाहते हैं —वि. स. विनोद ५४
मैंने आपका कर्ज चुका दिया है (प्रेरक प्रसंग)
आप भी सौ वर्ष जी सकते हैं —हंस ५७
शहद : एक अद्वितीय दवा (आपका स्वास्थ्य) ६०
राष्ट्रीय दल अकालियों की मांगों का विरोध करें—वीरेन्द्र ६२
सेना और जाति—आभा ६५
भारत को इस्लामी देश और हिन्दुओं को अल्पसंख्यक बनाने का षड्यन्त्र ६७
आचार्य रजनीश : कुछ नये रहस्योद्घाटन—- ६९
सामयिक विचार—सत्यपाल शास्त्री ७३
पंडिता राकेश रानी की शामली यात्रा (रिपोर्ट) ८१
हिन्दू शब्द का अर्थ है भारतीय —श्रीमती इन्दिरा गान्धी ८३
गाय और भारत—प्रो० बलराज मधोक ८६
इमाम बुखारी का विषवमन—वि. स. विनोद ८८
क्या अस्तित्व रक्षा की चिन्ता साम्प्रदायिकता है ?—डा० राजेश्वर ९०
जन्म राशी के प्रति (कविता)—जय भगवान आर्य ९६

१ मुक़दमा और : १८ हो गए (५-२-८३)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

आराम करो ! आराम करो !!

आज के युग का मंत्र है आराम, करो। युवक का लक्ष्य है आराम, पीढ़ी का चिन्तन है, आराम। कष्ट उठाए बिना धन मिल जाए। काम कुछ करना न पड़ें, यही जीवन का सार है।

देश में क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, यह सोचने का समय किसी के तो पास नहीं। गरीबी मिटाओ का नारा लगा, गरीबी बढ़ी गयी और नारा मिट गया। जनता भूखी है, नंगी है। ग्राम उजड़े हैं और चमकी है राजधानी। राजधानी दिल्ली भारत नहीं है। भारत ग्रामों में है—झोंपड़ों में है यह सोचने का अवकाश भी आज किस के पास है।

क्या इसी अपने राज्य के लिए शहीद हुए थे लाखों कि गरीब भूखा मर जाए और लाखों सफेद हाथी पल जाएं। सदस्य विधानसभा के, संसद् के, राजनीतिज्ञ सभी क्या नए राजा बन कर गरीब देश का खून पीकर मोटे नहीं होते जा रहे ? इसी अंक में पाठक इस विषय के आंकड़े देखेंगे। कितनी पीड़ा होती है हृदय में। गरीबी बढ़ रही है, ग्राम उजड़ रहे हैं। नेता स्वार्थी, पद-लोलुप और झूठ के प्रसारक बन गए, तब बेचारे उजड़ते, भूखे निर्धन की कौन सुनेगा ? कौन सुनेगा उस मां का रुदन, जिस का बेटा औषध के अभाव में मर जाता है।

हम जानते हैं कि आज कोई सुनने के लिए तैयार नहीं, पर एक क्रांति होगी जो इन सब लुटेरे राजनीतिज्ञों को गहरे समुद्र में उठा कर फेंक देगी। प्रधान मंत्री का बेटा एक रात में बिना योग्यता के महान् नेता बन जाता है और एक योग्य प्रतिभाशाली भूख और बेकारी से तंग आकर आत्महत्या कर लेता है। क्यों ? आखिर क्यों ? क्या यही प्रजातंत्र है ?

यह कैसे देश भक्त हैं जो देशद्रोहियों को सिर पर बिठाते हैं। गद्दियों के लिए देश के दुश्मनों से समझौते करते हैं और देश की रक्षा की मांग करने वालों पर मुकद्दमे चलाते हैं।

कौन नहीं जानता कि इस्लाम और ईसाइयत भारत के अस्तित्व को नष्ट करने का व्रत लेकर चल रहे हैं। हमने उनके षड्यन्त्रों से सावधान किया तो हम पर १७ मुकद्दमे। जो देश की हत्या कर रहे हैं, वे खुले घूम रहे हैं। आखिर यह कब तक चलेगा ?

देश दोराहे पर खड़ा है। सर्वनाश या नया रास्ता, दो में से एक विकल्प चुनना होगा। जीवन चाहते हो तो भारत को हिन्दू गणतंत्र घोषित कर एक बार फिर त्याग, तपस्या, बलिदान की परम्परा जागृत करनी होगी, अन्यथा न स्वतंत्रता बचेगी, न धर्म बचेगा, न वेद बचेंगे। न शास्त्र-उपनिषद् बचेंग।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्णय तो आपने करना है। युवकों का लहू खौलता नहीं, किसी में बलिदान देने और लेने की भावना जागती नहीं, हम आवाज लगाते हैं। पर हमारी आवाज सुनता कौन है, अन्यथा हम पर १७ प्रहार होते और १७ नौजवान भी हमारे काम को संभालने के लिए न आते।

धिक्कार युवकों को, वर्तमान के चिन्तन को, जो केवल भोग का जीवन जीना जानते हैं। देश-धर्म पर सिर कटाने वाले वीरों से शून्य भारत के उद्धार की कल्पना कैसे करूं, समझ नहीं आता।

१३ मार्च को दिल्ली आइये। हिन्दू राज्य स्थापना के उपाय सोचने हिन्दू सम्मेलन में भाग लीजिए। हम अपने रक्त से उन वीरों के मस्तक पर टीका लगाएंगे जो अपनी आहुति देश के लिए देने को तैयार होंगे।

१०-वर्षीय बच्ची की कविता और शासन की बौखलाहट

२१ जनवरी को हमारे एक मुकद्दमे की पेशी थी। सरकारी वकील केवल एक छोटी-सी बच्ची (१०-वर्षीय) की कविता को बहुत बड़ा अपराध बता रहा था। हमें उस की बातें सुनकर हंसी आ रही थी।

कविता की इन पंक्तियों पर विशेष आपत्ति थी—मुसलमानों को भगाना है। भारत देश बचाना है। कसा अजीब मजाक है जो राकेट, बम, गोलियों से हिन्दू को भूनें वे शांति दूत और जो केवल यह भाव प्रगट करें कि ऐसों को भगाओ, वे अपराधी हैं।

पाकिस्तान बनने पर भारत से मुसलमानों को लाखों की संख्या में भगाने वाले नेहरू-पटेल पर वर्तमान शासन कितने अभियोग चलाएगा ?

उल्टी गंगा जिन्दाबाद
देशद्रोही जिन्दाबाद।

अब्दुल्ला बुखारी

दिल्ली का तथाकथित शाही इमाम मुंह से लगाम निकालकार आज देश में दंगों की आग भड़काता घूम रहा है। उसने मुसलमानों का जो अहित किया है, उसकी उपमा मिलनी कठिन है।

दंगे कराना उस का स्वभाव बन गया है। ऐसा लगता है कि वह उस औरंगजेब की राह पर चल पड़ा है जिस ने भारत में मुगल साम्राज्य की कबर खोदी थी तो क्या बुखारी साहब कहीं हिन्दुस्तान में इस्लाम को खत्म करने का पुण्य कमाने का तो काम नहीं कर रहे ?

दंगे, कत्ल, अलगाव और मजहबी जनून का दौर भारत की जनता अब नहीं सहेगी। कान खोल कर सुन लो मियां। तुम्हें अपने कहर पर भरोसा है तो हमें अपनी सच्चाई पर गर्व है। भारत मां को बांटना, उस में सांप्रदायिकता का बीज बोना अब अक्षम्य अपराध है। इसे हम नहीं सहेंगे। तुम हमें मारो या छोड़ो, पर अब हम तुम्हें विष नहीं घोलने देंगी।

मुझे बुलाइए नहीं, सहयोग दीजिए !!

आप श्रद्धा और प्यार से बुलाते हैं, इस का धन्यवाद। किन्तु मेरे बाहर जाने से कार्य की कितनी हानि होती है इस की आप कल्पना भी नहीं कर सकते। फिर मैं भाषण में नहीं, काम में विश्वास रखती हूं। अतः जब तक बहुत ही आवश्यक न हो, मुझे न बुलाएं। बस, युद्ध में विजय के लिए सहयोग देते रहें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जहां तक महात्मा वेदभिक्षु: जी का संबंध है वे ३ वर्ष से रुग्ण हैं। फिर भी इन ३ वर्षों में जो कार्य घूम-घूमकर उन्होंने किया, उसे वे ही कर सकते थे। वे जहां भी गए, हिन्दू सिंह बन गया। किन्तु दुर्भाग्य से उन की गम्भीर बीमारी की चिन्ता बुलाने वाले नहीं कर पाते। सादा बिना घी का भोजन, आराम की व्यवस्था और वापसी में नीचे की बर्थ न मिलने से वे फिर रुग्ण हो जाते हैं। अतः उन्हें भी वहीं बुलाएं जहां विशेष आवश्यकता हो और उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा का आप पूरा ध्यान रख सकें। समिति की ओर से —प्रो० धर्मवीर, अध्यक्ष संस्कृत विभाग २४/२६६ चांद बावड़ी रोड़ केसर गंज अजमेर डा० रघुवीर A-M।३६ शालीमार बाग, दिल्ली के पते पर आप उन्हें बुलाएं। ये दोनों ही योग्य विद्वान् और उत्साही युवक हैं। संस्कृत के प्रकांड पंडित हैं। इन के आगमन से आप का कार्यक्रम पूर्णतः सफल होगा।

मैं बहुत थक चुकी हूं। देह काम नहीं देती। इतना ही आशीर्वाद दें कि अपने अंतिम क्षण तक विजय के स्वर गुंजाती रहूं।

हिन्दू राज्य

इन्दिरा गांधी भारत में परिवार-तंत्र लाना चाहती हैं। अन्य पार्टियां भी स्वार्थ तंत्र में विश्वास रखती हैं किन्तु हम भारत में हिन्दू गणतंत्र स्थापित करना चाहते हैं।

हिन्दू गणतंत्र का अर्थ है, यहां की उज्ज्वल परम्पराओं व मान्यताओं पर आधारित धर्म राज्य, जिस में भूख, बेकारी, पशुता, स्वार्थ के लिए स्थान न हो।

हिन्दू गणतंत्र में राज्य व्यापार नहीं करेगा, अपितु व्यापारी को धर्म मार्ग पर चलाने के लिए दंड का प्रयोग करेगा। पुलिस-सेना निर्बल की रक्षा और आततायी का संहार करेगी।

वस्तुतः हिन्दू गणराज्य में वह सब होगा, जिस के लिए हमने स्वतंत्रता का युद्ध लड़ा था। हम देश द्रोही-सांम्प्रदायिक तत्त्वों, विघटनकारियों से समझौता नहीं, अपितु उन का समूल नाश करेंगे।

हम इसी आमूल क्रांति के लिए आप का समर्थन चाहते हैं और भारत के वीरों से कहते हैं कि भविष्य के लिए क्रांति की तैयारी करो। स्वार्थ-परिवार तंत्रियों को क्षमा न करो। सांप्रदायिकता-प्रांतीयता का, विघटनकारी तत्त्वों के समूल संहार के लिए युद्ध घोषणा करो।

संकल्प करो कि भारत को संसार का नंबर एक प्रथम कोटि का राज्य बनाने का। देश के विकास के लिए, देश के भविष्य के लिए। नयी ज्योति का नया प्रकाश लाओ। आगे बढ़ो, विजय हमारी होगी—आप की होगी।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ

° ° ° °

—वेदभिक्षुः

१३ मार्च : निमंत्रण दिल्ली का

आज की परिस्थितयों में हमें कुछ सोचना है। १३ मार्च को देश की राजधानी में एक हिन्दू सम्मेलन होने जा रहा है। इस हिन्दू सम्मेलन में देश के प्रत्येक भाग से प्रतिनिधि भाग लेंगे और एक साथ बैठकर यह चिन्तन करेंगे कि हमें भारत को हिन्दू गणराज्य बनाने के लिए क्या करना चाहिये? हिन्दू राज्य का नारा देना ही पर्याप्त नहीं है। उसकी स्थापना के लिए हमें बहुत बड़ा त्याग और बलिदान देना होगा। देश की वर्तमान विचारधारा बदलना साधारण कार्य नहीं है। पिछले ३५ सालों में हमारा देश भोग की लहर के रास्ते पर चला। हमारे नेताओं ने समाजवाद का नारा दिया और इस के परिणामस्वरूप खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ की भावना फैल रही है। आज की पीढ़ी भी इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं जानती कि हमें जैसे भी हो, जिस रास्ते से भी हो, अधिक से अधिक धन कमाना चाहिये। पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म—ये सब बातें आज के युग में मूर्खों की बातें कही जाती हैं। इसलिए जब हम हिन्दू गणराज्य की बात कहते हैं तो उस समय हमारे मस्तिष्क में यह विचार होता है कि ऐसी विचारधारा को जिसने नवयुवकों को, कन्याओं को, सारे देश को आज भोग विलास के मार्ग पर चला दिया है, बदला जाये। आज की पीढ़ी त्याग, बलिदान, तपस्या, ईमानदारी व सच्चाई की महत्ता को समझे, यह बात निश्चित रूप से विचारणीय है।

हम केवल नारे देकर देश का कल्याण नहीं कर सकते। हमारे राजनीतिज्ञों ने ३५ सालों में देश को अपने स्वार्थ साधन का निमित्त बनाया है। जो कुछ उन्होंने किया है, उसके परिणामस्वरूप भले ही कुछ कारखाने, बांध, सड़कें आदि बन गईं हों, लेकिन देश में रहने वाले ६० करोड़ नागरिक अपने सम्मान को, अपने अभिमान को, अपने गौरव को व्यर्थ होते देखता है। यही सबसे बड़ी दुर्बलता है।

१३ मार्च को दिल्ली पधारें

हमने १३ मार्च को जो सम्मेलन बुलाया है, उसका मुख्य उद्देश्य यह है कि आगे आने वाले दिनों में हम देश का कायाकल्प कैसे करें? क्या हम भी कोई नया राजनैतिक दल बनायें या देश में ऐसा जनजागरण करें कि वर्तमान राजनीतिज्ञों को ही अपना मार्ग सुधारना पड़े? हम क्या करें? यह सच है कि आज भारत में कोई भी राजनैतिक दल ऐसा नहीं, जो दिव्य दृष्टि से देश की वास्तविकता की पृष्ठभूमि पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपना रास्ता चुने। सभी के घोषणा-पत्र, सभी का व्यवहार, सभी का चिन्तन एकांगी है। पार्टी के हित में है, देश के हित में नहीं। देशद्रोही तत्त्व कश्मीर में, असम में, दक्षिण में या यों कह लीजिए कि सारे भारत में अपना जाल फैला चुके हैं। उन्हें विदेशों से अपार धन मिल रहा है और उन्होंने निश्चय किया है भारत को इस्लामिस्तान बनाने का—भारत में ईसाइयों के प्रचार का। उन्हें यह निश्चय करने का अधिकार है। सभी अपने भले की सोचते हैं। वे भी अगर अपने भले की सोचते हैं, तो अपराध नहीं। लेकिन क्या हमारा आत्माभिमान इतना गिर चुका है कि हम यह न सोचें कि देश को कैसे सबल बनाया जाये? देशद्रोही तत्त्वों के षड्यन्त्रों को कैसे समाप्त किया जाये? यदि शासन अपने को ऐसा करने में असमर्थ पाता है, तो क्या देश की ७० करोड़ जनता भी दुर्बल हो गई है? क्या वह अपने देश की रक्षा नहीं कर सकती? हमें इन समस्याओं पर विचार करना है। खुले दिमाग से बिना पूर्वाग्रह के हमें सोचना है कि हम क्या करें?

जो भी कार्यक्रम आप बनायेंगे, जैसा भी निर्देश आप देंगे, उसी के अनुसार देश आगे बढ़ेगा और हम कार्य करेंगे। हम आपके ऊपर कोई विचार थोपना नहीं चाहते। कोई बात लादना नहीं चाहते। विचारों के आधार पर जनमानस में जागृति हुई। आप हिन्दू लहर को सशक्त बनाने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि आगामी चुनावों में अधिक से अधिक ऐसे लोग संसद् में पहुंचें, जो भारत मां की छवि के लिए, भारत के विकास के लिए, भारत की गरीबी मिटाने के लिए कार्य करें।

हम जानते हैं कि अपने-अपने क्षेत्र में आप बहुत व्यस्त हैं। हम जानते हैं कि आपके राजधानी आने में व्यय होगा। फिर भी हम आपको बुलाना चाहते हैं। हम आपको निमन्त्रण दे रहे हैं। इसलिए आप आइये और कोई निर्णायक पग उठाइये। वर्तमान सभी दलीय राजनीतिज्ञों की चालें देश को पतन के गर्त्त में ले जा रही हैं। भारत की राजनीति चाणक्य और वृहस्पति के मार्ग पर चलाने का संकल्प लेकर १३ मार्च की प्रातः दिल्ली आयें। हो सकता है कि हम आपका स्वागत अच्छी तरह न कर सकें। यह भी हो सकता है कि आपके रहने का उचित प्रबन्ध न हो सके, क्योंकि दिल्ली में स्थान का अभाव है। फिर भी विचार की दृष्टि से, चिन्तन की दृष्टि से आप आयेंगे। आकर और एक साथ बैठकर हमें यह विचार करना है कि आगे क्या करना है। यदि हमें जीना है तो हमें रास्ता बदलना होगा। नहीं बदला, तो मरना होगा। अन्य कोई विकल्प आपके सामने नहीं। यदि भारत मां से प्यार हो, गौ, गंगा, गायत्री की रक्षा करना चाहते हों, हिन्दू-धर्म की रक्षा करना चाहते हों, तो समर्पित कार्यकर्ता अपने उक्त संकल्प के साथ दिल्ली में १३ मार्च को अवश्य आयें। आवश्यकता पड़ेगी तो १४ मार्च को भी हम बैठेंगे। दो दिन का समय निकाल कर दिल्ली आयेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। यह भी मेरा विश्वास है कि दूर बैठे हुए लोग मेरे निमन्त्रण को एक आह्वान समझकर मेरी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे।

निवास की व्यवस्था हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग (निकट बिड़ला मंदिर) में, अधिवेशन विट्ठल भाई पटेल भवन रफ़ी मार्ग, नई दिल्ली में दो बजे से होगा। भोजन की व्यवस्था हम कर सकेंगे या नहीं, यह अभी निश्चित नहीं; फिर भी सब कष्ट सहकर भी पधारें। यह मेरी प्रार्थना है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन का क्या लाभ

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का कोई उद्देश्य होता है। हम सारे उद्देश्य पूर्ण कर चुके या भुला चुके। बात केवल एक स्मरण रह गयी देश-धर्म को ऊंचा उठाने की।

घर-परिवार-मित्र-संगी साथी, किसी का लगाव नहीं, इसलिए सब छूट गया। जिससे नेह लगाया, वह रूठ गया। आग जलायी। कूड़ा करकट जलाने को हम ही जल गए, एक स्वार्थ दीखता है सर्वत्र प्यार तो कहीं नहीं दीखता।

नन्हें-नन्हे रुनझुन के गीत शून्य के स्वर में लीन हो गए। आत्मा की धारा का मंगल गान मरुस्थल का वासी बन गया। संघर्ष ही जीवन बन गया और स्नेह दूर पार की दुनियों में सो गया।

इसलिए आज सोचता हूं कि मेरे जीवन का क्या लाभ ? परिवार में कोई अपना नहीं, धरती पर कोई साथी नहीं, अकेले जाना है तो अकेले ही रहना है। यह अकेलापन मृत्यु नहीं है तो क्या है ?

मन की बात कहूं...मैं अब जीना नहीं चाहता कायर की उपाधि दीजिए या निराश व्यक्ति की पर सच यही है कि जीवन में कोई सार नहीं है। देश की हालत पर आंसू बहा लेता हूं, सब के सामने मुस्कुरा लेता हूं। पर क्या लाभ जब साथ चलने वाले २-४ अपने न हों।

गंगा के गीतों की लोरियों को मैंने प्रेरणा के संगीत के रूप में देखा है। वृक्षों के गीतों में मैंने जीवन ज्योति को देखा है। जन-मानस के उभरते स्वरों में क्रांति को साक्षात् सम्मुख देखा है...पर—

मुझ से टूटता नहीं, छूटता नहीं, जो मैं चाहता हूं वह हो न सके तो क्या इस धरती से दूर चले जाना ही अच्छा नहीं आप ही कुछ बताओ, मैं क्या करूं ? "मैं" वर्तमान का प्रतीक हूं। युग की धारा को मैंने ललकारा ही नहीं, उस पर प्रहार भी किया है। सत्य के अस्त्र से दानवता के दैत्य को मानवता की राह पर चलाने की भावना को आप आज भले ही महत्त्व न दें किन्तु आने वाला कल, यह स्वीकार करेगा, कि किसी ने समय को रोकने के प्रयत्न में अपनी आहुति दी थी, और यही चिन्तन धारा मेरी विजय होगी।

बिराट देश में फैली धर्म की पवित्र ध्वजा, वाहिनी के स्वर में कंपन का नहीं, गर्जन का मार्ग प्रशस्त करेगी, यह मेरा विश्वास है।

धर्म अमृत है। वह मनुष्य को देवता बनाता है। धर्म, सत्य को, प्रेम को, शाश्वत दया, उदारता को जन्म देता है। वह मृत्यु की ओर जाए तो मेरे लिए भी मृत्यु वरण ही एक मात्र मार्ग रह जाता है।

मैं जीना चाहता हूं इसलिए कि आप जीवित रहें। मैं मरना चाहता हूं इसलिए कि मेरा धर्म जीवित रहे। कल्पना नहीं, यह सत्य है कि मृत्यु ने आकर मेरे द्वार खटखटा दिए हैं। मैंने उस की आवाज सुनली है, सोचता हूं जब निमंत्रण मिल ही गया तो क्यों न उसे स्वीकार कर लिया जाए ?

इसलिए आज मृत्यु निमंत्रण स्वीकार कर हमने मृत्यु की चुनौती स्वीकार की है। अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी षड्यन्त्र और ईसाइयत के साम्राज्यवाद से टकराने के लिए हम तैयार हैं।

अकेले चलना-बढ़ना-मरना और विजय वरण करना ही हमारा एक मात्र लक्ष्य है ...जीना और जीने के लिए मरना।

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

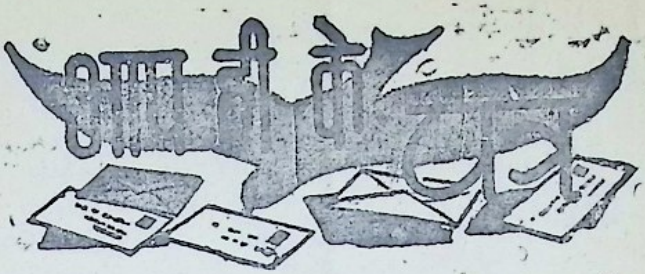

यदि आप को कुछ हो गया, तो......

श्रीमती राकेशरानी, जय हिन्दू राष्ट्र ।

निवेदन है कि 'जन-ज्ञान' पौष २०३९ का मिला और आप का सम्पादकीय लेख पढ़ा । पढ़ने के वाद मन में विचार उत्पन्न हुआ कि आप को पत्र लिखा जाये ।

आप को इस समय सुरक्षा की वड़ी भारी आवश्कयता है । इस लिए आप किसी भी हथियार का लाइसैंस अवश्य ले लें, ताकि आप अपनी सुरक्षा कर सकें ।

हमारा विचार है कि आप को अब वेद मन्दिर नहीं जाना चाहिये । आप को जो भी कार्य करना हो करोलबाग में बैठ कर करना चाहिये ।

आप को बगैर जान पहचान के किसी व्यक्ति से नहीं मिलना चाहिये, क्योंकि हमें याद है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी को गोली मार दी गई थी और उसके वाद उस कार्य को आगे नहीं चलाया जा सका । अगर आप को किसी ने गोली मार दी तो हिन्दुओं की रक्षा कौन करेगा? अगर आप को धोखे से किसी ने अगवा कर लिया तो आप के ऊपर मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़ेंगे, इस लिए आप को हर समय सावधानी से रहना होगा। हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वह आपकी रक्षा करे। आप निडरता से अपना काम करें मगर अपनी रक्षा का पूरा-पूरा ध्यान रखें ।
याद रखें—भगवान् केवल उसी की रक्षा करता है जो खुद अपनी रक्षा करता है ।

श्रीगंगानगर

आप का शुभचिन्तक सेवक

खेमचन्द गुप्त

मेरे पास आपके सम्मान के लिए शब्द नहीं !

वहनजी,

नमस्ते—नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु । समाचार यह है कि मैंने आपका जनज्ञान (श्रावण २०३९ का) सौभाग्यवश अपनी सहेली से देखा, जिसमें विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों से सम्बन्धित लेखों के अलावा जब पृष्ठ सं० ११ पर आपके ऊपर शासन द्वारा लगाए गये ६ अभियोग (धारा १५३ १५३ ए, २९५ ए) पढ़ा तो मेरे मन-मस्तिष्क में क्या हुआ—मेरे पास बताने को शब्द नहीं, जिनसे मैं आपका सम्मान कर सकूं । यदि समाज में इसका व्यापक-प्रचार प्रसार किया गया व मेरी जैसी भारत की सभी बहिनों ने यह निश्चय कर लिया कि ये अभियोग आप पर नहीं वरन् समस्त नारी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जगत् के साथ शासन का यह अन्यायपूर्ण रवैया है, तो वह दिन दूर नहीं, जिसकी आप कल्पना कर रही हैं।

इस उद्देश्य को लेकर मैंने यह निश्चय किया है कि आप मुझे २० प्रतियां जन-ज्ञान (मासिक) की भेजने की कृपा करें। मैं वी० पी० छुड़ा लूंगी। वैसे तो मैं अपने परिवार की दयनीय स्थिति क्या लिखूं—मेरे पति शिक्षित बेरोजगार हैं। यदि मैंने अपने परिवार का समाचार लिखा तो यह आपके मार्ग में बाधक-सा होगा, क्योंकि आपको मेरी भी चिन्ता हो सकती है। लेकिन मैंने अपनी सभी सहेलियों से वादा कर लिया है कि हम सभी प्रतिमास २० प्रतियां जन-ज्ञान की छुड़ायेंगी व हमें कितने भी कष्ट क्यों न सहने पड़ें, हम सब आपके साथ हैं। ज्यादा क्या लिखूं ?

सधन्यवाद

बमीठा

आपकी दर्शनाभिलाषी

—चमेली

मैं श्रीपालसिंह आर्य से असहमत हूं

श्री सम्पादक जी, नमस्ते।

आपके जन-ज्ञान का दिसम्बर १९८२ अंक मेरे सम्मुख है। मुझे इसमें कुछ आपत्तिजनक सामग्री दीख रही है। पृष्ठ ५८ पर श्रीपालसिंह आर्य का लेख बड़ी हद तक कटुता से भरा पड़ा है। जैसे यात्रा भत्ता बनाना। यह काम बड़े-बड़े व्याख्याता आर्यसमाज में करते आये हैं, जिनमें से कई बड़ी ख्याति को प्राप्त हो हमारे नेता तक गये! लेखक महोदय को दुःखी न होना चाहिए। अंगूर के गुच्छों में सब दाने बराबर नहीं हुआ करते। धर्मपुत्र युधिष्ठिर लेखक महाशय स्वयं तो शायद हों, कृपया अपनी पसन्द स्वयं कर उपदेशक समाज को दें, बड़ी कृपा होगी। स्मरण रहे कि मैं तो डाक्टर हूं। मैं किसी समाज से मार्ग व्यय भी नहीं लेता। सम्बन्धित समाज से प्रार्थना किया करता हूं कि यह २० [illegible] रु० की राशि समाज बच्चों, युवकों व युवतियों को समाज में आकर्षित करने [illegible] कर दे। मैं यथासम्भव कोई ऐसी बात अपने प्रवचनों में नहीं कहता, जिस पर मैं स्वय आचरण न करता होऊं।

प्रचार प्रणाली में आप परिवर्तन करना चाहते हैं। इस से मैं भी सहमत हूं, पर बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे। आज तो समाज में नेता अधिक और अनुयायी कम होते जा रहे हैं। खण्डन आज के समय की मांग नहीं और न ही दूसरे मतावलम्बियों की नुक्ताचीनी करना। हिन्दू अपने दोष देख उन्हें निकालें। समाजों में तेरहवें व चौदहवें समुल्लास की कथा का क्या लाभ, जब कि हमारे कई आर्य महाशयों के पुत्रादि भी नास्तिक बन गये हैं। पहले घर का दीवा तो जला लो, जो बुझ-सा गया है।

रहा प्रचारकों को दक्षिणा आदि की बात। भाई, महंगाई कितनी है। पुराने वेतन पर क्या वे जिन्दा रह सकते हैं? क्या उनका परिवार नहीं है? क्या उनके बाल-बच्चे धर्मशालाओं या गुरुद्वारों में मुफ्त भोजन करें? क्या उन्हें कपड़ा नहीं चाहिए? मेरे विचार में तो उन्हें खूब वेतनादि देना चाहिए, ताकि वे धनाभाव से दुःखी न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहें। ठीक है कि कुछ एक संस्कारों में खूब कमा रहे हैं, पर अन्य कई एक तो कम से कम ६ घण्टे प्रतिदिन व्यतीत कर एक समाज से २५ रु० कठिनता से प्राप्त करते हैं जब कि वे दो-चार रोज तो अपने व्याख्यान की तैयारी में दो-तीन घण्टे तो प्रतिदिन अवश्य बिताते होंगे। घर से खाओ और समाज का कार्य करो—यह स्वप्न हो गया है। यदि ऐसा ही संकुचित व संकीर्ण हमारा दृष्टिकोण रहा, तो निकट भविष्य में उच्च स्तर के व्याख्याता न मिलेंगे। शायद यही कारण है कि कोई उपदेशक या भजनीक अपने सुपुत्रों को इस लाइन में डाल कर राजी नहीं। भाड़े के टट्टू शब्द का प्रयोग अन्यत्र इसी अंक में इन उपदेशकों के लिए किया गया है, जो अक्षम्य है। सभा को चाहिए कि सब प्रचारकों इत्यादि की तथा प्रतिष्ठित सदस्यों की एक गोष्ठी इस विषय पर बुलाए, जिसमें निश्चय हो कि उपदेशक आधुनिक युग में किन विषयों पर बोलें, क्योंकि कई भाई ऊटपटांग बोल जाते हैं, जिसे समाज पसन्द भी नहीं करता। पर यह सब कौन करे—जो बोले सो ही कुण्डा खोले। यदि ऐसे ही है तो मुझे सबके नाम व पते लिख भेजें, ताकि उनसे सम्पर्क कर लाभ उठा सकूं। वेद में तो दक्षिणा खूब दिल खोलकर देने का विधान है देखो—यजुर्वेद में स्वयं पढ़ कर।

शोक है कि इन बचे-खुचे पण्डितों को भी आप भूखा मारना चाहते हैं। यदि ऐसे ही करना है तो समाज का प्रत्येक सदस्य स्वयं स्वाध्यायशील बन घर-घर जा कर प्रचार करे। यह समय की मांग भी है। मुट्ठी भर प्रचारक कहां-कहां ठोकर खाते फिरें। स्वयं प्रचार का कार्य सम्भालो। अन्यथा निकृष्ट मनोवृत्ति वाले व कम स्वाध्यायशील ही पल्ले पड़ते रहेंगे और आप असन्तुष्ट होते जायेंगे। नुक्स निकालना आसान है। बातें करना भी कठिन नहीं। जरा बिना वेतन व केवल मार्गव्यय ही लेकर मैदान में आकर काम करके दिखाओ। आने वाली पीढ़ियां आपको याद करेंगी। आज तो भंगी को भी शायद ५-६ सौ रु० प्रति मास मिलते हैं।

नई दिल्ली (डॉ०) नन्दलाल बजाज

जन-ज्ञान घर-घर कैसे पहुंचाया जाये ?

महोदय,

जिस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, उसी प्रकार देश और धर्म को बचाने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। यह आधारभूत सत्य है। वर्तमान में देखिये—मुसलमान और-ईसाई अपना धर्म फैलाने के लिए संघर्ष ही तो कर रहे हैं। धर्मान्तरण करने के लिए पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं, दंगे करवाने के लिए हथियारों और अफवाहों का प्रयोग कर रहे हैं, शासन पर एकजुट होकर दबाव डाल रहे हैं आदि। उनका मोर्चा सिर्फ हिन्दुओं से है। मरता भी हिन्दू है, पिटता भी हिन्दू है और दोषी भी हिन्दुओं को ही बनाया जाता है। इसलिए हमें भी धर्म को बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।

संघर्ष की सबसे पहली सीढ़ी है चेतना। यदि प्रत्येक हिन्दू को मूल समस्या से अवगत करा दिया जाये, तो हमारे पास किसी चीज का अभाव नहीं रहेगा। भारत सम्पन्न देश है इस बात को नहीं भूलना चाहिए। लोग कहते हैं कि हिन्दुओं को संघर्ष के लिए न तो अन्तर्राष्ट्रीय सहायता मिलेगी, न ही कहीं से संरक्षण, लेकिन विगत को देखकर हमें यह जान लेना चाहिए कि न ही हमें किसी अन्तर्राष्ट्रीय सहायता की जरूरत है, न ही संरक्षण की। हम उन्हीं भामाशाहों की सन्तानें हैं, जिन्होंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन का अभाव नहीं रहने दिया। हम उन वीर ऊधमसिंह, भगतसिंह सरीखों की सन्तानें हैं, जिन्होंने अंग्रेजी सरकार होते हुए भी बम बनाकर विदेश में पार्लमेंट में फैंके थे।

'जन-ज्ञान' जन-जन तक पहुंचाने के लिए हम सब प्रयास करें तो अल्प समय में ही उसे सम्पूर्ण हिन्दुस्थान में पहुंचाया जा सकता है। दलगत राजनीति एवं मत-मतान्तरों को भुलाकर जन-ज्ञान पाठक यदि महीने में इस पत्र को कम से कम पांच व्यक्तियों को पढ़ाये कम से कम एक व्यक्ति को सदस्य बनाये, वर्ष में कम से कम एक मित्र या सम्बन्धी को स्वयं वार्षिक शुल्क भेजकर सदस्य बनाये, साल भर में कम से कम दस प्रतियां स्कूल या कालेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को तथा दो प्रतियां अतिथियों को—तो एक वर्ष में ८ नये व्यक्तियों को जन-ज्ञान पहुंचाया जा सकता है। यदि उनके परिवार के तीन और सदस्यों तथा एक विद्यार्थी से सात अन्य विद्यार्थियों से जन-ज्ञान के सहयोग को माना जाये, तो कुल ३०१ व्यक्तियों को परोक्ष रूप से अवगत कराने का भागीदार एक जन-ज्ञान पाठक होगा। यदि यही क्रम गुणात्मक तरीके से चले, एक वर्ष में ही तेरह करोड़ से अधिक व्यक्तियों को जन-ज्ञान का बोध कराया जा सकता है। जन-ज्ञान पढ़ने पर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जो धर्म युद्ध के लिए आहुति न भेजे। तो तब हम पूरे जोर से पैट्रोडालर का मुकाबला कर सकते हैं। देखना तो यह है कि हम इसमें कितनी आहुति देकर अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। साथ ही प्रतिबन्धित पुस्तकों से भी जनता को अवगत करना होगा। जिन पाठकों की जान पहचान मुस्लिम या ईसाई परिवारों से हो, उन्हें इन पत्रिकाओं तथा सत्यार्थ-प्रकाश से अवगत कराना होगा। गृहस्थी इतना ही कर सकता है, किन्तु विद्यार्थी वर्ग इस कार्य में बहुत अधिक सहयोग दे सकता है।

उस जन-ज्ञान पाठक को जिसे अपने जीवन व्यापार से फुरसत नहीं मिलती, हिन्दू रक्षा समिति के नाम से आर्थिक सहायता भेजकर धर्मयुद्ध में विजय का भागीदार बनना चाहिए, क्योंकि आर्थिक सहायता के बिना क्रान्ति की गाड़ी चल ही नहीं सकती।

प्रत्येक नगर-गांव में हिन्दू रक्षा समिति गठित होनी चाहिए। यह सारा काम जन-ज्ञान पाठकों को ही करना है। जहां स्थानीय हिन्दू रक्षा समिति गठित की गई है, वहां उन्हें अपने क्षेत्र की समस्याओं का तथा उनसे किस प्रकार निपटा जा सकता है इस बात का ज्ञान होता है। अतः एकजुट होकर आने वाली समस्या का मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

उपरोक्त तरीके से हम अपने कर्त्तव्य को पूरा करें। तब देखें कि हिन्दू राष्ट्र बनने में कितने महीने और लगते हैं। सोचिये और अपने आप से पूछिये कि 'मैंने अपना कर्त्तव्य कितना पूरा किया है?'

—स्वामी बेधड़क वैद्य

श्री शिवकुमार शास्त्री, पूर्व संसद् सदस्य के पते में परिवर्तन

मैं २८ जनवरी से अपने नये निवास नं० एम-८७, साकेत, नयी दिल्ली-११००१७ में चला गया हूं। मेरा टेलीफोन नं० ६६६५५२ ही रहेगा।

भवदीय

शिवकुमार शास्त्री

त्रिमास जन-ज्ञान की २० प्रतियां ३०) में मंगाकर मित्रों में बांटिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१३ मार्च को हिन्दुत्वनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन

हिन्दू रक्षा समिति का महत्त्वपूर्ण निश्चय

दिनांक २६-१२-८२ (रविवार) को हिन्दू रक्षा समिति के कार्यालय १५६७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली में समिति की एक बठक हुई।

समिति का उल्लेखनीय निश्चय यह है कि आगामी १३ मार्च को हिन्दुत्व-निष्ठ कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन आयोजित किया जाये।

देश में मुसलमानों एवं सिक्खों की पृथक्तावादी नीतियों की भर्त्सना की गई और हिन्दुओं के अस्तित्व को मजबूती प्रदान करने पर गहन विचार-विमर्श हुआ। देश में राजनैतिक मंच पर हिन्दुओं की भूमिका को सफलतापूर्वक चलाने का संकल्प लिया गया। इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम महात्मा वेदभिक्षु: जी ने हिन्दू कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव रखा, जो सर्वसम्मति से पास हुआ।

श्री देवकीनन्दन शर्मा एडवोकेट ने कहा कि हिन्दुओं का नेतृत्व किसी प्रभाव-शाली हिन्दू नेता के हाथों में होना चाहिए और समस्त हिन्दुओं को एक राजनैतिक प्लेटफार्म पर संगठित करना होगा। उनकी इस बात का समर्थन करते हुए म० वेदभिक्षु: जी ने कहा कि आज की परिस्थितियों में यह बात सही है कि बिना राजनीति के गाड़ी नहीं चलती। हम हिन्दुओं को संगठित करके उनसे एक प्रतिज्ञा-पत्र भरवा लें कि वे केवल हिन्दुओं को वोट देंगे और यह शपथ लेंगे कि हमें हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करनी है।

श्री पटवारी जी ने कहा कि लोकसभा, राज्यसभा, विधानमण्डलों आदि किसी भी राजनैतिक अखाड़े में हिन्दुओं की ओर से लड़ने वाला कोई सच्चा हिन्दू नेता नहीं है। राजनीति के इन महत्त्वपूर्ण स्थानों पर सिक्खों, मुसलमानों एवं ईसाइयों के विशेष अधिकारों एवं स्थानों की मांग करने वाले नेता हमें दिखाई देते हैं। मगर हिन्दू-बहुल इस देश में हिन्दुओं के प्रति किसी नेता का कोई लगाव दिखाई नहीं देता। कितनी शर्म की बात है कि हिन्दुओं की रक्षा एवं उनका नेतृत्व करने के लिए कोई भी हिन्दू नेता तैयार नहीं।

उक्त बात को स्वीकारते हुए पं० राकेशरानी जी ने एक उदाहरण दिया कि किस प्रकार प्रधानमन्त्री ने अपने मन्त्रियों की एक बैठक बुलाई थी, जिसमें २४ हिन्दू नेता थे व ३ मुसलमान संसद्सदस्य थे और मेरी गिरफ्तारी की चर्चा किये जाने पर २४ के २४ हिन्दू नेता चुपचाप बैठे रहे और वही बात मानी गयी, जो केवल ३ मुसलमान सदस्यों ने कही।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

म० वेदभिक्षु: जी ने कहा कि हिन्दुओं की अवहेलना हिन्दू सरकार ही कर रही है—यह कितने आश्चर्य की बात है। आपने सुना होगा कि किसी भी हरिजन को लड़ने वाली पैदल फौज में भरती नहीं किया जाता, लेकिन यदि वही हरिजन सिक्ख हो जाता है तो उसे फौज में भर्ती कर लिया जाता है। ऐसी फौजें दो नामों से जानी जाती हैं—१. सिक्ख रेजीमेंट २. सिक्ख लाइट इन्फेंटरी।

इसी सम्बन्ध में वेदभिक्षु: जी ने यह भी कहा कि केन्द्रीय सरकार सिक्खों को कोई साफ जवाब देने लिए तैयार नहीं! अतीत की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि एक बार मा० तारासिंह ने जब खालिस्तान की मांग की थी तो सरदार पटेल ने कहा था कि खालिस्तान बनने के बाद फिर कोई सिख देश के किसी भी स्थान पर न तो रह सकेगा और न ही कोई व्यवसाय आदि कर सकेगा। इस शर्त पर मा० तारा सिंह जी चुप हो गये थे। आज की सरकार इस प्रकार की स्पष्ट बात कहने में समर्थ नहीं है।

श्री पटवारी जी ने कहा कि हमारी सरकार वोटों की राजनीति ही खेलती रही है। अल्पसंख्यक की बीमारी हमारी सरकार ने ही फला रखी है। सिक्खों की आवाज उठाने वाला, मुसलमानों की आवाज उठाने वाला आपको अखबार भी मिल जायेगा परन्तु ऐसा कोई अखबार नहीं जो सिर्फ हिन्दुओं का नेतृत्व करता हो। सिक्ख तो अपने पोस्टर भी सिर्फ गुरुमुखी एवं अंग्रेजी में ही छपवा रहे हैं। वे हिन्दी को बिल्कुल प्रश्रय नहीं देते। गुरुद्वारों के पास इस प्रकार के पोस्टर एवं दीवारों पर सिक्खों के पक्ष में लिखे गये शब्द इस वाक्य के गवाह हैं।

उक्त बात का समर्थन करते हुए डा० कृष्णलाल ने कहा कि जनगणना के समय आपने देख ही लिया कि सम्बन्धित फार्म पर भाषा वाले कालम में सभी सिक्खों ने अपनी मातृभाषा पंजाबी हो लिखवाई, जबकि उन्हें हिन्दी लिखवानी चाहिये थी।

श्री पटवारी जी ने समस्त हिन्दुओं को एक राजनैतिक मंच पर लाने के आह्वान की पुनरावृत्ति करते हुए कहा कि मेरे ख्याल से 'भारतीय जन परिषद्' नाम से एक राजनैतिक दल की स्थापना की जाये। संसद् में हमारी शक्ति होनी अनिवार्य है। हिन्दू-बहुल देश होते हुए भी यहां गोहत्या बन्द नहीं की जा सकी। हिन्दू कोड बिल पास हुआ, जबकि इस प्रकार का बिल बनाना ही था तो राष्ट्रीय कोड बिल के नाम से बनाना चाहिये था, जिसके अन्तर्गत भारत के समस्त नागरिक आते।

बैठक के अन्त में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये—

१. १३ मार्च १९८३ को हिन्दुत्वनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के एक सम्मेलन का आयोजन किया जाये।

२. उक्त सम्मेलन के लिए विट्ठलभाई पटेल भवन उचित रहेगा और उसे दो दिन के लिए बुक कर लिया जाये।

३. आर्यसमाज मन्दिर करोलबाग में लोगों के ठहरने की व्यवस्था की जा सकती है।

४. संयोजक का कार्यभार डा० रघुवीर जी संभालेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हा ! स्वामी अखिलानन्द जी !

—प्रो० रत्नसिंह, गाजियाबाद

बात लगभग ४६ वर्ष पुरानी है। मेरठ के नौचन्दी मैदान में उत्तर प्रदेश आर्यप्रतिनिधि सभा (उस समय इसका नाम संयुक्त प्रान्तीय आर्यप्रतिनिध सभा था) का स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया जा रहा था। केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं वरन् समस्त भारतवर्ष के कोने-कोने से लाखों आर्य नर-नारी समारोह में भाग लेने आये हुए थे। मैं डी. ए.-वी. हाई स्कूल मुजफ्फरनगर में सातवीं कक्षा का छात्र था। अपने स्कूल के स्वयंसेवकों के साथ स्वयंसेवक रूप में मैं भी उस समारोह में उपस्थित था। समारोह की व्यवस्था हेतु सभा मंच तथा सम्पूर्ण नौचन्दी मैदान में एक पतले-दुबले व्यक्ति को इधर से उधर बड़ी तेजी के साथ घूमते देखा। पूछने पर पता चला कि यही सज्जन थे श्री बाबू कालीचरण। बाबू जी मेरे स्वर्गीय पिता श्री महाशय रामचन्द्र आर्य के घनिष्ठ मित्र थे। उनसे बाबू जी का नाम कई बार सुना हुआ था। पिता जी बाबू जी के आर्यत्व व कर्मठता की प्रशंसा किया करते थे। मैंने अपने मन में यह कल्पना की हुई थी कि बाबू कालीचरण जी कोई हृष्ट-पुष्ट, मोटे-ताजे शरीर वाले व्यक्ति होंगे। इसलिए उस दिन उनके दर्शन करने पर यह विश्वास ही नहीं हुआ कि यह पतले-दुबले शरीर वाला व्यक्ति ही कोई कर्मठ आर्य नेता हो सकता है। स्वर्ण जयन्ती की सफलता का बहुत बड़ा श्रेय श्री बाबू कालीचरणजी व उनके अभिन्न मित्र व सहयोगी स्वर्गीय चौधरी जयदेव सिंह एडवोकेट को ही था।

यही बाबू कालीचरण जी बाद में आश्रम परिवर्तन कर स्वामी अखिलानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। कई वर्षों से आपने दयानन्द वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद को अपना प्रचार केन्द्र बनाया हुआ था। १६ दिसम्बर १९८२ को अपने कमरे में स्टोव जलाते हुए आपके वस्त्रों ने आग पकड़ ली। पास वाले कमरों से संन्यासी महानुभाव तुरन्त दौड़कर आये। उनके कपड़ों की अग्नि को बुझाया। परन्तु तब तक उनका शरीर बुरी तरह जल चुका था। डाक्टर के पास ले जाकर चिकित्सा कराई गई। सूचना मिलते ही मैं उनके पास पहुंचा। उस समय उनके शरीर में भयंकर पीड़ा थी। अगले दिन मैं आर्य समाज भिलाई व जबलपुर के वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिए गाजियाबाद से प्रस्थान कर चुका था। मुझे यह विश्वास था कि शीघ्र ही स्वामी जी को आराम मिल जायेगा। परन्तु जबलपुर आकर मुझे यह दुःखद समाचार मिला कि १९ दिसम्बर रात्रि में पूज्य स्वामी जी का देहावसान हो गया।

स्वामी जी की कार्यकुशलता, कर्मठता व निर्भीकता की सर्वत्र चर्चा रहती थी। आपका सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा में व्यतीत हुआ था। वर्षों तक आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री व उपप्रधान रहे। स्वामी ध्रुवानन्द जी के आप परम सहयोगी व मित्र थे। उन्हीं की प्रेरणा पर आपने संन्यास आश्रम की दीक्षा ली थी। संन्यासी बनकर कई वर्षों तक आपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशों में आर्यसमाज का प्रचार किया। आपके ही दृढ़ निश्चय और अथक परिश्रम से साप्ताहिक आर्यमित्र ने दैनिक आर्यमित्र का रूप धारण किया जिसका सफल सम्पादन किया श्री पं० भारतेन्द्र नाथजी (वर्त्तमान महात्मा वेदभिक्षु:) ने। इन दोनों महानुभावों ने अपने स्वास्थ्य और सुख की चिन्ता न करते हुए दिन में २०-२० घण्टे कामकर अल्प साधनों से दैनिक आर्यमित्र को लगातार उन्नति की ओर अग्रसर किया। किन्तु खेद है कि सभा की पारस्परिक दलबन्दी का शिकार होकर यह दैनिक अपने शैशव काल में ही दम तोड़ गया।

स्वामी अखिलानन्द जी वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ थे। कर्म सिद्धान्त पर आपका गहन अध्ययन था। वर्त्तमान कर्मों का फल भावी जन्म में मिलता है, इस मत के आप पोषक थे। ९२ वर्ष से अधिक आयु होने पर भी जीवन के अन्तिम समय तक आप वैदिक धर्म प्रचारार्थ यात्रा करते रहे। वृद्धावस्था का आपकी वाणी पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा। ऐसे कर्मठ, तपस्वी और वीतराग संन्यासी का प्रयाण वस्तुतः आर्य जगत् के लिए दुःखद है। उनके देहावसान से हुई क्षति की पूर्ति निकट भविष्य में हो सके, ऐसी अभी तो आशा नहीं है।

---

१३ मार्च, रविवार १९८३ को

विट्ठल भाई पटेल भवन रफ़ी मार्ग—दोपहर २ बजे

हिन्दू प्रतिनिधि सम्मेलन में

आप सादर आमंत्रित हैं

१. हिन्दू गणराज्य कैसे बने ?

२. ईसाई मुसलमानों के आक्रमण कैसे विफल हों ?

३. आज की स्थिति में हम क्या करें ? महात्मा वेदभिक्षु: जी के सबल नेतृत्व में संपूर्ण स्थिति पर विचार के लिए अवश्य पधारें।

(प्रो०) धर्मवीर
मन्त्री

—(डा०) रघुवीर
संयोजक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मान्यवर !

संकट घिरा है

राष्ट्र पर–स्वतन्त्रता पर–धर्म पर ।

हमने चुनौती स्वीकार की है ।

परिणाम, एक वर्ष में–

१७ मुकदमे

हम पर चल रहे हैं

(आज २१-१-८३ तक)

क्या यह युद्ध हमें अकेले ही लड़ना होगा ?

शिवरात्रि पर

संपूर्ण "शिव" के लिए

आप स्वयं भूखे रहकर भी अधिक से अधिक सहयोग दीजिए–औरों से दिलाइए–विजय के लिए–धर्म रक्षा के लिए–हमारा साथ दीजिए ।

क्या आपके हृदय तक मेरी पुकार पहुँचेगी ?

प्रतीक्षा करूंगी—

–राकेशरानी

संपादक

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

15 रु० की पुस्तकें उपहार में

जन-ज्ञान

का

एक नया सदस्य बनाइए

अपने २५) और नए सदस्य के २५)
कुल ५० रुपए हमें भेजिए

आप का शुल्क भले ही किसी मास में समाप्त हो रहा हो—आप ५०) हमें भेजिए। हम आपको ५०) भेजने पर १५) मूल्य की उत्तम पुस्तकें केवल डाक व्यय २) की वी० पी० से आप को भेज देंगे।

जल्दी कीजिए और आगे बढ़ने में सहयोग दें।

अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें।

आभा
—प्रबन्धक
जन-ज्ञान (मासिक)
नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी अखिलानन्द सरस्वती

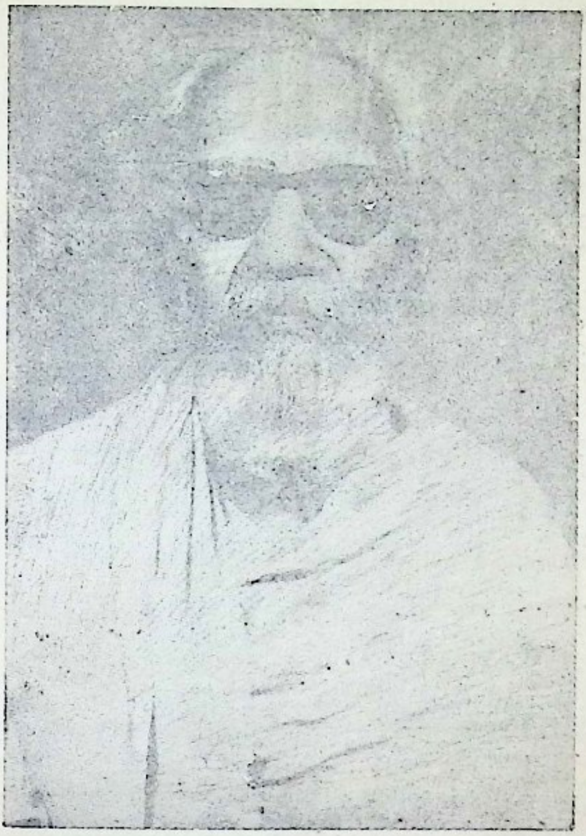

जिन व्यक्तियों ने मुझे जीवन भर प्रभावित किया, जिन्हें पास से देख कर उन के स्नेह भरे भाव को देखा, वे हमारे अत्यन्त आदरणीय श्रद्धेय स्वामी अखिलानन्द सरस्वती १९ दिसम्बर को हमें छोड़ गए। उन की स्मृतियां ही हमारी प्रेरणा है।

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंडाल (प० बंगाल) में

विशाल हिन्दू सम्मेलन

संपूर्ण क्षेत्र हिन्दू धर्म की जय के नाद से गूंज उठा

अंडाल (बर्दवान) में आयोजित विशाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ व हिन्दू सम्मेलन २९-३० दिसम्बर को हिन्दी हाईस्कूल के प्रांगण में श्री जयनारायण चौबे के प्रयत्नों व श्री केशवप्रसाद जी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

यज्ञ में हजारों बंगालियों ने भाग लिया। लखनऊ के श्री इन्द्रदेव आचार्य ब्रह्मा थे। ठाकुर विन्ध्येश्वरी प्रसाद के भजनों की धूम थी।

३० दिसम्बर को हिन्दू सम्मेलन में जनता उमड़ पड़ी। महात्मा वेदभिक्षु: की वीर वाणी ने संपूर्ण क्षेत्र में नया जीवन संचारित किया।

जनता मंत्रमुग्ध होकर इनके निर्देशन को सुनती रही। सभी का यह एक स्वर से कहना था कि ऐसी निर्भीक वाणी उन्होंने जीवन में किसी की भी नहीं सुनी।

महात्मा वेदभिक्षु: जी के भाषण के प्रमुख भाग निम्नलिखित हैं--

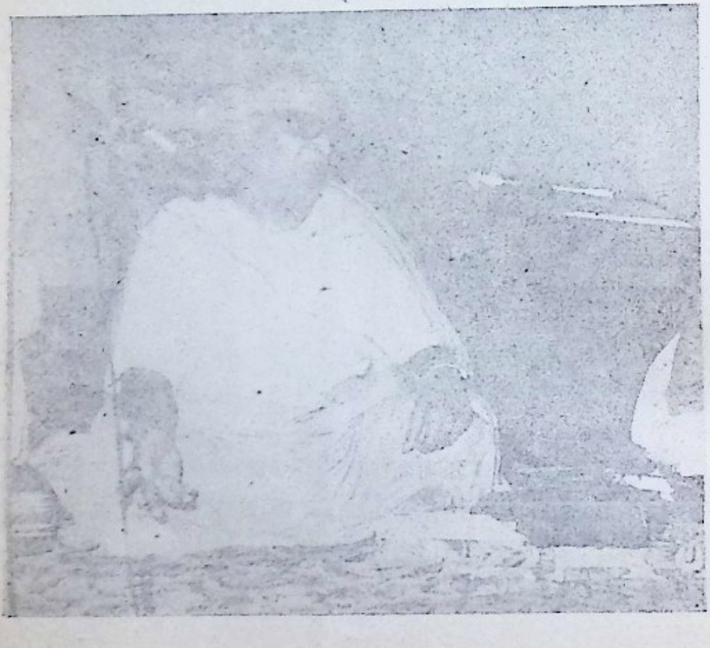

भाषण की एक मुद्रा : महात्मा वेदभिक्षु:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाइयो और बहनो,

इस कार्यक्रम के लिए ही मुझे दिल्ली से यहां आना पड़ा। मैं आजकल और जलसों में बिल्कुल नहीं जाता और प्रायः ऐसी जगह भी नहीं जाता, जहां कोई समस्या न हो। पिछले तीन सालों से हमने अपनी शक्ति वहीं लगा रखी है, जहां झगड़े, दंगे या कुछ ज्यादा गड़बड़ चल रही है।

प्रश्न यह है कि समस्या क्या है? आपको अच्छी तरह पता है कि १५ अगस्त १९४७ को हम आजाद हुए। अंग्रेजी हुकूमत चली गई और हमारी अपनी हुकूमत आ गई। मुसलमान भाइयों ने कहा कि हम हिन्दुओं के साथ नहीं रह सकते। मेरी कोई भी बात कल्पना नहीं है। इतिहास के पन्नों में सब लिखा है। मुसलमानों के अगुआ मिस्टर जिन्ना ने कहा था कि हमारा धर्म, हमारी संस्कृति, हमारे विचार अलग हैं, इसलिए हम हिन्दुओं के साथ नहीं रह सकते।

इसलिए हम अलग हिस्सा चाहते हैं। उन्हें अलग हिस्सा मिल गया। जो बाकी भारतवर्ष बचा, वह था हिन्दुओं का देश। मुसलमानों का देश पाकिस्तान बन गया। जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि हमने सिर कटाकर सर दर्द की दवा की। लेकिन हुआ क्या? सिर भी कट गया और दर्द भी नहीं गया। कुछ दिन शान्ति रही, साम्प्रदायिक शक्तियां दबी रहीं। मुस्लिम लीग के नाम से किसी को सिर उठाने का अवसर नहीं मिला। लेकिन दुर्भाग्य है कि हमारे देश के राजनीतिज्ञ, एक तरफ तो ईमानदार बनने का दावा करते हैं दूसरी ओर उन्हें अपनी कुर्सी के अलावा कुछ नहीं सूझता। उन्होंने देश में साम्प्रदायिकता को जन्म दिया।

१९४७ से अब आया है १९८३। इतने साल बीतने के बाद भी आज वही १९४७ की स्थिति फिर आ गई। इसकी एक पृष्ठभूमि है। एक कहानी है। आपने इतिहास पढ़ा होगा। भारतवर्ष की घटनाओं का भी अध्ययन किया होगा। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि २०वीं शताब्दीमें भारत के इतिहास का सबसे बड़ा मनहूस दिन कौन-सा था? बताइये, कौन-सा दिन था वह? आप कहेंगे कि १५ अगस्त १९४७। लेकिन यह गलत है। भारतवर्ष के इतिहास का सबसे मनहूस दिन था एक अगस्त १९२०। जिन लोगों ने इतिहास को पढ़ा है, वे जानते हैं कि इस दिन क्या हुआ था।

उस दिन लोकमान्य तिलक का बम्बई में देहान्त हुआ था और भारतवर्ष की बागडोर महात्मा गांधी के हाथ में आ गई थी। उस दिन मुसलमानों की खिलाफत की मांग को हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई के साथ जोड़ा गया था। मैं पूछना चाहता हूं कि एक अगस्त १९२० को महात्मा गांधी ने जो हिस्टॉरिकल भूल की थी, उसका परिणाम क्या निकला? मुसलमानों ने केरल के अन्दर जो मोपला जिला है, जिसे आज कल मल्लापुरम् कहते हैं, वहां एक लाख बच्चों का खून बहाकर जवाब दिया। मोपला कांड आप में बहुतों ने पढ़ा होगा। वीर सावरकर ने, जिन्होंने अपनी जिन्दगी के ३०-४०साल अण्डेमान की जेल में काटे, एक उपन्यास लिखा था। उपन्यास क्या, एक सच्ची कहानी है, जिसे पढ़कर कोई आदमी रोये बिना नहीं रह सकता। कुएं लड़कियों की लाशों से भर दिए गए। नौजवानों को काट-काट कर कुंओं में डाल दिया गया।

मोपला जिले के गांव के गांव जला दिए गए, क्योंकि मुसलमानों ने कहा कि हमारी खिलाफत की मांग मान ली गई है। हमें आजादी मिल गई है। हम आजाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो गये हैं। अफगान सेना हिन्दुस्तान पर कब्जा करने आ रही है। अब काफिरों को जिन्दा रहने क कोई अधिकार नहीं। कोई मुझे बताये कि एक अगस्त १६२० से पहले, कहीं कोई दंगे होते थे? दंगों की शुरुआत महात्मा गांधी की नीतियों ने की। एक अगस्त १६२१ से १६४७ तक हिन्दुस्तान में जितना खून बहा, मेरी भारत मां के टुकड़े हुए, पूर्वी बंगाल और पश्चिम पंजाब के अन्दर रक्तपात हुआ, जिन्होंने यह सब देखा है, वह सब याद कर उनका खून खौल उठता है। क्या कुछ नहीं हुआ? हमने इन्सान को जानवर बने देखा था। हमने इन्सान को राक्षस बने देखा।

इस सबको इसलिए सहा कि मेरा देश आजाद हो गया है। गुलामी की जंजीरें तोड़ी जा चुकी हैं। अब हिन्दुस्तान की जमीन पर यह भूल नहीं दोहराई जायेगी। लेकिन बदकिस्मती थी इस देश की—भारतवर्ष पर हुकूमत करने वाले उसी नीति को मानने वाले थे, जो महात्मा गांधी की नीति थी। वह नीति थी हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई की। हमें मुसलमान नाम से कोई दुश्मनी नहीं है, कोई विरोध नहीं है। हमें विरोध है तो उन लोगों से, जो मेरी भारत मां के टुकड़े करना चाहते हैं। जो भारतवर्ष में रहकर पाकिस्तान के गीत गाते हैं। हमें दुश्मनी है उन लोगों से जो कहते हैं कि हम हिन्दुओं के साथ नहीं रह सकते।

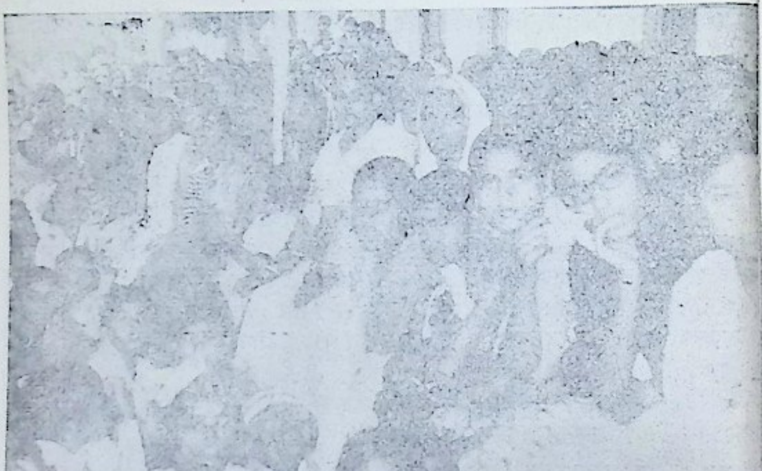

सम्मेलन में उपस्थित महिलाएं

हमें उन देशद्रोहियों से दुश्मनी है जो आज भी भारतवर्ष को पाकिस्तान के रूप में बदल देना चाहते हैं। चलो मेरे साथ और चलकर देखो। हम मुरादाबाद गए। वहां जाकर हमने उन मुहल्लों को देखा, जहां आग लगी हुई थी। मेरे साथ प्रो० रामसिंह थे। हम एक मुहल्ले में गये। वाल्मीकियों का मुहल्ला था वह। एक नवयुवक दिखाई दिया। वह हमें देखकर रो पड़ा। हमारा दिमाग चकराया कि यह इतना क्यों रो रहा है? उसने पैर पकड़ लिये और रोता ही रहा। मैंने पूछा भाई, यह क्यों रो रहा है? वे बोले—आप सुनेंगे?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने कहा—हां-हां, बताइये, क्या बात है ? तो उन्होंने बताया कि यह जो सामने जला हुआ मकान आप देख रहे हैं, इसमें इसकी बीवी, बहन और मां को जिन्दा जला दिया गया । उसने अपना कुर्ता उठाया तो देखा कि उसकी सारी छाती जली हुई थी । सच मानिये कि ऐसी दर्दनाक स्थिति को देखकर मैं भी रोये बिना नहीं रह सका । इतने हथियार वहां की मस्जिदों में से निकले कि वहां के इनचार्ज ने कहा कि अगर इतने हथियार हमें मिल जाते तो हम आधा पाकिस्तान जीत लेते । काफी मात्रा में मशीनगनें, स्टेनगनें, राकेट, आदि बरामद हुए ।

मैं मुसलमानों से पूछना चाहता हूं कि ये सब हथियार तुमने किस पर इस्तेमाल करने के लिए इकट्ठे किए हैं ? मेरठ में हुए दंगों की खबर में पढ़ा गया कि वहां बहुत-से हथियार पकड़े गए । जब पुलिस ने बुर्कों में जा रही औरतों की तलाशी ली, तो बुर्कों के अन्दर बन्दूकें निकलीं । एक जगह की बात नहीं । हिन्दुस्तान की हर मस्जिद को हथियारों का भण्डार बनाया जा रहा है । किसलिए ? झगड़ा होता है मक्का की मस्जिद में । किसी हिन्दू के साथ नहीं, बल्कि दो मुसलमानों का आपस में झगड़ा होता है । और आग लगाई जाती है हैदराबाद में हिन्दुओं की दुकानों में; किसके पास जवाब है इस बात का ।

यज्ञ वेदी पर आचार्य पाठक के साथ

दिल्ली में तिरंगे झण्डे को जलाया जाये और हमारे नेता चुप रहें । मैं कहता हूं कि कोई इंग्लैंड में यूनियन जैक को जलाकर देखे; उसे वहां गोली से भून दिया जायेगा । लेकिन यह मेरा मुल्क है, जहां की राष्ट्रीयता सोई पड़ी है । हमारा एक लक्ष्य है कि भारतवर्ष में रहने वाला हर आदमी चाहे हिन्दू हो, चाहे सिख हो या ईसाई, उसे नाम से नहीं—धर्म से नहीं, बल्कि भारतीय कहकर पुकारा जाये । सभी के लिए एक कानून बनाया जाये ।

यह नहीं कि मुसलमान अपने धर्म के अनुसार चार विवाह कर सकता है और हिन्दू एक । सभी के लिए समान नियम होने चाहिए । हमारी जो दस मांगें हैं, उन्हें मैंने बार-बार राजनीतिज्ञों को दिखाया और पूछा कि इनमें कोई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गलती हो तो बता दीजिए। उन्होंने कहा कि आपकी मांगें ठीक हैं। फिर मैंने पू कि इनमें कोई साम्प्रदायिकता की बू तो नहीं आती? वे बोले कि नहीं ऐसी ब नहीं है। सब ठीक हैं, लेकिन···और इस लेकिन में ही सारा मामला उ जाता है।

मगर भाइयो, हम कहना चाहते हैं, बड़ी सफाई से कहना चाहते हैं। हिन्दू कल्य समिति सरकार द्वारा पंजीकृत संस्था है। मैं उसके प्रधान के नाते बोल रहा हूं दुनिया का एक कानून है कि ऐक्शन अपने हाथ में होता है और रिऐक्शन दूसरे हाथ में। यह मेरे हाथ में है, मैं तुम्हें एक थप्पड़ मार दूं। यह मेरा ऐक्शन है लेकिन रिऐक्शन में मुझे कितने थप्पड़ खाने पड़ेंगे, यह तुम्हारे हाथ में है। किसी का घर नहीं जलाना चाहते। किसी की बहन-बेटी को बुरी नजर से न देखते। लेकिन हम साफ तौर से कहना चाहते हैं कि अगर किसी ने हमें छेड़ा, हमा बहन-बेटी को बुरी नजर से देखा तो देखने वाले की आंखें फोड़ दी जायेंगी। हम सहने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं कि हम पिटते रहें, गालियां खाते रहें और रहें।

यज्ञ वेदी की परिक्रमा

मैं शान्तिप्रिय हूं, मगर अब पानी सिर से गुजर चुका है। आपको रो आता हो या नहीं, लेकिन जब मैं सोचता हूं कि हर हफ्ते मेरी बहन, बेटि केरल से जहाजों में भर कर अरब देशों मे विलासिता के लिए भेजी जाती हैं, आप कल्पना नहीं कर सकते कि मेरे दिमाग में कितनी बौखलाहट आती है। लोग कान्फरैंसें करते हैं, मीटिंगें करते हैं और कहते हैं कि भारत में हम सभी मूर्ति को तोड़ेंगे। मगर हमारे हिन्दू नेता कायरों की-सी बातें करते हैं।

आज वह समय आ गया है, जिसके लिए मातायें अपने बच्चों को ज देती थीं। जिस सुजलां सुफलां वन्देमातरम् का गीत बंगाल से उठा। हमने वैसा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नारा दिया और उस नारे से हमारे मुसलमान भाई घबराते हैं। वह नारा अब सारे हिन्दुस्तान का नारा बन चुका है। हमने नारा दिया—

वन्देमातरम् गाना होगा—या भारत से जाना होगा।

कोई लम्बी-चौड़ी शर्त नहीं है। भारत की वन्दना करो, तो भारत मां अपनी गोदी में रखेगी और अगर यह स्वीकार नहीं है, तो चले जाओ अपने पाकिस्तान। यहां तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है।

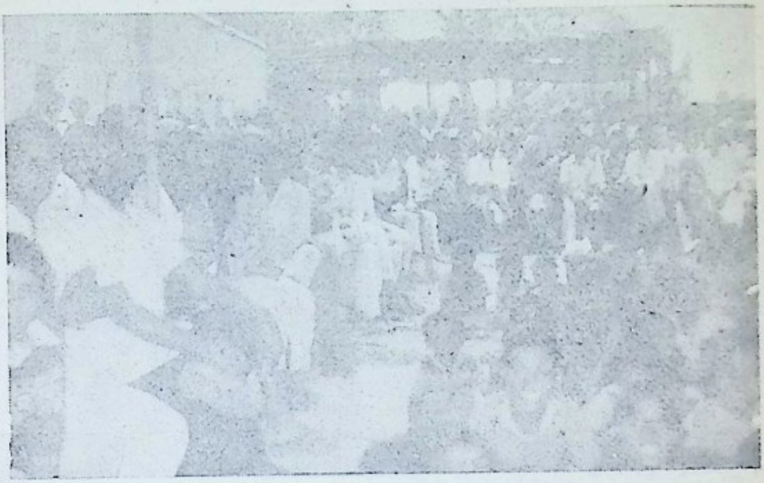

हिन्दू सम्मेलन का एक दृश्य

मैं कहता हूं कि यदि कोई भारत के टुकड़े करना चाहेगा, यदि कोई भारत में दंगा करना चाहेगा, यदि कोई भारत में साम्प्रदायिकता का जहर फैलाना चाहेगा, सरकार चुप रहे तो रहे, इस देश के ६० करोड़ हिन्दू अब चुप नहीं रहेंगे। वे अपने महान् नेताओं के चरण-चिह्नों पर चलकर ईंट का जवाब पत्थर से देने के लिए तैयार हैं। महाराष्ट्र में, सारे दक्षिण भारत में मुसलमान आज आक्रामक रूप में रह रहे हैं। मुसलमान आज भारत को इस्लामिस्तान बनाने के सपने देख रहे हैं। उन्होंने बड़ी-बड़ी कान्फरैंसें कीं। योजनायें बनाईं कि भारत की इस-इस जगह को इस तरह से इस्लाम के झण्डे के नीचे लाना है।

हमने जापान में कम्प्यूटर से जवाब मंगाया कि सन् ६१ में हिन्दुओं की संख्या कितनी थी। सन् ७१ में कितनी और सन् ८१ में कितनी और कब कम हो जायेगी। कम्प्यूटर का जो जवाब है, उसे हमने प्रधानमंत्री को भेज दिया है। तेरह साल कुछ महीनों के बाद भारत में हिन्दुओं की संख्या ४८ दशमलव कुछ प्रतिशत रह जायेगी। आप सो रहे हैं। जिस दिन हम अल्पसंख्या में होंगे, तुम्हारी दुर्गा पूजा नहीं हो सकेगी। तुम्हारे मन्दिरों में घंटियां नहीं बज पायेंगी। तुम्हारे मन्दिरों की मरम्मत नहीं हो सकेगी। तुम चोटी नहीं रख सकोगे। जनेऊ नहीं पहन सकोगे। तुम्हारी औरतें बुर्का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहनेंगी। मुसलमानों के गीत गाने पड़ेंगे। यह सब करना होगा; नहीं तो मरना होगा।

यह मैं नहीं कह रहा। तुमने स्वामी विवेकानन्द का नाम तो सुना होगा। सारे भारत के लोग उनकी इज्जत करते हैं। उन्होंने अपनी एक किताब में लिखा है कि मुसलमान सबसे अधिक साम्प्रदायिक, संकीर्ण और पिछड़े हुए हैं। उनका मूल मन्त्र है कि दुनिया में केवल एक खुदा है। उनका एक ही पगम्बर है। जो इसे नहीं मानता वह खराब ही नहीं, नष्ट करने योग्य है। जो व्यक्ति कुरान पर यकीन नहीं करता उसे मौत के घाट उतार देना चाहिये। मस्जिद के अलावा जितने धर्म मन्दिर हैं उन्हें मिट्टी में मिला दो। कुरान के अलावा जितनी भी धार्मिक पुस्तकें हैं उन्हें जला दो। आगे वे लिखते हैं कि इन्हीं सिद्धान्तों के बल पर उन्होंने ५०० साल तक दुनिया में खून की नदियां बहाई हैं। तो भाइयो! यह तो इतिहास की बात है। इसमें किसी के नाराज होने की बात नहीं। आज हमें इस बात का फैसला कर लेना चाहिये कि हम जीना भी चाहते हैं, शान्ति से रहना भी चाहते हैं, लेकिन अपने देश की बेइज्जती सहने के लिए हम बिल्कुल तैयार नहीं हैं। हम भारत को और टुकड़ों में बांटने के लिए तैयार नहीं। आज देश एक ज्वालामुखी के रूप में खड़ा है। फारूख अब्दुल्ला ने कानून बनाने की कोशिश की कि पाकिस्तान से आयें हिन्दुओं को वोट देने का अधिकार नहीं लेकिन पाकिस्तान में जो मुसलमान चले गये थे, उन्हें वापस बुलाकर वोट देने का अधिकर वह दे रहा है। भला हो प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी का, जिन्होंने वह कानून बनने से रोक दिया और उसे सुप्रीम कोर्ट में ले गई। वरना कानून बन जाता और कश्मीर पाकिस्तान में चला जाता।

इसी तरह सारा पंजाब सुलग रहा है। वह ताकत जो कभी हिन्दुओं की रक्षा के लिए खड़ी हुई थी, जिन सिक्ख गुरुओं के बलिदान के इतिहास आर्यसमाज के उपदेशकों ने—विद्वानों ने अपनी वेदी पर गाये थे। आज वही सिक्ख पंजाब में इस देश के टुकड़े करने की बात कर रहे हैं। विद्रोह की बात कर रहे हैं और खालिस्तान की मांग कर रहे हैं। अक्टूबर के महीने में दक्षिण में मुसलमानों व ईसाइयों की एक कान्फरैन्स हुई थी। वहां उन्होंने एक फैसला किया। विशाखापट्टनम् से केरल तक एक लाइन खींची है जिसका नाम उन्होंने रेड बेल्ट रखा है और यह तय किया है कि नीचे के हिस्से में ईसाई और ऊपर के हिस्से में मुसलमान काम करेंगे। आपको यह सुनकर पता नहीं दुःख होगा या नहीं, लेकिन इस समय हजारों हिन्दू रोज मुसलमान बन रहे हैं।

राजस्थान, उत्तरप्रदेश, केरल, हैदराबाद और दक्षिण में—कहां यह सब नहीं हो रहा। इन सारी समस्याओं का जवाब केवल एक है—केवल एक है कि इस देश के अन्दर उग्र राष्ट्रवाद को जन्म दिया जाये। उग्र राष्ट्रवाद को जन्म दिया था कभी जापान ने। जापान के नौजवान जिन्दा टंकियों में कूद जाते थे और अपनी जानें दे देते थे। इस्राईल एक छोटा-सा देश है जिसकी आबादी कुछ लाख है। उस अकेले छोटे-से देश ने दुनिया की ताकतवर कहलाने वाली इस्लामी ताकत को झकझोर कर रख दिया! किस आधार पर? केवल देशभक्ति के आधार पर। हमारी आवश्यकता भी यही है। हम भारत-मां के बेटे बन जायें और भारत के प्रति अपनी भक्ति अर्पित कर दें। किसी का मुंह देखने की जरूरत नहीं। अगर कोई आदमी हमारे तिरंगे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

झण्डे को जलाने की बात करता है, तो पुलिस में जाकर रिपोर्ट लिखाने की जरूरत नहीं है। अगर कोई व्यक्ति हमारे मन्दिर को तोड़ने के लिए आता है, हमारे ऊपर हमला करता है, तो हमें पुलिस में जाने की जरूरत नहीं। हमारे अन्दर इतनी ताकत होनी चाहिये कि जो हमारे मन्दिर को तोड़े, हम उसे तोड़ दें। हम किसी मस्जिद को तोड़ने के लिए नहीं जायेंगे।

हम किसी के गिरजाघर को गिराने के लिए नहीं जायेंगे। हम किसी के घर पर आक्रमण करने नहीं जायेंगे लेकिन मेरे देवी-देवता, मेरे ये मन्दिर, मेरी मातृभूमि—यदि कोई इन्हें तोड़ने की सोचेगा तो हमें भी सोचना होगा कि हम जवाब में क्या करें? हमारे अन्दर एक उग्र राष्ट्रवाद का जन्म होना चाहिये और हमारे अन्दर एक भावना होनी चाहिए कि अगर द्वारिका में हिन्दू के दिल पर चोट लगती है तो वह चोट मेरे दिल पर भी लगे। अगर देश में कहीं किसी की बहन-बेटी उठाई जाती है तो भारत के प्रत्येक हिन्दू को उसका विरोध करने के लिए तैयार होना होगा। सारे देश के अन्दर जब तक यह भावना नहीं होगी, तब तक कुछ नहीं होगा।

हम शान से रहना चाहते हैं—तुम भी शान से रहो। यहां हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना की गई है। हमारी १० मांगे हैं उन मांगों को आप ध्यान से पढ़ लें। अगर आपको ये मांगे स्वीकार हों तो आप हिन्दू रक्षा समिति के सदस्य बनिये। अपने हिन्दू-प्रेम का परिचय दीजिये। मुसलमानों से कहिये कि हम अपने मन्दिर में पूजा करते हैं। तुम अपनी मस्जिद में नमाज पढ़ लिया करो। कोई झगड़ा नहीं है। लेकिन तुम भारतवासी बनकर रहो। हमारी संस्कृति को मान कर चलो। पाकिस्तान के गीत मत गाओ।

यदि ऐसा नहीं होता तो निर्णय कीजिये कि एक अंतिम संघर्ष के लिए तैयार हो जायें। कोई आपको सहयोग नहीं देगा। आपने अपनी रक्षा स्वयं अपनी ताकत से करनी है। भारत की समस्या का केवल एक इलाज है और वह है भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करना। मैं चाहता हूं कि जितने भी यहां भाई व बहनें हैं, सभी इस बात की प्रतिज्ञा करें कि हम भारतवर्ष को एक हिन्दू राष्ट्र बनायेंगे और यहां रामराज्य की स्थापना करेंगे, जिसकी बात महात्मा गांधी कहा करते थे। हिन्दू ने कभी किसी पर पहले आक्रमण नहीं किया। इसलिए किसी अल्पसंख्यक को डरने की जरूरत नहीं। हम मुसलमानों की तरह से उन्हें अपने देश से नहीं निकालेंगे। हां, इतना जरूर होगा कि यहां रहने वाले मुसलमान हमारी भारत मां को अपनी मां के समान मानें। अपनी मस्जिद के आगे हमारे बाजा बजने पर कोई आपत्ति न करें। उनकी आपस की लड़ाई के कारण किसी हिन्दू की दुकान न जले। वे शैतान का रास्ता छोड़ कर इंसान का रास्ता अपनायें। हमारी प्रधानमन्त्री अब बदल रही हैं। बड़ी खुशी हुई।

पिछले दिनों उनके २-३ बयान आये। लगता है कि आज वे हमसे अलग नहीं हैं। अब कम से कम हमारी आवाज तो उन तक पहुंच रही है। देश की ६० करोड़ हिन्दू जनता की तरफ से हम उन्हें आश्वासन देते हैं कि यदि वे भारत की एकता की रक्षा करेंगी, तो याद रखिये कि ६० करोड़ हिन्दू हर वक्त उनके साथ रहेंगे। हमारी कोई राजनीति नहीं। हमारी तो एक नीति है, लक्ष्य है कि हम भारत-मां के टुकड़े नहीं होने देंगे। अब भारत को और हिस्सों में नहीं बंटने देंगे। भारत मेरा है, आपका है और यहां रहने वाली समस्त हिन्दू जनता का है। कोई इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर अब बुरी नजर रखेगा, तो भारत की महिलायें चण्डी बनकर खड़ी हो जायेंगी। भारत के पुरुष शिवा और प्रताप बनकर इसकी रक्षा के लिए खड़े हो जायेंगे। हमारे हिन्दू नेता कहते हैं कि हिन्दू कमजोर है। अरे, क्या पागलों की दुनिया में रहते हो। कोई अगर हमारे मन्दिर को तोड़गा तो हमें प्रण करना होगा कि उनकी मस्जिदों और गिरजाघरों पर ओ३म् का झंडा लहराता हुआ देखें। वे अगर हमारे मन्दिर को मिटाने की बात सोच सकते हैं तो हमें भी उनकी मस्जिदों और गिरजाघरों पर ओ३म् का झंडा फहराने की बात सोचनी होगी।

हिन्दू धर्म की जय के साथ आप का भाषण समाप्त हुआ।

हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु की बड़ौदा यात्रा

२५ जनवारी की संध्या को राजधानी एक्सप्रेस से महात्म वेदभिक्षु: ने बढ़ौदा के लिए प्रस्थान किया। प्रात: ५ बजे स्टेशन पर पंडित आनन्द प्रिय जी व नगर के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता उपस्यित थे। १० से १२ बजे तक आपने हिन्दू सम्मेलन की अध्यक्षता की।

बाद में ३ घंटे तक आर० एस० एस० व आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के साथ दंगा ग्रस्त क्षेत्रों का निरीक्षण किया।

नगर की शांति भंग करने में मुसलमानों के पास आए अपार धन का प्रमुख हाथ हैं। फिर भी हिन्दू सजग है।

निश्चय किया गया कि शीघ्र ही नगर के देश भक्तों का एक संगठन शीघ्र सम्मेलन कर बुलाया जाएगा।

हिन्दू राज्य कैसे बने ?

विचार के लिए १३ मार्च को दिल्ली पधारें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

–दीनानाथ सिद्धांतालंकार

मुस्लिम अत्याचारों की कहानी

लेखक पुराने पत्रकार और सरदार भगतसिंह के साथी हैं
पढ़िए उनकी लेखनी से कुछ नई बातें

सन् १३४० में सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक (तैमूरलंग) का लगभग समूचे भारत पर इस्लामी शासन था। इससे पूर्व सन् ११५१ में अलीउद्दीन हुसैन सुलतान मुहम्मद गजनवी का राज्य लगभग समस्त मध्य एशिया तक फैल चुका था। अलीउद्दीन हुसैन ने अपने घराने के दो शाहजादों के कत्ल का बदला लेने के लिए राजधानी गजनी शहर को आग लगा दी, जो ७ दिन-रात तक विनाश करती रही। इसके साथ कत्ल-ए-आम और समस्त औरत बच्चों को कैद कर लिया गया। साथ ही सब महल के निशानात नष्ट कर दिये गये। ऐतिहासिकों का कहना है कि उस समय तक के इतिहास में इस प्रकार के भयंकर विनाश की यह घटना पहली ही थी।

मुहम्मद गौरी ने गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर हमला करने से पहले घोषणा कर दी थी कि मैं इस प्रदेश और मंदिर से सोना लूटूंगा, क्योंकि यहां बड़ी-बड़ी मूर्तियां हैं और इस्लाम के अनुसार मूर्तिपूजक का स्थान केवल दोजख में ही है। इसके बाद मुहम्मद खिलजी ने सन् ११९३ ई० में बिहार पर आक्रमण कर कई हजार बौद्ध भिक्षुओं के सिर मुंडवा कर उनकी हत्या कर दी। इन अत्याचारों के फल-स्वरूप हजारों बौद्ध भारत से बाहर भाग गये। हिन्दुओं और बौद्धों के तीर्थ स्थान वाराणसी, सारनाथ, गया इत्यादि नगर जला दिये गये। बड़े-बड़े पुस्तकालयों को जला कर, (जो करीब ६ मास तक जलते रहे) उनकी आग से अपने हमाम गरम करते रहे। बिहार पर प्रलयंकारी अत्याचारों के बाद खिलजी ने बंगाल पर हमला किया। इसकी राजधानी नदिया थी और राजा लक्ष्मण सेन था—बूढ़ा और डरपोक। जब यह खिलजी की अपनी छोटी-सी सेना के साथ घोड़ों पर सवार हो नदिया पहुंचा तब राजा लक्ष्मण सेन और जनता ने समझा कि कोई घोड़ों का व्यापारी घोड़े बेचने आया है। लक्ष्मण सेन अपने महलों में भोजन कर रहा था। हमले का समाचार सुनते ही महलों के पीछे के दरवाजों से भाग गया। बंगाल के हिन्दुओं ने सामान्यतः संगठित होकर मुसलमानों का विरोध नहीं किया। सारे प्रान्त में तास्सुबी मुसलमानों न मस्जिदों और मकतबों का जाल बिछा दिया।

मंदिर के द्वार पर मारे गये हिन्दुओं के सिरों की माला

सन् १२०३ में कुतुबुद्दीन ऐबक ने बुन्देलखंड में राजा परमाल के विश्वस्त मंत्री अगदेव हत्या की कर दी। एक इतिहास लेखक के अनुसार इस क्रूर शासक ने सैंकड़ों मंदिरों को मस्जिद बना दिया। यह कितना जालिम था, इसका परिचय इसी बात से मिलता है कि इसने हिन्दुओं के कटे हुए सिरों की माला मन्दिरों के बाहर टाँग दी ताकि न कोई हिन्दू मन्दिर में प्रार्थना करने की हिम्मत करे और न ही कोई वहां आ सके—बुतपरस्ती का अन्त हो सके। इसने ५० हजार हिन्दुओं को गुलाम बनाया। हिन्दू इतनी अधिक संख्या में कत्ल किये गये कि वहां की सारी जमीन ही खून से लाल हो गयी। कुतुबुद्दीन गुलाम था। इसके बाद गुलाम वंश की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हकूमत चलती रही। यह अत्यन्त क्रूर, निर्दयी और कातिल था। हजारों हिन्दुओं की प्रार्थनाओं को एकदम अनसुना कर उन सब को जान से मार डाल कर खुश होता था।

मंगोल देश के भयंकर खूनी अत्याचारी बादशाह चंगेज खां ने एक ओर प्रशान्त सागर से लेकर कृष्ण सागर तक और दूसरी ओर मध्य एशिया से रूस तक रोमांचकारी अत्याचार— बच्चे, जवान, बूढ़, औरत, मर्द—सबको बेलिहाज घास-फूस की तरह लाखों की संख्या में मार कर अपनी हकूमत कायम की।

सन् १२५८-५६-६० ई० में चंगेज खाँ के उत्तराधिकारी बलबन ने दिल्ली के शासक मेव मुसलमानों पर हमला किया। इन्होंने दिल्ली के सब रास्तों को बंद कर दिया था। आखिर ये मेव हार गये। हमलावर बलबन की फौजों ने २० दिन तक कत्लेआम जारी रखा। शहर में फांसी के रस्से लगा दिये गये और कई दिन तक लगातार फांसी का सिलसिला पूरी बेरहमी के साथ चलता रहा। इनकी तादाद सैंकड़ों नहीं हजारों तक पहुंच गयी। इनके नेताओं को बादशाह के हुक्म से हाथी के पैरों के नीचे कुचल दिया गया। करीब एक हजार हिन्दुओं को नंगा करके टुकड़ों में काटकर उनकी चमड़ी उतारकर उसमें भूसा भर कर उन्हें दिल्ली के मुख्य दरवाजों पर टाँग दिया गया। इस प्रकार के रोमांचकारी अत्याचारों की कहानी उस समय तक किसी देश में नहीं सुनी गई थी।

बलबन ने अपने ही वंश के ४० विरोधियों को फांसी पर चढ़ा दिया। वह इतना क्रूर और अत्याचारी था कि उसे किसी भी प्रकार का रक्तपात करने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं होती थी। अगर कोई उसके मतलब की हत्या, कत्ल, विरोधी के नाश इत्यादि की—उसकी मन पसन्द खबर लाकर न सुनाता तो वह उसे निःसंकोच फांसी पर चढा देता। उसके राज्य में कोई हिन्दू कर्मचारी नहीं था। उसका संकल्प दिल्ली में हिन्दुओं का पूर्णतः अन्त करने का था। बंगाल के नगरों के बाजारों में आतंक जमाने के लिए गलियों में फांसी के तख्ते रस्सियों से बंधे लटका दिये गये थे। इस क्रूर और राक्षसों को भी मात करने वाले इस्लामी लुटेरे की मृत्यु पर इतिहासकार कहते हैं—बूढ़ा था पर शासक इन्सान की शक्ल में भेड़िया था—जिसने दिल्ली पर ६० वर्ष तक शासन किया। (ऑक्सफोर्ड हिस्टरी ऑफ इंडिया, पृष्ठ ३४२) इतिहासकार कहता है—गुलाम वंश का शासन बलबन की मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया। इन गुलामवंशियों से कभी न्याय, भाईचारा, दया इत्यादि कुछ नहीं मिला। ये बादशाह हिन्दुओं को मूर्तिपूजक कहकर सदा घृणित और पतित ही समझते रहे। हिन्दुओं को सदा दास, नौकर और हीन ही समझते थे।" (आक्सफोर्ड हिस्टरी ऑफ इंडिया, पृ० ३४३)

अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता और इतिहास लेखक जियाउद्दीन बर्नी के अनुसार तुगलक ने इतिहास में बदनाम अत्याचारी फरऊन से भी अधिक बेकसूरों का खून बहाया। इतने बड़े पमाने पर उन सबको निर्दयता से मरवा दिया, जिन पर उसे जरा भी शक था। अपने चाचा के जमाने के सब दरबारियों को मौत के घाट उतार दिया। यहाँ तक कि बेकसूर बच्चे-औरतों को भी नहीं बख्शा गया। यह इतिहास-लेखक लिखता है कि अभी तक किसी ने औरतों और बच्चों को हाथ नहीं लगाया था, लेकिन इस सुलतान ने पहली बार इस प्रकार के कुकृत्य किये।

मंगोलों ने दिल्ली पर सन् १२६३ से सन् १२६६ तक हमले किये। गियासउद्दीन तुग़लक ने मंगोलों को दिल्ली से खदेड़ दिया, लेकिन जो मंगोल मुसलमान बन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर दिल्ली के पास रहते थे, उन सबका कत्ल आम कर दिया। इसके शासन में जोरदार अकाल पड़ा। साथ ही बेरोजगारी इतनी बढ़ गई कि बड़े पैमाने पर जन विद्रोह फूट पड़ा। इसने ऐसे काले कानून बनाये, जिनसे समस्त हिन्दुओं की कुल सम्पत्ति और धन जब्त कर उन्हें एक दम गरीबी में डाल दिया गया। उन्हें कुचल डालने के लिए अत्यन्त कठोर कानून बनाये। कानून के मुताबिक छठा हिस्सा टैक्स लेने के बदले आध से भी अधिक टैक्स के रूप में जबरदस्ती लिया। यहां तक कि किसी हिन्दू के घर में सोना-चांदी का निशान तक न रहा और कोई भी बढ़िया चीज न रहने दी गई। अलाउद्दीन खिलजी को इमारतें बनवाने का शौक था। कुतुब मीनार के पास सीरी इमारत बनाते समय उसे याद आया कि नई इमारत बनाते समय उसकी नींव में खून दिया जाता है। उसने कई हजार बकरे जैसी दाढ़ी वाले मुगलों की इस काम के लिए कुर्बानी दी।

हिन्दू राजा को जिन्दा जला दिया गया

सुलतान कुतुबुद्दीन मुबारक ने गुजरात पर हमला करने के बाद दक्षिण में देवगिरि पर हमला कर दिया। यहां के राजा हरपाल देव ने इस मुबारक के विरुद्ध बगावत की थी। यह हिन्दू राजा जब हार गया तब उसे बड़ी बेरहमी से जला दिया गया। दिल्ली वापस आकर यह सुलतान एकदम भयंकर अत्याचारी हो गया। बेकसूरों के खून से इसके हाथ रंग गये। यह सुलतान बड़ा भ्रष्ट और दुराचारी था। अश्लील व्यवहार करता, औरतों जैसे कपड़े पहनता और उनके सदृश ही सारा व्यवहार करता।

पागल तुगलक: राजधानी दिल्ली से दौलताबाद

गयासुद्दीन तुगलक जब दक्षिण में विजय प्राप्त कर वापस दिल्ली आया, तब इसके लड़के ने अपने बाप का स्वागत करने के बहाने उसे हाथियों के पैरों तले कुचल कर मरवा दिया। इस लड़के का नाम मुहम्मद बिन तुगलक था। यह कुछ खब्ती स्वभाव का और वहमी था। सन् १३२७ में इसने सारी दिल्ली को दक्षिण दौलताबाद जाने का हुक्म दिया। इसने अपने शासन में पीतल और तांबे के सिक्के चलाये। इससे काफी आर्थिक घाटा और क्षति हुई। साथ ही बड़े पैमाने पर कारोबार में धोखा होने लगा। फिर बदले में सोना-चांदी देकर यह समूचा सिक्का वापस लेना पड़ा। इस अदला-बदली में तांबे के सिक्के का दाम बहुत चढ़ गया।

खुले स्थानों पर पूजा-पाठ बन्द

मुहम्मद बिन तुगलक की मौत के बाद फीरोजशाह दिल्ली की गद्दी पर बैठा। इस अवधि में कटिहार के राजा ने बदायूं के गवर्नर का कत्ल कर दिया। ५ साल तक लड़ाई चलती रही। इस अवधि में कोई खेती न हो सकी और कोई हिन्दू घर में सो न सका। तीन सैयद मुसलमानों की हत्या का बदला हजारों बेकसूर हिन्दुओं की हत्या से लिया गया। लड़ाई और अन्य प्रकार से जो लोग पकड़े जाते, वे सदा गुलाम और मुसलमान बना लिये जाते। इस प्रकार दिल्ली व उसके आसपास एक लाख ८० हजार गुलाम बने। जबरन इस्लाम फैलाने के अन्य उपाय निकाले गये।

हिन्दुओं पर जजिया

फीरोजशाह ने अपने एक हुक्म में कहा—मैंने हिन्दुओं को कड़ी सजा देने पर रोक लगा दी है, लेकिन मैंने उनके मूर्ति वाले मंदिर नष्ट कर दिये हैं और उनकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जगह [illegible] एक इतिहास लेखक के अनुसार एक ब्राह्मण को इस लिए जिन्दा जला दिया गया, क्योंकि वह खुले आम पूजा पाठ कर रहा था। स्पष्ट है कि फीरोजशाह अपनी बहुसंख्यक प्रजा हिन्दुओं द्वारा खुल आम किसी भी धार्मिक कृत्य को भयकर अपराध समझता था और कहता था कि "मैं तो खुदा के हुक्म का पालन कर रहा हूं।"

यह सुलतान कहता है—मैंने काफिर प्रजा को पैगम्बर का मजहब स्वीकारने के लिए प्रेरित किया और घोषणा की कि प्रत्येक हिन्दू जो इस्लाम ग्रहण करता है, वह 'जजिया' कर से मुक्त हो जायेगा। आप लोगों को इसकी सूचना खूब खुलासे से दे दी गयी है, जिससे बड़ी तादाद में हिन्दू इस्लाम को स्वीकार करने के लिए आगे आने लगे हैं। चारों ओर से इन हिन्दुओं की भीड़ जमा हो गई है। इन्हें जजिया से मुक्त करते हुए इनाम और इज्जत के ओहदे दिये गये हैं।" अन्य कई मुस्लिम शासकों ने इसी प्रकार के प्रलोभन और रिश्वत से हिन्दुओं को मुसलमान बनाया।"

दिल्ली में जजिया तीन स्थानों पर लगाया जाता था (१) ४० टका (२) २० टका (३) १० टका।

चौदहवीं शताब्दी में इतिहास लेखक टामस के 'क्रानिकल्स' में पृष्ठ २१८, २१६, २३२ और २८१ के अनुसार एक ब्राह्मण करीब १० रु. एक वर्ष में देता था। पहले मुस्लिम शासन में ब्राह्मण को इस टैक्स से छूट थी। फीरोजशाह ने वकीलों से सलाह कर ब्राह्मणों के लिए यह छूट बंद कर दी—यद्यपि ब्राह्मणों ने आमरण अनशन की धमकी दी थी। फीरोजशाह इससे खुश हुआ, लकिन जजिया का यह कानून जबरन लागू कर दिया गया।

चौदहवीं शताब्दी के मुस्लिम शासकों के समय मजहबी आजादी एक दम समाप्त हो गयी थी। यह घोषणा कर दी गयी थी कि मूर्ति पूजा गुनाह है और इसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। सिकन्दर लोदी (सन् १४८९) अत्यन्त पक्षपाती हिन्दू धर्म विद्वेषी था। इसने मथुरा के मंदिरों को नष्ट कर उन्हें मुस्लिम रूप दे दिया।

ऐतिहासिक तथ्य यह है कि मुस्लिम आक्रमणकारी इस देश में मंदिरों और मूर्तियों में छिपे हीरे जवाहरात, धन सम्पत्ति लूटने, दूसरी ओर एक हाथ में कुरान और पैगम्बर मुहम्मद का नाम तथा दूसरे हाथ में तलवार ले आक्रान्ता और लुटेरे बन कर आये थे। वे अपने को अमीर और अपने मजहब के लिए जोशीला तथा हिन्दुओं को घृणा की दृष्टि देखते और भ्रष्टतम हिन्दू से अपने को कई दर्जे ऊंचा समझते थे। भारत में पूर्ववर्ती आक्रामक शक, हुण इत्यादि की तरह ये मुसलमान हिन्दू धर्म में विलीन नहीं हुए। इन्होंने अपना अस्तित्व सदा पृथक बनाये रखा। भारत में रहते हुए भी इनकी दृष्टि अरब देशों की ओर रहती थी और ये अरब के ही गुण गाते थे। आज भी यही स्थिति है। अब भी मुसलमान अपने से हिन्दुओं को हीन और अपना शिकार ही समझता है। ☐

---

१३ मार्च को भारत के भविष्य पर विचार के लिए दिल्ली पधारें। आप सादर आमंत्रित हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—वि. स. विनोद

'ये सफेद हाथी ?

राजा-महाराजाओं का-सा जीवन बिताने वाले हमारे प्रतिनिधिः क्या देश की भूखी नंगी जनता के प्रतिनिधि हैं ?—सम्पादक

जिन्हें गांधी जी ने त्याग का जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया था, वे आज एक महाराजा से अधिक विलासमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

इन जन प्रतिनिधियों पर आज करोड़ों रुपया खर्च किया जाता है, जबकि भारत के एक निवासी की औसत आय ५५ रुपया प्रतिमास है।

प्रथम तो आजादी के बाद केन्द्र व राज्य के मंत्रियों की संख्या बढ़ती ही गई है जो तब से ४ गुनी है। इस समय कुल ५५० मंत्री हैं अर्थात् प्रति ११ लाख जनता पर एक मंत्री। वित्त मंत्रालय के अनुसार एक केन्द्रीय मंत्री पर माह में ७५,००० रुपए व राज्य के मंत्री पर ५०,००० रुपए खर्च होते हैं अर्थात् हर माह तीन करोड़ से ऊपर। यद्यपि एक मंत्री का वेतन २२५० रुपये माहवार है पर उसे कार, मकान, मनोरंजन कर, टेलीफोन, चिकित्सा आदि सभी सुविधायें मिलाकर इतना बैठता है। ५५० कारें, ५५० बंगले, १००० टैलीफोन, १२०० पुलिसमैन, ४००० निजी सहायक व सचिव उन्हें प्राप्त हैं। उनके बंगलों को मिलाकर बस्ती बनाई जाये तो उसमें तीन लाख लोग रह सकते हैं।

पर वास्तव में मंत्रियों का यह वास्तविक व्यय नहीं है। इसके अलावा भी व्यय है। यथा मंत्रियों की सुरक्षा पर व्यय। अनेक मंत्रियों पर प्रति मंत्री रक्षा व्यय ३,००,००० रुपये प्रतिमास व्यय किए जा रहे हैं। पुनः हर मंत्री के बंगले की साज-सज्जा के लिए ३८ हजार रुपए की व्यवस्था है। १९८१ के प्रथम सात मास में ही श्रीमती इन्दिरा गांधी के बंगले पर ६०,३०८, केदार पांडे के बंगले पर ४६,७१०रु. व अब्दुल गनी खान के बंगले पर ४२,५५५ रु. व्यय हुए थे। टेलीफोन व बिजली पर इन सात महीनों में ७६ लाख रु. खर्च हुए। उनके आफिस के १०.५८ लाख रुपए के और करों में १२.२६ लाख रुपये के टेलीफोन बिलों का सरकार ने भुगतान किया। इन टेलीफोन बिलों में अनलिस्टेड टेलीफोन बिल शामिल नहीं हैं। हर मंत्री को ऐसा टेलीफोन मिला होता है। सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री दांडेकर के अनुसार एक मंत्री को लगभग तमाम टैक्स वगैरह देने के बाद प्रतिवर्ष ७०,९२० रुपये की आमदनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
होती है। मुख्यमंत्री तो इससे बहुत आगे बढ़ जाते हैं। महाराष्ट्र में अंतुले ६ लाख रुपए वार्षिक मनोरंजन भत्ता ही लेते थे।

विदेश यात्राओं के बिल हर वर्ष करोड़ों में बैठते हैं। देश में भी ये विना जहाज के नहीं जाते। केन्द्रीय मंत्री सेठी अपने काम के लिए विमान के उपयोग के लिए बहुत चर्चित रहे हैं। एक मुख्यमंत्री जब राजीव गांधी के अमेठी से जीतने पर सपत्नीक बधाई देने आये तो दिल्ली आकर मालूम हुआ कि पत्नी विशेष साड़ी भूल ही आई है। तत्काल विमान भेजा गया। साड़ी आई पर पत्नी यह देखकर दुखी हुई कि उसकी क्रीज बिगड़ गई है। राजीव से निश्चित समय में एक घंटा ही रह गया था अतः मुख्यमंत्री ने भेंट स्थगित कर दी।

इसी तरह इन मंत्रियों की अलग से आय इसके अतिरिक्त है।

अब संसद् को लें। सरकार १००० करोड़, रुपये लोकसभा के चुनावों पर व्यय करती है। चुनाव में निजी व दल के खर्चे को भी मिलायें तो एक लोकसभा चुनाव पर ५०० करोड़ रुपए व्यय होते हैं इसके अलावा १९८१-८२ में संसद् के कामकाज पर ९ करोड़ ६५ लाख रुपए व्यय हुए। इसमें मुख्यतः ५४२ लोकसभा व २४६ राज्यसभा सदस्यों को दिए गए वेतन शामिल हैं। एक संसद् सदस्य को प्रति मास ५०० रुपए वेतन, ५०० रुपए भत्ता, डाक-व्यय, टेलीफोन, चिकित्सा सुविधा सहित ६५०० रुपये अर्थात् ७८००० रुपए वार्षिक मिलते हैं।

पर यहां भी वास्तविक व्यय बहुत अधिक है। यथा १९८१-८२ में संसद् के सदस्यों पर एक वर्ष में विमान यात्रा व्यय में सरकार को १०८ करोड़ रुपए व २३.५ लाख रुपए फ्री रेल यात्रा पर व्यय हुए हैं। एक संसद् सदस्य को साल में १२ फ्री एयर पास व बड़ी संख्या में फ्री रेल पास मिलते हैं।

पांच वर्ष संसद् सदस्य रहे सदस्य को ३०० से ५०० रुपए प्रतिमास पैंशन भी मिलने लगती है। जनता संसद् सदस्य को अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजती है पर वे अब पैंशन पाने वाले सरकारी कर्मचारियों की श्रेणी में शामिल हो गए हैं। यह पैंशन राशि एक वर्ष में दस करोड़ रु० बैठती है।

विधायकों को भी संसद् की तरह पैंशन मिलने लगी है। संसद् सदस्यों व विधायकों ने अब मांग की है कि उनके वेतन बढ़ाये जायें। उनकी दलील है कि यदि वृद्धि न हुई तो ऐसा न हो कि वे बेईमानी पर उतर आयें। पर उनकी इस धमकी से फिर वही प्रश्न उठता है कि क्या गांधी जी ने स्वराज्य की कल्पना साकार करने के लिए ऐसे ही जन प्रतिनिधियों की कल्पना की थी? उत्तर मिलता है—सर्वथा नहीं।

वाजपेयी द्वारा हिन्दी में बोलने से इनकार

बंगलौर: जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने यहां एक चुनाव सभा को सम्बोधित करते हुए हिन्दी में बोलने से इंकार कर दिया। उन्होंने अपना भाषण कन्नड़ में अभिवादन के साथ शुरू किया और अंग्रेजी में बोले।

सभा में एक वर्ग द्वारा उनसे हिन्दी में बोलने का अनुरोध किया गया था। उन्होंने अनुरोध स्वीकार करते हुए कहा कि वे वोट मांगने आए हैं, भाषा-विवाद में उलझने नहीं।

श्री वाजपेयी ने कहा "संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी बोलना ठीक है, लेकिन भारत में अंग्रेजी बोलना ही अच्छा है।" उन्होंने यह भी कहा कि वे कर्नाटक में हिन्दी का प्रचार करने नहीं आए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भगवन्, हमें पवित्र बुद्धि दो

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार

(षष्ठ मंत्र)

समध्वरायोषसो नमन्त
दधिक्रावेव शुचये पदाय।
अर्वाचीनं वसुविदं नो भगं
रथमिवाश्वा वाजिन आवहन्तु।

(शुचये पदाय) पवित्र स्थिति प्राप्त करने के लिए (दधिक्रावा इव) बुद्धि के समान (अध्वराय) इस हमारे यज्ञ की पूर्ति के लिए (उषसः संनमन्तः) ये ऊषायें हमें प्राप्त हों। (वाजिनः अश्वाः रथमिव) जिस प्रकार बलवान् घोड़े रथ को ले जाते हैं, उसी प्रकार यह ऊषाकाल (अर्वाचीनं) हमारे अभिमुख होकर (वसुविदे) ऐश्वर्यवान्, (भगं) प्रभु को (नः आवहन्तु) हमारे प्रति ले आवें।

यह ऋग्वेद के प्रभात सूक्त का मन्त्र नहीं है। परन्तु इस मंत्र में भी ऊषा के आगमन के लिए प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार स्थिति प्राप्त करने के लिए बुद्धि की पवित्रता आवश्यक है, उसी प्रकार हमारे यज्ञ की पूर्ति के लिए हमें यह ऊषा प्राप्त हों। पवित्र जीवन के लिए पवित्र बुद्धि की आवश्यकता है। इसीलिए कहा गया है 'दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं मनः पूतं समाचरेत्' देखकर कदम रखिए और विचारपूर्वक काम कीजिए। 'विचारपूर्वक काम कीजिए' का मतलब है कि प्रत्येक कर्म पवित्रतामय हो। इस बुद्धि की शुद्धता के लिए हृदय की आवश्यकता है और हृदय तथा मन की शुद्धता के लिए बुद्धि को आवश्यकता है। हृदय, मन और बुद्धि की एकरूपता से जिस महान् विचार का निर्माण होगा, जिस पवित्र स्थिति का जन्म होगा, वही धर्म है। वही कर्म है। वही जीवन की सफलता का मर्म है। जीवन की पवित्रता के लिए बुद्धि की आवश्यकता का अनुभव कर वेद में सर्वत्र बुद्धि की प्रार्थना की गई है। यजुर्वेद ३२।१३ में कहा गया है—

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषं स्वाहा॥

(इन्द्रस्य प्रियम्) जीवात्मा के प्रिय मित्र (काम्यं) कमनीय, प्राप्तव्य और (अद्भुतं) विलक्षण (सदसस्पतिं) विश्व के स्वामी के पास (सनिं) योग्य उपभोग की और (मेधां) उत्तम बुद्धि की (अयासिषम्) याचना करता हूं (स्वाहा) और स्वार्थ-त्याग करता हूं। अर्थात् परमेश्वर सबको यथायोग्य उपभोग के पदार्थ और उत्तम बुद्धि दे। इसके लिए मैं स्वार्थत्याग करता हूं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमें जीवन को पवित्र बनाने के लिए निर्मल बुद्धि और शुद्ध दृष्टि की अत्यन्त आवश्यकता है। हमारी बुद्धि में अधीरता न हो, उतावलापन न हो, स्वार्थ न हो, आलस्य न हो। इस निर्मलता के लिए गहन अध्ययन, चिन्तन और मनन की आवश्यकता है। सबके लिए प्रेम की जरूरत है। प्रयत्न और कष्ट सहन की आवश्यकता है। जब मन में यह व्यग्रता होगी कि मैं जीवन कैसे पवित्र बनाऊं, तभी बुद्धि उसके लिए विचार करेगी और मार्ग भी प्रशस्त होगा। इसीलिए गायत्री मंत्र में परमेश्वर से प्रार्थना की गई है—'धियो यो नः प्रचोदयात्'। हमारी बुद्धियों को अच्छे कामों के लिए प्रेरित कीजिए।

इस प्रकार जैसे पवित्र जीवन के लिए पहले पवित्र बुद्धि की आवश्यकता है, यह मंत्र कहता है कि वैसे ही यह ऊषा हमारे लिए मंगलमय-कल्याणमय मार्ग प्रशस्त करती हुई आए, जिससे हम 'यज्ञ' पूरा कर सकें। वेद ने यज्ञ करने का सर्वत्र आदेश दिया है। अथर्ववेद १६।६३।१ में कहा है—

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते
देवान् यज्ञेन वोधय।
आयुः प्राणं प्रजां पशून्
कीर्ति यजमानं च वर्धय॥

अर्थात् हे ज्ञान के स्वामिन्, उठ और यज्ञ के द्वारा देवों को जगा! और इस यज्ञ द्वारा, आयु, प्राण, प्रजा—सन्तान, पशुओं, यश और यजमान को बढ़ा।

यज्ञ क्या है? व्याकरण के अनुसार यज्ञ शब्द 'यज्' देवपूजा, संगतिकरण और दान अर्थवाली धातु से बना है। माता, पिता, आचार्य और समाज के बड़े लोगों का आदर और छोटों से स्नेह—यह देवपूजा है। समाज में विघटन को रोककर संगठन और एकता की भावना बढ़ाना संगतिकरण है। आज हमारा देश और उसके निवासी इस भावना से दूर और दूर होते जा रहे हैं। जाति एवं जाति के, स्पृश्या-स्पृश्य के और ब्राह्मण-ब्राह्मणेतर के सैकड़ों घेरे हैं। इसके अतिरिक्त गुजरात, महाराष्ट्र, मैसूर, पंजाब, आन्ध्र बंगाल आदि के गड्ढे हैं। गड्ढों में रहने वालों को प्रसन्नता का प्रसार तो मिलता ही नहीं, गड्ढे का पानी रुका तो गन्दगी भी पैदा होती है। यदि आप चाहते हैं कि भारत में पुनः सुदिन आवें तो इन गड्ढों को दूर करने के लिए हमें उठना चाहिए। भेदों की दीवार मिटा देनी चाहिए। आपस में एकता, प्रेम और सहयोग बढ़ाना चाहिए। यही संगतिकरण है। यज्ञ का तीसरा अर्थ दान या त्याग भी है। यज्ञ को हवन भी कहते हैं। हवन में हम यज्ञ कुंड में समिधायें डालकर उसमें आग लगाते हैं और फिर मन्त्रों के साथ घी और सामग्री की आहुति डालते हैं। अग्नि में सामग्री पड़कर वह वायुरूप घोड़े पर सवार होकर दूर-दूर पहुंच जाती है। इसे आप इस तरह समझ लीजिए कि आपने कोई सुन्दर पक्वान्न बनाया। आपके पड़ौसी से आपकी बनती नहीं। परन्तु क्या आप सुगन्ध को पड़ौसी के घर जाने से रोक सकते हैं? यदि आप उसे रोकेंगे तो वह घर में रहकर गन्दगी पैदा करने लगेगी। यज्ञ का यही उद्देश्य है—सबका उपकार। यज्ञ उन सकल शुभ कर्मों का नाम है—न चाहते हुए भी जिनसे सबका भला हो और हमारे दिव्य भाव तभी जागृत होंगे, जब हम स्वार्थ से हटकर परार्थ की ओर बढ़ेंगे। जब हम यज्ञशील बनेंगे, तब हमारी आयु बढ़ेगी। ऐश्वर्य प्राप्त होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब हमारा जीवन यज्ञमय बनेगा, तब हम प्रभु के 'भग' रूप के, ऐश्वर्यवान् स्वरूप के दर्शन कर सकेंगे। भूल से मनुष्य धन को ही ऐश्वर्य मान बैठता है। यह ठीक है कि बिना धन के काम नहीं चल सकता। परन्तु धन में सुख नहीं है। सुख तो मनुष्य की आत्मा में है। धन में सुख होता तो संसार के धन कुबेर सदा सुखी रहते। संसार के धन कुबेरों में हेनरी फोर्ड का प्रमुख स्थान है। उनसे मिलने एक बड़े पादरी गए। उस समय वे अधिक मानसिक श्रम के कारण कुछ अस्वस्थ थे। उन्होंने कहा 'फादर, मैं शायद विश्व में सबसे दुःखी मनुष्य हूं। मैं न अच्छा भोजन कर सकता हूं, न मन चाहे स्थान पर जा सकता हूं। मैं जब अपने कारखाने में स्वस्थ और हंसमुख मजदूरों को देखता हूं, तो मुझे हर्ष होता है। मैं अपनी सम्पूर्ण दौलत को उनके स्वास्थ्य से बदलने को तैयार हूं।" इससे पता लगता है कि स्वास्थ्य का जीवन में कितना महत्त्व है। यह ऊषा परमेश्वर के ऐश्वर्यमय रूप की ओर ले जाने के लिए स्वास्थ्य का प्याला लेकर उपस्थित होती है। हमें उस प्याले से अमृत की बूंदें लेकर अपने को स्वस्थ बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। तभी हम प्रभुभक्ति कर सकेंगे। यह ऊषा अपनी मनमोहिनी रूप माला से हमें सदाचार की प्रेरणा देती है। सात्विक स्वभाव के बिना यज्ञ नहीं किया जा सकता और बिना यज्ञ के प्रभु की निकटता प्राप्त नहीं हो सकती। जिसने अपना जीवन यज्ञमय बना लिया, वही भगवान् के समीप पहुंच सकता है।

निर्धन बालक डिजराइली ने कहा था 'जो बातें एक बार हो चुकी हैं वे दुबारा हो सकती हैं। मैं गुलाम नहीं हूं, बन्दी नहीं हूं। मैं अपनी शक्ति से सभी बाधाओं को परे कर सकता हूं।' उसके विरुद्ध हजारों शक्तियां थीं, उसे प्रेरणा देने वाले भी अतीत के हजारों उदाहरण थे। वह सोचता था कि जोसफ नामक गरीब यहूदी यदि अपने उद्योग से प्रधानमंत्री बन सकता है, तो मैं भी इंग्लैंड का प्रधानमंत्री बनूंगा। पार्लमेंट के सदस्य उससे घृणा करते थे। उसने उनसे कहा "समय आएगा, जब तुम्हें मेरी बातें सुननी पड़ेगी।" वह बालक आगे चलकर इंगलैण्ड का प्रधानमंत्री बना। जीवन को सदुद्देश्य के लिए सर्मपित करना ही यज्ञ है। भगवान् की सेवा है।

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल के विद्यार्थियों को उपदेश देते हुए कहा करते थे—विद्यार्थियों, क्या तुम्हें आपत्तियों से डर लगता है? क्या तुम्हारी निर्धनता तुम्हारे रास्ते में बाधक हो रही है? एक बार सोचो, तुम आज उसी जगह खड़े हो, जहां हाल में सफलता पाने वाले खड़े हो जाते हैं। मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो और तीन वर्ष बाद इनकी सत्यता पर विचार करना। तुम्हें मालूम होगा कि उस समय जो लोग देश के लखपति, धनी, प्रभावशाली वक्ता, प्रतिभासम्पन्न कवि, ऐश्वर्यशाली व्यापारी, मानव जाति के बड़े-बड़े प्रेमी, राष्ट्र व धर्म के उद्धारक होंगे, वे सब इस समय तुम्हारे बराबर खड़े हैं। तुमसे कोई एक इंच भी ऊंचाई पर नहीं। तुम अपने को कभी तुच्छ न समझो। याद रखो, प्रभु ने खुद अच्छी तरह से तैयार करके तुम्हें भेजा है। परिश्रम करो और जगत् में अपना यश फैलाओ।"

दुर्लंघ्य आल्प्स पर्वत माला की सेंट बरनार्ड की घाटी का सर्वे करके लौटे हुए इंजीनियरों से जब नैपोलियन ने रास्ते का हाल पूछा तो उन्होंने गम्भीर चेहरे से कहा, उसे पार करना संभव नहीं। नैपोलियन मुस्कराया और बोला—असंभव शब्द मेरे कोष में नहीं। 'सिपाहियो, 'आगे बढ़ो' और सारे संसार को आश्चर्य में डालते हुए वे साठ हजार सैनिक सैकड़ों मन शस्त्रास्त्रों के साथ उस अलंघित घाटी को पार कर गये। असम्भव सम्भव हो गया; जो काम एक आदमी कर सकता है, वह हर आदमी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर सकता है। परन्तु औरों के पास वह दृढ़ संकल्प शक्ति नहीं थी, जो कठिनाई के समय नैपोलियन को वज्र बना देती थी। ऊषा यज्ञमय कर्मों के लिए इसी संकल्प शक्ति को जागृत कर हमारा मानसिक बल बढ़ाती है। ऊषा—वेग से आती हुई ऊषा हमसे कहती है—"तुममें वह योग्यता है, जिससे तुम दिनभर अच्छा काम कर सकते हो। आज और अभी से तुम इस दृढ़ निश्चय से कार्य करो कि तुम्हें सदव अधिकाधिक सफलता मिलती रहे। तुम्हारा जीवन विजय के लिए है। निश्चय कर लो कि आज का दिन विजय का दिन होगा। अवसर मत चूको। उसे घर कर पकड़ लो। उसका उपयोग करो, जितना लाभ उससे ले सकते हो—ले लो।"

ऊषा हमारे यज्ञमय कर्मों के लिए मार्ग प्रशस्त करती हुई आती है। अपने मन, वचन कर्म से विश्वास करो कि तुम निर्बल नहीं, कमजोर नहीं, दरिद्र नहीं; शक्तियुक्त, समृद्धि युक्त महान् आत्मा हो। यही इस मंत्र का भाव है। आइए, निम्नलिखित हिन्दी गीत गाएं—

मेधा शान्ति सुकार्य कारिणी।
ऊषा काल में हृदय हारिणी,
हमें प्राप्त हो, बने यज्ञमय
जीवन, हिंसाहीन मिले जय।
वेगवान् ज्यों अश्व शान से।
ले जाता है रथ मकान से।
वैसे ही यह प्रातःकाल।
पहुंचावे हमको तत्काल।
उस ईश्वर ऐश्वर्यवान् के
सम्मुख प्रभु करुणानिधान के
हे वसुधापति भगवन्, आओ,
आए द्वार, हमें अपनाओ।

उत् क्रामात पुरुष मावपत्स्था मृत्यो पड्वीशमवमुं चमानः।
माच्छित्था अस्माल्लोकादग्ने सूर्यस्य संदृशः॥ अथर्व ८।१।४॥

हे पुरुष! तू जिस स्थिति में है, उससे ऊपर उठ! रो मत! पश्चात्ताप मत कर। हिम्मत रख व ऊपर उठ। मौत के बन्धनों को तोड़ दे। यह संसार असार नहीं है। इसमें सुख व दुःख दोनों ही भोगने पड़ेंगे। अतः सोच, तू अपने साथ क्या ले जायेगा? सांसारिक दुःखों से डर कर मत भाग, अग्नि व सूर्य के प्रकाश से लाभ उठा व सूर्य की भाँति उत्तरोत्तर आगे बढ़। परमेश्वर तेरे साथ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—ज्येष्ठ वर्मन्

धर्मो रक्षति रक्षित:

जो धर्म की रक्षा करते हैं, धर्म उनकी रक्षा करता है। जो धर्म की रक्षा नहीं कर पाते उनका नाश कोई नहीं रोक सकता। भारत के हिन्दू सोचें कि अपने विनाश का चक्र वे रोकना चाहते हैं या समाप्त होना ही उनका लक्ष्य है? शासन, विदेशी षड्यन्त्र, इस्लाम-ईसाइयत, कम्युनिज्म से संघर्ष कर विजय वरण के लिए तैयारी करें, यह समय की मांग है?

गत जुलाई में बम्बई से प्रकाशित होने वाले मराठी साप्ताहिक 'श्री' के १७ तारीख के अंक में एक लेख छपा था जिसका शीर्षक था "आखारी देशात वैदिक धर्म" यानी खाड़ी के देशों में वैदिक धर्म। इस लेख का सारांश पहले ही १० जुलाई के हिन्दुस्तान (उर्दू) दैनिक में छपा था। उसी दिन हिन्दुस्तान (उर्दू) के सम्पादक सरफराज आरजू और कांग्रेस (इ०) के आमदार सैयद अहमद, महाराष्ट्र सरकार के गृह राज्यमंत्री डा० श्रीकांत जिचकर से मिले और 'श्री' की एक प्रति, जो प्रकाशन की तिथि से एक सप्ताह पूर्व ही छप जाती है, मंत्री महोदय को दिखायी और कहा कि इस लेख के प्रकाशन से मुसलमानों की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचेगी। डा० जिचकर ने तुरन्त उसी वक्त पुलिस को आदेश दिया कि उक्त 'श्री' साप्ताहिक की सारी प्रतियां जब्त कर ली जाएं। तदनुसार उसी दिन रात को 'श्री' के कार्यालय और प्रेस से पुलिस ने पचास हजार प्रतियों को जब्त कर लिया और उसके बाद जो बाहर भेजी जा चुकी थीं उनमें से भी लगभग दस हजार प्रतियां जब्त कर ली गईं। उसके बाद १४ जुलाई को लगभग पचास मुसलमान 'श्री' के कार्यालय में गये और उक्त लेख पर अपना क्रोध व्यक्त किया।

'श्री' का मूल्य एक रुपया है। अत: प्रकाशक को १०,००० रु० से भी अधिक नुकसान हुआ। इसलिए उन्होंने हाईकोर्ट में उक्त सरकारी आदेश के विरोध में एक रिट पिटीशन दर्ज की। कुछ अड़चनों के बाद इस मामले की सुनवाई पांच जजों के सामने हुई। सुनवाई इसी दिसम्बर में खत्म भी हुई, किन्तु न निर्णय दिया गया, न निर्णय की कोई तिथि बताई गई।

इसी बीच इसी मामले को लेकर बायखला के पास नागपाड़ा में मस्तान टेकड़ी नामक एक स्थान पर मुसलमानों की एक बठक हुई। इस बठक में उन्होंने यह फैसला किया कि यदि वे इस मामले में हार जाते हैं, तो सन् १९४७ में देश के विभाजन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के समय जो कदम मुसलमानों ने अपनी बस्तियों में उठाया था उसको दुहरायेंगे और यदि वे जीत जाते हैं तो इस प्रकार के सौ मामलों को लेकर ये कोर्टों में केस दर्ज करेंगे। इस बैठक में मुसलमानों के स्थानीय नेता मिस्टर जमखानवाला और बुखारी भी थे।

'श्री' साप्ताहिक के सम्पादक श्री ताम्हणकर जी ने मुझे बताया कि जब हाईकोर्ट में इस मामले की सुनवाई हो रही थी, वहां हमेशा पचासों मुसलमान सिर्फ इस केस में रुचि लेकर जमा हो जाते थे और हिन्दू कोई भी इस तरह वहां नहीं आया करता था। मैंने अपनी ओर से इस सरकारी कदम का विरोध करते हुए मुख्यमंत्री को पत्र लिखा। इंडियन एक्सप्रेस और नवभारत टाइम्स में मेरे विरोध-पत्र छपे, किन्तु लगता है कि इसका किसी पर भी असर नहीं पड़ा। अब प्रश्न उठते हैं कि—

उक्त 'श्री' साप्ताहिक में ऐसी कौन-सी आपत्तिजनक बात छप गई थी, जिससे मुसलमान इतना भड़क गये और सरकार ने क्यों उनके निवेदन के अनुसार तुरन्त कदम उठाया? हाईकोर्ट ने निर्णय की तिथि की घोषणा क्यों नहीं की? मुसलमानों की हिम्मत क्यों इस तरह बढ़ रही है और आगे चलकर इसका परिणाम क्या होगा?

विवादास्पद लेख के लेखक अमरावती के एक सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी श्रीमान् डी० पी० प्रधान हैं। इन्होंने इसी विषय को बहुत संक्षेप में ९ मई के लोक-सत्ता (मराठी दैनिक) में भी छपवाया था। इसको पढ़कर 'श्री' के सम्पादक महोदय ने उनसे विस्तृत लेख मांगा था। तदनुसार चार पृष्ठों का वह लेख भी छप गया।

लेखक का कहना है कि मुहम्मद के आने से पहले अरब देशों में लोग शैव सम्प्रदाय के थे। उन दिनों वहां वैदिक संस्कृति का प्रचार था। काबा की छत पर अन्दर की तरफ पीला सूर्य और उसके अन्दर 'ओम्' अंकित है। मुहम्मद ने जो ३६० मूर्तियां तोड़ी थीं वे हिन्दू देवताओं की थीं। संग-ए-असवद पत्थर वास्तव में शिवलिंग है। मुहम्मद ने इसे जमीन के अन्दर गड़वाना चाहा था। मुसलमान इस पत्थर को बड़ी ही पवित्र वस्तु मानते हैं—इत्यादि।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है जिसके लिए असंख्य प्रमाण मिलते हैं कि वैदिक धर्म या संस्कृति ही संसार में सबसे प्राचीन है। इसका प्रचार विश्व भर में आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व ही हो चुका था। ईसाइयों की बाइबल दो ढाई हजार वर्ष पुरानी है। कुरान इसके बाद लिखी गई है। कुरान की बहुत-सारी बातें बाइबल के पूर्वार्द्ध ओल्ड टैस्टामेंट से ली गई हैं। जैसे-जैसे शोध कार्य में उन्नति होती जाती है, वैसे-वैसे इस बात के लिए नए नए प्रमाण मिलते रहते हैं कि सब धर्मों का मूल वैदिक धर्म ही है। शिष्टाचार कहता है कि यदि कोई इस बात को नहीं मानता तो वह अपनी मान्यता के पक्ष में प्रमाण प्रस्तुत करे। किसी सच्चाई को बलपूर्वक दबाने का प्रयास करना जंगली सभ्यता का लक्षण है।

सरकार चाहती है और नेता लोग भी कहते हैं कि भारतवासियों के दिलों में एकता और समानता की भावना होनी चाहिए। किन्तु मुहम्मद गोरी का भारत पर आक्रमण तथा हिन्दू मंदिरों की लूट और मुसलमानों द्वारा हिन्दू धर्म नष्ट करने के प्रयास, साम्प्रदायिक दंगे, देश का विभाजन इत्यादि से लगता है कि मुसलमान हिन्दुओं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से अलग हैं—हिन्दुओं के विरोधी हैं। लेखक ने इस बात को सिद्ध करने का प्रयास किया कि वास्तव में मुसलमान हिन्दुओं से अलग नहीं हैं। इस्लाम से उदय के पूर्व ये दोनों एक ही संस्कृति को मानते थे। जब इस बात को दोनों स्वीकार करेंगे तब इनके आपस के विरोध बहुत कुछ कम होंगे। अतः ऐसे लेख हिन्दू-मुसलमान एकता के पोषक हैं। किन्तु जो लोग सच्चाई के विरोधी हैं, सहृदयता, शिष्टाचार आदि के शत्रु हैं और भारत पर हिन्दुओं को दबाकर अपना राज्य स्थापित करने का स्वप्न देखा करते हैं, वे लोग इस बात को नहीं मानना चाहते। यहां लज्जा की बात यह है कि हमारे मंत्री, हमारे नेता, जिनको केवल सत्ता की ही एकमात्र चिन्ता रहती है, स्वदेश गौरव, स्वदेश संस्कृति इत्यादि से जिनका कोई मतलब नहीं, जिनको देशहित से अपना हित ही अधिक महत्त्व रखता है, ऐसे लोग इन राष्ट्रविरोधी तत्त्वों का हौसला बढ़ाते रहते हैं और हमारे पढ़े लिखे लोग, विद्वान्, लेखक, वैज्ञानिक आदि जो इन बातों को समझते हैं या समझ सकते हैं, उनकी मनोवृत्ति और भी शोचनीय है।

मुसलमानों की हिम्मत इसीलिए दिनों दिन बढ़ रही है। उनका हौसला इस कारण भी बढ़ता जा रहा है कि सत्तालोलुप नेता देश के हित को नहीं समझ पाते। पढ़े-लिखे हिन्दू सोये पड़े हैं, अपने देश की संस्कृति, अपनी जाति, अपने धर्म पर इनको गर्व नहीं। अभिमान नहीं, इसकी रक्षा करना ये अपना कर्त्तव्य नहीं समझते। जो इस बात को समझते हैं, उनके पास विरोध करने की, अपनी बात को सुनाने की हिम्मत नहीं। ये जीते जी मरे हुए हैं। इसलिए बहुसंख्यक हिन्दुओं से अल्पसंख्यक मुसलमान नहीं डरते।

आज हिन्दू संगठित नहीं। इनमें एकता नहीं। हिन्दू एक जागृत जाति नहीं है। हिन्दुओं के नाना प्रकार के मत-सम्प्रदाय हैं। इनकी नाना प्रकार की प्रादेशिक भाषायें हैं। ये जैसे कुछ लोग कभी-कभी कहते हैं कि किसी सुन्दर बगीचे के नाना प्रकार के फूल नहीं जो बगीचे को सुन्दर बनाते हैं। ये विष-वृक्षों के बीज हैं। इस्लाम, ईसाइयत आदि मतवाले विषजन्तुओं के समान इस सुन्दर बगीचे में प्रवेश करके स्वच्छन्द रूप से विचरते हैं, इसे नष्ट करने में लगे हैं। यह बगीचा लगता है कि अब बगीचा न रहेगा, शायद यह एक रणक्षेत्र बनेगा। हिन्दू देश जिसका असली नाम आर्यावर्त था, भरतखण्ड था, उसका नाम-निशान मिट जायेगा। ये हिन्दू लोग अपने पूर्वजों को भूल गए हैं। ये अपने असली नाम को भूल गये हैं। ये अपने असली धर्म, अपनी असली संस्कृति को भी भूल गये हैं। इस कारण से भी मुसलमानों का हौसला बढ़ता जा रहा है।

अब एक दूसरा प्रश्न यह उठता है कि बम्बई हाईकोर्ट ने निर्णय की घोषणा क्यों नहीं की? इसने निर्णय की तिथि की घोषणा भी क्यों नहीं की? बताया जाता है कि स्थिति तनावपूर्ण है और यह भी बताया जाता है कि बम्बई हाईकोर्ट का एक पुराना निर्णय है, जो 'मदर इंडिया' के स्वर्गीय बाबूराव पटेल के मामले में दिया गया था और जिसमें कहा गया था कि यदि किसी लेख या पुस्तक के प्रकाशन से कहीं भी तनावपूर्ण स्थिति पैदा होती है, भले ही उसका विषय ऐतिहासिक सत्य प्रमाण पर आधारित ही क्यों न हो, उसका प्रकाशन करना अपराध माना जायेगा। यदि इस निर्णय पर पुनर्विचार नहीं किया गया, तो भविष्य में स्वामी दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ-प्रकाश को भी प्रकाशित करना अपराध माना जा सकता है, क्योंकि मुट्ठी-भर के मुसलमान मिलकर कभी भी कहीं भी तनावपूर्ण स्थिति पैदा करने में समर्थ हैं और सरकार उनकी बात जल्दी सुनती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब एक और प्रश्न उठता है कि सरकार इतनी लाचार क्यों है ? इसके भी कई कारण हैं। पहला कारण यह है कि सत्तारूढ़ दल के साथ सदा से देश के लगभग चालीस प्रतिशत लोग ही रहे हैं और इनमें भी अल्पसंख्यक लोग काफी हैं अर्थात् देश के बहुसंख्यक लोग सरकार के विरुद्ध हैं। इनकी आपस की फूट के कारण ये सत्ता में नहीं आ सकते, किन्तु सत्तारूढ़ दल सदा अपनी स्थिति को नाजुक अनुभव करता रहा है। इसके अन्दर भी फूट है। इसलिए अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सत्तारूढ़ दल को अल्पसंख्यक मुसलमानों को खुश रखना पड़ता है। सरकार की लाचारी का एक दूसरा कारण भी है। मुस्लिम देशों के लोग, विशेष रूप से अरब देशों के लोग, भारत के मुसलमानों के हितचिन्तक हैं, समर्थक हैं। उन देशों से हमें तेल मंगवाना पड़ता है जो आज की स्थिति में बहुत आवश्यक वस्तु है और लाखों भारतीय आज खाड़ी के देशों में नौकरी-धन्धा कर रहे हैं और भारत से करोड़ों रुपयों की चीजें उन देशों में भेजी जाती हैं जिससे भारत को बड़ा आर्थिक लाभ होता है। इसलिए सरकार अरब के मुसलमानों को नाराज नहीं करना चाहती। यदि संक्षेप में कहूं तो इस प्रकार हम लोग चारों तरफ से फंसे हुए हैं और हमें आत्मघात करने की स्थिति उत्पन्न हुई है। यह हमारे नेता लोगों की, हमारी सरकार की मेहरबानी है। इसलिए यदि हम अब नहीं जागेंगे तो फिर कभी भी वह मौका नहीं आयेगा।

अब एक दूसरी बात देखिए। पिछले वर्ष ४ दिसम्बर १९८२ को एशियाड के खेल खत्म हुए। बाहर से आये हुए खिलाड़ियों के लिए वहां गोमांस परोसा गया। गाय का सम्बन्ध हिन्दुओं की धार्मिक भावना के साथ जुड़ा हुआ है। कुछ एक विकृत मस्तिष्क के लोगों को छोड़कर सभी हिन्दू गाय की हत्या के विरोधी हैं। लाखों लोग गोहत्या का विरोध करते हुए जेल गए, यातनायें सहीं। यह विरोध कई वर्षों से चल रहा है किन्तु सरकार इनकी आवाज नहीं सुनती। हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं की उसको परवाह नहीं। आज क्या कोई किसी इस्लामी देश में मेहमानों को सुअर का मांस परोसने की बात सोच सकता है ? इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। क्योंकि हर मुसलमान अपने धर्म, अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए सदा सिद्ध रहता है ; हिन्दुओं में ऐसी बात नहीं।

एक तीसरी बात यह है कि महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित आठवीं कक्षा की इतिहास की पुस्तक के तीसरे अध्याय में इस्लाम के बारे में चर्चा करते हुए मुहम्मद का मक्का से मदीना पलायन करने की बात लिखी हुई है। गत अगस्त महीने में मुसलमानों ने इस पुस्तक को पढ़ाये जाने का विरोध किया। क्योंकि उसमें मुहम्मद को मुहम्मद पैगम्बर नहीं लिखा गया है और उसके लिए 'पलायन' शब्द अपमानजनक है, इसके बदले 'स्थलान्तर किया' और मुहम्मद को मुहम्मद पैगम्र ऐसा लिखा जाना चाहिए, यह उनकी मांग थी। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बाबासाहब भोसले ने तुरन्त मुसलमानों की मांग को सुन लिया और उसके अनुसार उक्त पुस्तक में परिवर्तन व संशोधन करने का आदेश दिया। इससे प्रोत्साहित होकर ईसाई लोग भी जाग गये। उक्त पुस्तक के दूसरे, पांचवें और सातवें अध्याय में ईसाई मत की चर्चा है, प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक चर्च के झगड़े की बात है, चर्चों में भ्रष्टाचार और चर्च के विज्ञान विरोधी कार्यों का उल्लेख है, ईसा मसीह के देवत्व के बारे में प्रश्न है तथा कई ऐसी बातें हैं जिन्हें ईसाई मतान्ध पसन्द नहीं करते। इनका विरोध देखकर उनकी भी बात मान ली गई। किन्तु हिन्दू अभी जागे ही नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम यह नहीं कहते कि हिन्दू भी शिक्षा क्षेत्र में हस्तक्षेप करें। शिक्षा क्षेत्र के प्रश्नों का उसी क्षेत्र से सम्बन्धित लोगों द्वारा हल किया जाना चाहिये। किन्तु जब मुसलमान और ईसाई अपनी झूठी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए अपने विरोध में जाने वाली ऐतिहासिक सत्य बातों के भी प्रकाशन का विरोध करते हैं और सरकार झुक जाती है, तब हिन्दू धर्म पर होने वाले प्रहारों को क्यों सहन किया जा रहा है ? और यदि इतिहास पर धार्मिक संस्थाओं का हस्तक्षेप इसी प्रकार जारी रहा, फिर उस इतिहास की क्या स्थिति होगी ?

महाराष्ट्र की आठवीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक के प्रथम अध्याय में वैदिक धर्म और मनुस्मृति का गलत चित्र प्रस्तुत किया गया है। यथा—

(१) "वैदिक काल में आर्य लोग प्रकृति की विभिन्न शक्तियों को देवी मानकर उनकी पूजा करते थे, यज्ञकर्ता अपने वांछित फल की प्राप्ति के लिये यज्ञ के द्वारा देवताओं का आवाहन करके उन्हें सन्तुष्ट करते थे," इत्यादि।

इसका तात्पर्य है कि वैदिक काल में आर्य लोग सच्ची ईश्वर उपासना और एकेश्वरवाद को नहीं जानते थे। एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति...(ऋग्वेद १-१६४-४६) इस प्रकार के वेदमंत्रों से लेखक अपरिचित लगता है।

(२) "उच्च वर्ग से त्रस्त दुःखी जनता जैन और बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट होने लगी, क्योंकि ये दोनों धर्म मानव-मानव के बीच समानता का उपदेश देते थे।

इसका तात्पर्य यह होता है कि मानव-मानव के बीच समानता का उपदेश वेदों में नहीं है। लेकिन ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त में समानता की शिक्षा है। यथा—

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मन : सह चित्तमेषाम्।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनः (ऋग्वेद १०-१९१-३,४)

इसका भावार्थ है कि हमारे मन, हमारे विचार सब एक समान हों। और हमारे दिलों में भेदभाव न रहे इत्यादि।

(३) "जैन और बौद्ध धर्मों ने वैदिक धर्म में प्रचलित यज्ञों के कर्मकाण्ड और वर्णव्यवस्था को अमान्य कर दिया। दोनों ही धर्मों ने वैदिक परम्परा का तीव्र विरोध किया।"

यह भी गलत बात है। बौद्ध और जैन धर्मों ने वैदिक परम्परा के साथ जुड़ी हुई अवैदिक परम्परा का विरोध किया था। जैसे यज्ञों में पशुहिंसा इत्यादि। इस प्रकार के इतिहास पढ़ाने से बौद्ध और जन लोग अवश्य वैदिक धर्मावलम्बी हिन्दुओं के विरोधी बन जायेंगे।

(४) हिन्दू धर्म वैदिक धर्म का ही विकसित रूप है।

यह भी बड़ी भ्रामक बात है। क्योंकि वास्तव में हिन्दू धर्म वदिक धर्म का विकृत रूप है। हिन्दू धर्म में परस्पर-विरोधी बातें हैं और कई वेद-विरोधी बातें भी हैं।

(५) मनु ने स्त्रियों को किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता देने का विरोध किया है। आचार और धर्मविषयक ग्रंथ होते हुए भी मनुस्मृति का दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
मनु के मतानुसार ईश्वर की उपासना नहीं, बल्कि वर्ण के अनुसार सम्यक् आचार और कर्म ही धर्म का मूल तत्त्व है। मनुस्मृति के सिद्धान्त और नियम समता, स्वतंत्रता तथा मानवता के विरोधी प्रतीत होते हैं।

यहां मनुस्मृति के बारे में लिखे गये सब वाक्य गलत और भ्रामक हैं, क्योंकि मनुस्मृति कहती है—

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने ।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ।। (अध्याय ९ श्लोक ३)

इस श्लोक में स्वातत्र्य शब्द का अर्थ गलत समझा गया है। शुक्रनीति में राजा के बारे में लिखा है कि—

प्रभुः स्वातंत्र्यमापन्नो ह्यनर्थाय प्रल्पते (अध्याय २, श्लोक ४) अर्थात्, राजा स्वतंत्र हो जाने पर देश में बहुत अनर्थ पैदा होते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं होता कि राजा को बन्दी बना के रखा जाय अथवा राजा का स्थान-मान कम किया जाय। इसका तात्पर्य केवल इतना है कि राजा मनमानी न करे और वह प्रजा के अधीन तथा प्रजा राजा के अधीन रहे। इसी प्रकार चाणक्य ने भी लिखा है—
अस्वतंत्रश्च मेधावी ज्ञानविज्ञानसंयुतः । (अर्थशास्त्र १-५४)

अर्थात् राजा मेधावी और विद्वान् हो किन्तु स्वतंत्र न हो अर्थात्, स्वेच्छाचारी न हो। वह अपनी प्रजा के अधीन और प्रजा उसके अधीन रहे। इसी प्रकार न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति का तात्पर्य स्त्री अपने परिवार के अधीन और परिवार स्त्री के अधीन रहे। परिवार में स्त्री का स्थान बहुत ऊँचा है। वह घर की लक्ष्मी है। घर की शोभा है।

प्रजननार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदोप्तयः
स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन (मनु० १-२६)

अर्थात् स्त्रियां बड़ी भाग्यवती और उत्तम सन्तान के हेतु और सत्कार के योग्य तथा घर की शोभा हैं और घरों में स्त्रियां ही वास्तव में लक्ष्मी हैं। दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितृणामात्मनश्च ह (मनु. १-२८) अर्थात् अपना और अपने पितरों का स्वर्ग भार्या के अधीन है। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।।(मनु ३-५६) अर्थात् जिन परिवारों में स्त्रियों का आदर होता है, वहां देवता अर्थात् विद्यादि दिव्य गुणों से युक्त परोपकारी सन्तान पैदा होती है और जहां उनका अनादर होता है वहां के सारे अच्छे कर्म भी निष्फल हो जाते हैं। शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् । न शोचयन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा ।। (मनु. ३-५७) अर्थात् जिस कुल में स्त्रियां दुःखी हैं वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है और जिस कुल में ये सुखी हैं वह कुल सदा बढ़ता है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि संसार मे स्त्रियों को इतना महत्त्व देने वाला अन्य कोई भी प्राचीन ग्रंथ किसी भी अन्य देश में उपलब्ध नहीं है। जब स्त्री का कोई अधिकार नहीं होता, जब वह पढ़ी-लिखी नहीं होती, तब उसके आदर की बात अर्थहीन हो जाती है। जब किसी स्त्री को अपने कार्य, अपने कर्त्तव्यों का पालन करने में, अपने और अपने परिवार के लोगों के हित की बात सोचने और तदनुसार कार्य करने का कोई स्वातंत्र्य नहीं, तब वह स्त्री केवल पुरुष की भोगवस्तु बनकर रह जाती है। इस स्थिति में वह सुखी कैसे रह सकती है? इसलिए यह कह देना ग़लत है कि मनु ने स्त्रियों को किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता देने का विरोध किया है। लोग प्रायः मनु का यह वाक्य प्रमाण के रूप में सुनाते हैं कि न स्त्री स्वान्त्र्यमर्हति। यह वाक्य मनुस्मृति के नवम अध्याय में मिलता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसका अर्थ है कि बचपन में माता-पिता, यौवन में पति, बुढ़ापे में पुत्र स्त्री की रक्षा करते हैं। उसको असहाय नहीं छोड़ना चाहिये। उसको अपनी सीमा, सामाजिक मर्यादाओं के अन्दर सुरक्षित रखना चाहिये। क्योंकि 'पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनम्। स्वप्नान्यगेहवासश्च नारीणां दूषणानि षट्। (मनु ९.१३) अर्थात् मादक द्रव्यों का सेवन, दुर्जनों का ससंर्ग, पति से अलग रहना और इधर-उधर घूमना, दिन में सोना, दूसरों के घर में रहना, ये छः बातें स्त्री के चरित्र को दूषित करती हैं। अरक्षिताः गृहे रुद्धाः (मनु, ९-१२) अर्थात् जो स्त्री अपने आपको दुनिया के प्रलोभनों इन्द्रियों की चपलता से मन की चंचलता से रोकती है, जो हर परिस्थिति में अपने चरित्र, समाजिक मार्यादा इत्यादि की रक्षा करने में सदा सजग रहती है अर्थात् जो मनमानी नहीं करती, स्वेच्छाचार नहीं करती वही स्त्री सुरक्षित है। और जो स्त्रियां इस प्रकार अपने आपको पतित होने से अथवा बुरे संग इत्यादि से सुरक्षित नहीं रखतीं, वे श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा रक्षित होने पर भी सुरक्षित नहीं हैं। मनु ने स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध क्षेत्र और बीज जैसा बताया है—

'क्षेत्रभूता स्मृता नारी बीजभूतः स्मृतः पुमान्' (मनु० ९-३३)

इसलिए जो लोग उत्तम सन्तान की अपेक्षा करते हैं वे जैसे एक किसान अथवा माली क्षेत्र और बीज की शुद्धता और श्रेष्ठता की रक्षा करने में सजग रहता है वैसे ही वे भी स्त्री की पवित्रता और श्रेष्ठता की रक्षा में तत्पर रहते हैं।

स्त्रियां एक दृष्टि से दो प्रकार की होती हैं। यथा स्वाधीनयौवना और पराधीनयौवना। स्वाधीनयौवना स्वतंत्र और स्वेच्छाचारिणी होती हैं। इनको वेश्या कहते हैं। दूसरी पराधीनयौवना, जिनका यौवन केवल अपने पति के लिए समर्पित है। वे पतिव्रता गृहलक्ष्मी कहलाती हैं। मानव समाज में आज भी सर्वत्र गृहणी का स्थान-मान जो है वह अन्य स्त्रियों का नहीं है। यहां यह उल्लेखनीय बात है कि फ्रांस जो दुनिया में सबसे अधिक फैशनेबल लोगों का देश माना जाता है, वहां सन् १९७३ में एक कानून पास हो गया है जिसके अनुसार जो स्त्रियां नौकरी न करके घरके घर में गृहणी बनकर बच्चों को संभालती हैं उनको सरकार द्वारा बुढ़ापे में पेन्शन दी जाती है। हमारे यहां पतिव्रता स्त्री को कोई नजर उठाकर भी नहीं देख सकता है। उसका अपमान करने की बात दूर की है। इसलिए मनु ने जहां न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति कहा है वहां स्त्री का स्थानमान का ध्यान रखते हुए और उसका आदर करते हुए ही ऐसा कहा है।

जिस प्रकार एक राजा के मनमाना या निरंकुश हो जाने से राज्य नष्ट हो जाता है वैसे ही एक स्त्री के निरंकुश हो जाने से उसका कुल नष्ट हो जाता है। इसलिए मनु को स्त्रीविरोधी कहना लोगों की अल्पज्ञता है और यह मनु पर मिथ्यारोप है कि उसने स्त्रियों को किसी भी प्रकार की स्वतन्त्रता देने का विरोध किया था।

मनु को मानवता और समानता के विरोधी बतलाने का एक दूसरा कारण यह दिया जाता है कि उसने वर्णव्यवस्था का उपदेश दिया और इस वर्णव्यवस्था में शूद्रों का स्थान नीचा है। विचार करने पर पता चलता है कि यह वर्णव्यवस्था एक स्वाभाविक और वैज्ञानिक सामाजिक व्यवस्था है। इसमें विद्या-ज्ञान की उन्नति करने वाले ब्राह्मण, देश की रक्षा करने वाले क्षत्रिय, देश की सम्पत्ति पैदा करने वाले और वितरण करने वाले वैश्य तथा इन सब की सेवा करने वाले शूद्र हैं। शूद्र शब्द का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थ है दृष्टि से शून्य यानी ज्ञान-दृष्टि से शून्य, अज्ञानी, अशिक्षित, अनपढ़। जन्म से मनु ने सब को शूद्र अर्थात अज्ञानी ही माना है। गर्भाधान, जातकर्म, चूडाकर्म इत्यादि संस्कारों से ये द्विज हो जाते हैं।

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।

महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः॥ (मनु० २-२८)

अर्थात् वेदादि शास्त्रों के नित्य नियमपूर्वक अध्ययन, सदाचारादि व्रतों का पालन, अग्निहोत्र, ज्ञान-कर्म-उपासनारूपी त्रैविद्या, बलिवैश्वदेवादि यज्ञ, पुत्रोत्पत्ति, विद्यादान, विद्वानों, पितरों, दुःखी, पीड़ित, रोगी, अनाथ विधवादि की सेवा और अतिथियों का सत्काररूपी महायज्ञ तथा अमावस्या-पूर्णिमा में, ऋतुओं के अन्त में, अयनों के अन्त में, नव शस्य आने के समय में और वर्ष के अन्त में किये जाने वाले यज्ञ इत्यादि कर्मों के नियम पूर्वक करते रहने से एक द्विज को ब्राह्मणत्व प्राप्त हो जाता है। शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् (मनु० १०-६५) अर्थात् शूद्र भी संस्कारादि से ब्राह्मण बन सकता है और ब्राह्मण भी अपने गुण कर्मादि को छोड़ने से शूद्र हो जाता है। 'अनधीत्य द्विजो वेदं' अन्यत्र कुरुते श्रमम् सजीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय; (मनु. २-१६८) अर्थात् द्विज होने पर भी जो वेदों का नित्य पढ़ना छोड़ देता है वह अपने परिवार के साथ शीघ्र ही शूद्रत्व को प्राप्त होता है। इन बातों से सिद्ध हो जाता है कि ज्ञान और व्रतनियमादि के पालन रूपी अग्नि में तपते रहना ही ब्राह्मणत्व है और इनको छोड़ना ही शूद्रत्व है। जैसे अग्नि में तपते हुए लोहे की शलाका अग्नि के समान तेजस्वी और ज्वलनगुण सम्पन्न हो जाती है और जब उसको अग्नि से अलग किया जाता है, तब वह निस्तेज, काली और शीतल हो जाती है, वैसे ही मनुष्य भी ज्ञान, सदाचार के व्रत और परिश्रम से तेज इत्यादि गुणों से युक्त हो जाता है। इन गुणों की उत्कृष्टता ही ब्राह्मणत्व है। अज्ञान, अनाचार इत्यादि के कारण मनुष्य शूद्र बन कर रहता है। अतः जन्म के आधार पर मनु ने वर्णव्यवस्था नहीं की है। उसने गुणकर्म स्वभाव के आधार पर वर्णव्यवस्था का उपदेश दिया है। आज भी सरकारी नौकरों में चतुर्थ श्रेणी के नौकर (क्लास फोर सरवेंट) होते हैं। अपनी योग्यता को बढ़ाकर ये तृतीय, द्वितीय और प्रथम श्रणी तक पहुंच सकते हैं। इसके लिए हमें बहुत उदाहरण मिलेंगे। इसी प्रकार प्राचीन काल में नीच कुल में उत्पन्न कई पुरुष उच्च वर्ण को प्राप्त हुए थे, जो जन्म से शूद्र थे। वे भी ऋषि बन गये थे। इसी प्रकार ब्राह्मण-क्षत्रियादियों के भी पतन के प्रमाण मिलते हैं। महर्षि वसिष्ठ, वेदव्यास, विश्वामित्र इत्यादि इन बातों के दृष्टान्त हैं। आजकल हम देखते हैं कि क्लास वन् अफसरों के कुछ विशेष अधिकार होते हैं। उनके लिए कुछ विशेष सुविधायें होती है और उनके लिए कुछ व्यावहारिक नियम भी हैं। हमारे देश की बात को छोड़ो। साम्यवादी या समाजवादी देशों में भी यह व्यवस्था देखी जाती है। मनु ने अपने समय के अनुसार ऐसी ही व्यवस्था का उपदेश दिया था जिसको वर्णव्यवस्था कहते हैं। क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की वृत्ति वास्तव में वरण यानी व्यक्ति की अपनी रुचि के अनुसार चुन ली जाती थी। इसलिए यह कहना कि मनुस्मृति के सिद्धान्त समता, स्वतन्त्रता तथा मानवता के विरोधी प्रतीत होते हैं, यह मनुस्मृति का अपमान है। मनुस्मृति को मानने वालों का भी अपमान है।

यहां 'प्रतीत होते हैं' शब्द से पता चलता है कि इन पंक्तियों के लेखक को अपनी बातों पर पूर्ण विश्वास नहीं है। किसी भी ग्रंथ की पूरी बातों को पढ़ बिना,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसके अभिप्राय को समझे बिना, उसके विरुद्ध प्रचार करना विद्वानों के योग्य बात नहीं है।

मनुस्मृति का दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण बताया गया है। पक्षपात उसे कहते हैं जिसमें गरीब और छोटे लोगों के लिए एक कानून और अमीर और ऊंचे लोगों के साथ एक व्यवहार और दूसरे लोगों के साथ दूसरा व्यवहार—यह भी पक्षपात माना जाता है। लेकिन जिस मनुस्मृति में अपने और पराये की कोई बात ही नहीं और अपराध करने पर गरीब और छोटे लोगों से ज्यादा अमीर और बड़े लोगों को सजा देने की बात लिखी गई है, उस पर पक्षपात का आरोप लगाना किसी समझदार व्यक्ति का काम नहीं है। यह मनुस्मृति का उपदेश है कि शूद्र को चोरी में आठ गुणा पाप होता है, वैश्य को सोलह गुणा, क्षत्रिय को बत्तीस गुणा, ब्राह्मण को चौंसठ गुणा वा पूरा सौ गुणा वा एक सौ अट्ठाईस गुणा पाप होता है, क्यों कि वह चोरी के दोष-गुण जानने वाला है।

अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य स्तेये भवति किल्विषम्।
षोडशैव तु वैश्यस्य द्वात्रिंशत्क्षत्रियस्य च॥
ब्राह्मणस्य चतुःषष्टिः पूर्णं वापि शतं भवेत्।
द्विगुणा वा चतुःषष्टिस्तद्दोषगुणविद्धि सः॥

इसी प्रकार अन्य अपराधों के बारे में भी मनुस्मृति में उच्च वर्ण के लोगों को अधिक दण्ड की व्यवस्था बताई गई है। यदि यह नियम आज देश में होता तो देश में भ्रष्टाचार इतना नहीं बढ़ता। फिर किस आधार पर कोई कहता है कि मनुस्मृति का दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण है? क्या यह मनुस्मृति का और अप्रत्यक्ष रूप में हिन्दू (आर्य) धर्म को बदनाम करने का प्रयास नहीं? जो बच्चे इस इतिहास को पढ़ेंगे, वे क्या कभी भी इस देश के प्राचीन धर्म और संस्कृति के बारे में गर्व अनुभव कर सकते हैं? कभी नहीं। यह एक प्रकार से भारतीयों के अभारतीयकरण का प्रयास है।

इस पुस्तक में लिखा हुआ है कि मनु के मतानुसार ईश्वर की उपासना धर्म का मूल तत्त्व नहीं है। यह भी एक मिथ्यारोप है। क्योंकि जिस त्रैविद्य की चर्चा मनु ने की है उसमें ईश्वर की उपासना ही प्रधान है।

जपेनैव तु संसिध्येद् ब्राह्मणो नात्र संशयः।
कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते॥

(मनु० ८-२३७, २३८)

अर्थात् ब्राह्मण ईश्वर की उपासना करने से ही मोक्ष को प्राप्त करता है। इसलिए वह भले ही अन्य कर्म करे व न करे, गायत्री का जाप अवश्य करे। क्योंकि यह मंत्र ईश्वरोपासना का सर्वश्रेष्ठ मंत्र माना जाता है। देखिये, मनुस्मृति में ईश्वर का किस प्रकार सुन्दर और वैज्ञानिक स्वरूप दिखलाया गया है—

एतमेके वदन्त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिम्।
इन्द्रमेके परे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम्॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एष सर्वाणि भूतानि पञ्चभिर्व्याप्य मूर्तिभिः ।
जन्मवृद्धिक्षयैर्नित्यं संसारयति चक्रवत् ॥
एवं यः सर्वभूतेषु पश्यत्यात्मानमात्मना ।
स सर्वसमतामेत्य ब्रह्माभ्येति परं पदम् ॥

(मनु० १२-१२३,१२४,१२५)

अर्थात् ईश्वर को कोई अग्नि कहते हैं। कोई मनु, कोई इन्द्र, कोई प्राण और कोई नित्य शाश्वत ब्रह्म कहते हैं। वह ईश्वर आत्मा के स्वरूप में सब जीवों को पञ्चमहाभूतों से व्याप्त कराकर नित्य जन्मवृद्धिक्षयों के चक्कर में घुमाता है। इस प्रकार जो मनुष्य सब प्राणियों में अपने आत्मा के द्वारा परमात्मा को देखता है, वह समदृष्टि होकर परमपद ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है। क्या ईश्वर की उपासना का इससे सुन्दर और कोई उपाय संसार के किसी भी प्राचीन धर्मग्रंथ में बताया गया है ? समदृष्टि अर्थात् सब प्राणियों को अपने आत्मा के समान देखना और सब आत्माओं में परमात्मा को देखने की बात जिस ग्रंथ में लिखी गई है उस पर पक्षपात और ईश्वर की उपेक्षा करने का आरोप कोई मंदमति ही लगा सकता है।

महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित आठवीं कक्षा की यह इतिहास की पुस्तक इस बात का प्रमाण है कि किस प्रकार योजनाबद्ध रूप से सरकार के आश्रय में भारतीयता को नष्ट किया जा रहा है। किसी भी जाति को यदि नष्ट करना हो तो पहले उसके इतिहास को नष्ट करो। मुसलमान शासकों ने भारत में यही कार्य किया। अंग्रेजों ने भी यही किया और यह शर्म की बात है कि अब इस कार्य को हमारी ही सरकार और हमारे ही विद्वान् कर रहे हैं। यही कारण है कि यद्यपि इस देश में अपने आपको हिन्दू कहलाने वाले बहुसंख्या में हैं, तथापि इन लोगों में जीवन नहीं, विशेष रूप से पढ़े-लिखे लोगों में इस बात के प्रमाण मिलते हैं। ये लोग हमारी संस्कृति को नष्ट होते देखने में ईसाई और मुसलमानों से भी अधिक उत्सुक हैं। अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी परम्परा के बारे में इनके मन में गलत धारणायें भर दी गई हैं। इसलिए इनके पक्ष में बोलने-लिखने में ये संकोच करते है। ये इनकी निन्दा करना बुद्धिजीवी का लक्षण और इनकी स्तुति करना पोंगापंथी होने का लक्षण समझते हैं।

गलत इतिहास पढ़ने के दुष्परिणाम का एक दृष्टान्त देखिये। गत अक्टूबर में राज्यसभा में प्रश्नोत्तर काल में केरल के श्री मोहन ने कहा कि यद्यपि मैं एक हिन्दू हूं, तथापि मुझे गोमांस स्वादिष्ट लगता है। इसके समर्थन में बंगाल के श्री चटर्जी ने कहा कि हिन्दू लोग वैदिक काल से ही गोमांस खाते आये हैं। वेदों में मांस-भक्षण की निन्दा है, पशु हिंसा की निन्दा है और गौ अघ्न्या अर्थात् न मारने योग्य पशु है। फिर भी गलत प्रचार किया जा रहा है। यदि इतिहास पढ़ाने का यही क्रम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जारी रहा तो निश्चय ही आगामी पचास वर्षों में अपने धर्म की बात करने वाला कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति इस देश में नहीं मिलेगा। इसलिए यदि हमें अपने प्राचीन सत्य और सनातन वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति की रक्षा करनी है, तो हमें उसके इतिहास की भी रक्षा करनी होगी। हमारा वर्तमान हमारे अतीत पर और हमारा भविष्य हमारे वर्तमान पर अवलंबित है। इसलिए यदि हमें अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाना है, तो हमें अपनी वर्तमान स्थिति को सुधारना होगा। और यदि हम अपने वर्तमान को सुधारना चाहते हैं तो हमें अपने गलत इतिहास को सुधारना होगा।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मोहतोऽवधीत् (मनु० ८-१५)

अर्थात् जो लोग अपने धर्म को मरते हुए देखते हैं वे स्वयं भी नष्ट हो जाते हैं और जो लोग अपने धर्म की रक्षा करते हैं वे लोग स्वयं भी सुरक्षित रह जाते हैं। इसलिए हमें अपने आप को सुरक्षित रखने के लिए, अपनी संतान की सुरक्षा के लिए धर्म की रक्षा करनी पड़ेगी। वैदिक धर्म संसार में सर्वश्रेष्ठ और अत्यमूल्य है। इसलिए इसकी रक्षा के लिए हमें उतना ही बड़ा मूल्य भी चुकाना होगा।

१९/६६० चैम्बूर कालोनी, बम्बई—४०००७४

"मंथन से मक्खन निकलता है, पर संघर्ष या घर्षण से आग निकलती है, इसलिए मक्खन पैदा करने का ही यत्न करना चाहिए। हलचल और आंदोलन इस तरह के किए जाएं, जिनसे समाज में विचारों का खूब मंथन हो, घर्षण न हो। संघर्ष की कल्पना यहां की नहीं, पश्चिम की देन है जो सर्वदा मारक है। पश्चिम वालों की जो अच्छी चीजें हों, जैसे विज्ञान के नए नए आविष्कार, उन्हें हमें अवश्य सीखना चाहिए। किंतु इस का यह अर्थ नहीं कि उनकी बुरी चीजें भी हम अनिवार्यतः ले लें। खासकर समाजशास्त्र के विषय में हमें पश्चिम से कुछ भी सीखने की जरूरत नहीं है।"

—स्व० आचार्य विनोबा भावे

"ईमानदारी सरलता नहीं है। सरलता की तुलना में ईमानदारी एक साधारण गुण है। कुछ लोग ईमानदार होते हैं, पर सरल नहीं। वे कभी ऐसी कोई बात नहीं कहते, जो उन्हें असत्य प्रतीत होती हो। वे जैसे हैं वैसा ही दूसरों को दिखाना चाहते हैं। परंतु वे सदा ही अपने बारे में सोचते रहते हैं। अपने हर शब्द और हर विचार को तोलते रहते और डरते रहते हैं कि कहीं आवश्यकता से ज्यादा या कम कुछ कह या कर न बैठें। वे दूसरों के सामने बेचैन रहते हैं और दूसरे उनके सामने।"

—सत्यकाम विद्यालंकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कन्हैयालाल चतुर्वेदी

मुझे भी सैयद शहाबुद्दीन से कुछ कहना है

हिन्दू समाज ने कभी किसी को अपने अधीन रखने की कल्पना नहीं की। हिन्दू समाज में इतने मतमतांतर साथ रहे हैं, रह सके हैं, यह इस समाज की महत्त्वपूर्ण बात है और यही इसकी सब से बड़ी ताकत भी है।

मुझे भी कुछ कहना है स्तंभ के अन्तर्गत दिनमान में सांसद सैयद शहाबुद्दीन का कथन पढ़ा। श्री शहाबुद्दीन इसी तरह की बातें बहुत समय से कहते आ रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री देवरस जब मुस्लिम राष्ट्रों की साम्प्रदायिक कट्टरता का उदाहरण देते हैं तो उनका यह अर्थ कतई नहीं होता कि उन राष्ट्रों की संप्रदाय-निरपेक्षता (सेकुलरिज्म का भाषांतर यही है, धर्म-निरपेक्षता कदापि नहीं) हमारे देश के सेकुलेरिज्म के लिए शर्त होनी चाहिए। इसकी एक वजह यह भी है कि हिन्दुस्तान कभी भी संप्रदाय-सापेक्ष रहा ही नहीं है। केवल सम्राट् अशोक के काल खंड को छोड़कर यह देश सदा संप्रदायनिरपेक्ष ही रहा, किन्तु जब श्री देवरस मुस्लिम राष्ट्रों की बात कहते हैं तो वे मुस्लिम समाज की मानसिकता बताने के लिए ही होती है। यह तथ्य है कि इन राष्ट्रों में हिंदू मंदिर नहीं बना सकता। यदि हिन्दू अपने घर में भी पूजा करता है तो बहुत भीतर किसी कोने में जाकर।

इसीलिए श्री देवरस कहते हैं कि भारत में संप्रदायनिरपेक्षता इसी कारण है कि यहां हिन्दू अधिसंख्य हैं। श्री शहाबुद्दीन ने बड़े आराम से यह कह दिया है कि "हिन्दू नौकरी के लिए इन देशों में न जायें।" यदि श्री शहाबुद्दीन स्वयं को सेकुलरिज्म का मसीहा मानते हैं तो वे क्यों नहीं इन देशों को सेकुलरिज्म का सबक सिखाते? क्या उन्होंने आज तक मुस्लिम राष्ट्रों की इस कट्टर संकीर्णता की निंदा में एक शब्द भी कहा है?

वे कहते हैं कि मुसलमानों को हटाया नहीं जा सकता, इस्लाम को बुझाया नहीं जा सकता। ऐसा कोई नहीं चाहता न ही कोई यहां गैर-हिन्दुओं को हिन्दुओं के अधीन रखना चाहता है। हिन्दू समाज ने कभी भी किसी को अपने अधीन रखने की कल्पना नहीं की। हिन्दू समाज में इतने मत-मतांतर साथ-साथ रहे हैं, रह सके हैं, यह इस समाज की सबसे महत्त्वपूर्ण बात है तथा यही इसकी सबसे बड़ी ताकत भी है। भारत में पूजा करने के तरीकों को लेकर कभी भी कोई दुराग्रह नहीं रहा। सभी को अपने-अपने हिसाब से ईश्वर की आराधना करने की आजादी रही। इसलिए हमारे यहां ईश्वर को न मानने वाला भी हिन्दू है, मानने वाला भी हिंदू है, वेदवेदांतों को मानने वाला भी हिन्दू है, न मानने वाला भी हिन्दू है, निर्गुण की उपासना करने वाला भी हिन्दू है, सगुण की उपासना करने वाला भी हिन्दू है।

हिन्दू समाज ने यह कभी नहीं कहा कि एक निश्चित स्थान पर जाकर एक निश्चित विधि से इबादत करने पर ही स्वर्ग की प्राप्ति होगी, न ही यह कभी कहा कि उस विधि से इबादत न करने वाले बाकी सभी पापी हैं तथा मार देने के योग्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। व्यवहार के रूप में भी यह बात सर्वत्र दिखाई देती है। यही हिन्दू समाज का सबसे मजबूत तथा महत्त्वपूर्ण आधार है।

विश्व के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ स्व० श्री आरनाल्ड टायन्बी ने एक स्थान पर लिखा है कि आज "संसार संघर्षमय है, क्योंकि तरह-तरह के विभेद संसार में हैं, इस संसार को सुख का, शांति का रास्ता यदि दिखाना होगा तो वह हिन्दुस्तान ही दिखा सकता है, क्योंकि अलग-अलग कारणों से इस देश में इतनी विविधताएं हैं कि इन सब विविधताओं के रहते हुए यदि एकात्मकता का सूत्र यहां बलवान् हो सका और विविधता में एकात्मकता का सूत्र रखने वाला समाज यदि यहाँ माडल के रूप में निर्मित हो सका तो फिर उसी का अनुकरण करके सम्पूर्ण संसार को किस तरह विविधता के अन्तर्गत एकात्मकता के सूत्र में बांधा जा सकता है, यह प्रयोग करने की प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।"

इसलिए श्री देवरस कहते हैं कि हिन्दू शब्द इस देश के सभी निवासियों का द्योतक है, क्योंकि जब यहां राम, कृष्ण, शंकर, महावीर, बुद्ध, गुरु नानक और वेदों को ईश्वर की वाणी मानने वाले सभी हिन्दू हैं तो हजरत मुहम्मद की आराधना करने वाला हिन्दू क्यों नहीं हो सकता ?

यह उदार हिन्दू चिन्तन का एक प्रमाण है। इसीलिए किसी के हटाये या बुझाये जाने का कोई प्रश्न ही नहीं। प्रश्न है तो किसी समाज-विशेष की आक्रामक वृत्ति का। केवल हिन्दू के यह मानने से कि "यहां रहने वाले सभी हिन्दू हैं" काम नहीं चलेगा। यहां रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने आप को सर्वप्रथम भारतीय समझे। देशबाह्य निष्ठाएं कतई सहन नहीं की जा सकतीं।

आखिरकार यहां रहने वाले पूरे के पूरे बीस करोड़ मुसलमान और ईसाई विदेशी मुल्कों से आए हुए तो हैं नहीं। उनमें से अधिसंख्य यहीं के रहने वाले हैं तथा पूजा करने के तरीके में परिवर्तन कर मुसलमान या ईसाई बने हैं। अब उपासना-पद्धति में परिवर्तन से पूर्वज तो नहीं बदल जाते। इसीलिए मौलिक सवाल आक्रामक वृत्ति छोड़ने का है। हिन्दू समाज हमेशा से सहिष्णु रहा है, बल्कि उससे भी एक कदम आगे जाकर उसने सभी मत-मतांतरों को प्रोत्साहित किया है (और इसके लिए कोई प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है)। इसी भावना को यहां का मुस्लिम समाज अपनी आक्रामक वृत्ति छोड़कर सम्मान देना आरम्भ कर दे तो समस्या समाप्त हो जाए।

अंग्रेजों की कूटनीति तथा आजादी के पश्चात् यहां के राजनैतिक दलों की ओछी मनोवृत्ति के कारण हिन्दू समाज में भी व्यक्तिवाद, जातिवाद तथा मत-मतांतरवाद कुछ प्रबल हुआ किन्तु यह सर्वथा अस्थायी है। हिन्दू समाज को संगठित कर उसे शक्तिशाली बनाने की बात जब कही जाती है। तब उसका हेतु यही होता है कि इस समाज का वह विधायक दृष्टिकोण, जो अन्यान्य कारणों से दुर्बल हो गया है और जो न केवल इस देश के बल्कि पूरे विश्व के कल्याण के लिए आवश्यक है, प्रमुखता प्राप्त कर पुनः मजबूत बने।

यह विधायक दृष्टिकोण, यह महत्त्वपूर्ण आधार भारतवर्ष की पहचान है। भारतवर्ष हिन्दू राष्ट्र है। इसे चाहे भारतीय राष्ट्र कह लीजिए—बात एक ही है।

जहां तक सांप्रदायिक दंगों का प्रश्न है, सन् १९२५ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना से पूर्व भी देश में सांम्प्रदायिक दंगे होते थे—उन्हीं कारणों से जिनसे आज भी हो रहे हैं। प्रत्येक सांप्रदायिक घटना के लिए संघ को दोषी ठहराना राजनीतिकों का बहुत प्रचलित मुहावरा है। ●

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज अकालियों की राह पर

—प्रो० धर्मवीर
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दयानन्द कालेज, अजमेर

(आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नहीं, यह तो एक आन्दोलन है। लेकिन कुछ नेतानामधारी अपनी शिक्षण संस्थाओं के लिए विशेषाधिकार पाने की खातिर इसे भी एक अल्पसंख्यक सम्प्रदाय का रूप देना चाहते हैं। लेखक ने इस प्रवृत्ति को गलत बताया है।

—सम्पादक

जब स्वामी दयानन्द का कर्मक्षेत्र में पदार्पण हुआ, उस समय भारत की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। जागृति के छुटपुट प्रयत्न ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज आदि के रूप में हो रहे थे परन्तु सारा प्रयत्न सागर में बिन्दुओं जितना था, राजनतिक दृष्टि से देश पराधीनता के दौर में था। १८५७ का स्वातन्त्र्य समर असफल हो चुका था अतः समाज में निराशा का वातावरण होना स्वभाविक था। धार्मिक नेताओं का सारा समय कर्मकाण्ड की प्रक्रियाओं को कैसे शुद्ध रूप दिया जाये, इसीमें व्यतीत होता था। सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ता सरकार की चापलूसी करके समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाने में लगे हुए थे। ऐसे समय में राष्ट्र किधर जाये यह बतलाने वाला कोई नहीं था। किंकर्तव्यविमूढ़ जनता चौराहे पर खड़ी थी। ऐसे समय दयानन्द का कर्म पथ में अवतीर्ण होना राष्ट्र के लिए ईश्वरीय वरदान सिद्ध हुआ। इस संसार में एक एक क्षेत्र में अद्भुत कार्य करने वाले अनेक लोगों के नाम गिनाये जा सकते हैं परन्तु चारों दिशाओं में अभूत पूर्व कार्य करने की क्षमता का धनी दयानन्द ही था। उन्होंने उस समय के सभी धार्मिक मन्चों से यह आग्रह किया था कि वे सत्यासत्य का निर्णय कराके सत्य को स्वीकार कर लें। सभी धार्मिक नेताओं को व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से एकत्रित कर सत्य के निर्णय का प्रयत्न किया परन्तु कोई भी अपनी पुरानी लीक को त्यागने को तैयार नहीं था जब कि स्वामी दयानन्द को नवीनता और पुरातनता में एक से कोई प्रतिबद्धता नहीं थी। वे तो केवल सत्य के आग्रही थे। यही कार्य दुनिया में सबसे कठिन है। सत्य कहने के लिए अपरिमित आत्मिक बल की और सत्य को क्रियान्वित करने के लिए सारे संसार से लड़ने की शक्ति चाहिए। यह हम स्वामी दयानन्द के जीवन में देखते हैं। जैसे ही स्वामी जी कार्य क्षेत्र में उतरे, उनके साथ चलने वालों की कमी न रही। उस समय स्वामी जी के साथ चलने वाले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोग वे थे, जो समाज के लिये त्याग करने की इच्छा रखते थे—जिनमें समाज और राष्ट्र के कल्याण की भावना थी और इस संघर्ष में ही जिन्हें अपने जीवन का लक्ष्य दिखायी देता था। आर्यसमाज के प्रगतिशील किन्तु सत्य और गौरव को प्रदान करने वाले प्राचीन आधार के कारण भारतीय अस्मिता जगाने में समर्थता के कारण इस ओर बुद्धिजीवियों का आकर्षित होना अनिवार्य था।

समाज में बन्धन और जड़ता को जब भी तोड़ा गया है, तभी क्रान्ति करनी पड़ी है। सब कुछ विशृंखलित हो जाता ऐसे समय सिर पर कफन बांधकर बढ़ने वाले ही आगे आ पाते। जो सोचा हुआ करने के लिए मजबूर होते हैं, जो देश और जाति की सेवा में अपना लाभ देखते हैं। जिन्हें राष्ट्र की जीवन्तता में अपना यौवन प्रफुल्लित होता प्रतीत होता है। इस प्रकार के आन्दोलन से समाज में मुक्ति का वातावरण बनता है, स्वतन्त्रता की अनुभूति होती है। यही सब आर्यसमाज के साथ हुआ। जब किसी भी मञ्च से स्वामी दयानन्द की यह आशा पूरी न हुई और उनके विचारों को स्वीकार करने वाले अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी, तब एक संगठन की आवश्यकता अनुभव की गई और सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की गई। उस समय ब्राह्म समाज की स्थिति के कारण नामकरण में आर्यसमाज शब्द सहज बन गया। सारा लक्ष्य आर्य शब्द में निहित है। समाज में तो किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती, परन्तु सिद्धान्त और आधार आर्यत्व में समाविष्ट है।

आर्य शब्द प्राचीन भारतीय गौरव को उजागर करने वाला शब्द है। आर्य शब्द में यहां वैदिक काल से प्रारम्भ कर जो भी आज तक इस देश के निवासियों ने किया है और माना है उसका समावेश होता है। स्वामी दयानन्द ने देखा कि गंगोत्री की निर्मल धारा वर्तमान की हुगली तक आते-आते मलिन होने के कारण इसे शुद्ध करना अनिवार्य हैं। शिक्षा की कमी, सामाजिक चेतना का अभाव और राजनैतिक पराधीनता के कारण हमारा चिन्तन संकुचित और मलिन हो गया था। उसे सुधारना था, उचित दिशा देनी थी, परन्तु सबसे बड़ी बाधा थी उस समय के धार्मिक और सामाजिक नेता जिन्हें सत्य के स्वीकार करने में सरलता से प्राप्त होने वाला वैभवपूर्ण जीवन छोड़ना स्वीकार नहीं था। उन्हें आन्दोलित करने के लिए निश्चित और स्पष्ट लक्ष्य को संगठित रूप से प्राप्त करने वाले संगठन की आवश्यकता थी, जो आर्यसमाज के रूप में सामने आया।

किसी भी मत, सम्प्रदाय से पहली भिन्नता है मुख्य उद्देश्य की। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। आज तक के सारे संगठन थोड़े से लोगों का, थोड़े से स्थान पर रहने वालों का और एक युग के ही लोगों का उपकार करने में विश्वास रखते हैं। यहाँ तो मित्र, शत्रु, दूरस्थ या निकटस्थ सभी लोगों का का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। शेष सब उद्देश्य गौण हैं। उपकार का साधन बतलाया है सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग। इसके बिना उपकार संभव ही नहीं। आर्यत्व में सत्य के स्वीकारने की क्षमता पहली और अपरिहार्य शर्त है। परिणामस्वरूप सारे धर्म ध्वजियों को एक चोट ने दहला दिया और संसार के सभी वर्गों के लोगों को आर्यसमाज प्रिय लगा और शीघ्रतापूर्वक लोगों ने इसे स्वीकार करना प्रारम्भ किया। इस समाज की इस विशेषता के कारण यह संसार का धर्म है। इसमें एक समय और दूसरे समय एक देश और दूसरे देश में किसी भी प्रकार का अन्तर्विरोध नहीं है। इससे बड़ी प्रगतिशीलता और इससे पुरातन भी कुछ नहीं हो सकता। बिना सत्य को स्वीकार किये संसार में कोई प्रगतिशील नहीं बन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकता। आवश्यकता और उपयोगित को समझना और स्वीकार करना इस प्रवृत्ति को सहज मानसिकता के रूप में ले पाना बिना सत्य से प्रतिबद्ध हुए संभव नहीं है। आर्य समाज के शेष नियम सत्य को जानने और संसार का उपकार करने के उपाय मात्र हैं।

समय के साथ संगठन के पास सम्पत्ति और साधनों का होना स्वाभाविक है। विचारों के प्रसार के लिए संगठन की आवश्यकता है, क्योंकि व्यक्ति की अपेक्षा संस्था ही चिरंजीवी और स्थायी हो सकती है, जो समाज के साथ चल सके। परन्तु संगठन में स्थायित्व आते ही आन्दोलन का रूप एक संस्था में बदल जाता है और उसकी सम्पत्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा पर दृष्टि होना सहज सम्भव है। कालान्तर में शिथिलतावश ऐसे लोगों का आधिपत्य हो जाता है और वे जो कुछ हैं स्वयं ही संस्था के नाम से करते जाते हैं।

आर्यसमाज वेद-संस्कृति मूलक होने और भारत में इसका प्रादुर्भाव होने के कारण यहां के भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश मे ढल जाने के कारण संस्था को यहां के हानि-लाभ से संस्था के हानि-लाभ व उद्देश्यों से जोड़ना सिद्धान्तों के साथ अन्याय करना होगा। आर्यसमाज का राष्ट्रीयता से कोई विरोध नहीं बनता। भारत के आर्यों का प्रथम लक्ष्य इस देश के लोगों का उपकार करना, इस देश की उन्नति करना व संसार भर के लिए मानवता के विकास में सहयोग देना है।

धीरे-धीरे स्थानीय संस्थाओं और व्यक्तियों के हितों से कुछ लोगों ने आर्य समाज को जोड़ लिया और उसे ही आर्यसमाज का हिताहित समझने और कहने लगे। इधर इस प्रकार के कुछ सुधारकों ने आर्यसमाज को अल्पसंख्यक बनाने की घोषणा कर दी। ऐसा करने के पीछे कहा गया कि हमें अपने स्वरूप को बचाने के लिए ऐसा करना आवश्यक है। वास्तविकता यह है कि ऐसे लोग अपने निज स्वरूप और स्वायत्तता को इस बहाने सुरक्षित रखना चाहते हैं। उनकी संस्थाओं में हो रही अनियमितता को अल्पसंख्यकों का हित बतलाकर सरकार और समाज की आंखों में धूल झोंकना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। ऐसे सुधारकों में ऐसे लोग भी हैं, जो आर्य-समाज की पहचान को मूर्तिपूजा न करने तक सीमित रखते हैं। फिर तो यह धर्म मुसलमानों से अधिक सहज स्वीकार्य किसे हो सकता है? इस मान्यता में और कन्नौजियों के चौके चूल्हे के धर्म में क्या विशेषता रह जायेगी? मूर्तिपूजा तो एक बुराई को हटाना मात्र है। मूर्तिपूजा न करने वाला आर्य होने से ईमानदार और सदाचारी सनातनी ही भला है। क्योंकि शराबी मांसाहारी, जुआरी और व्यभिचारी भी गैर-मूर्ति पूजक हो सकता है। क्या ऐसे आर्यसमाजी से इस देश का उद्धार संभव है?

आर्यसमाज का जन्म तो पाखण्ड के खंडन के लिए हुआ है और पाखण्ड का जन्म मनुष्य के मन से होता है—वाह्य वस्तुओं या स्थानों से नहीं, क्योंकि जो जैसा कहे, वैसा न करे, यही मिथ्याचार है—यही पाखण्ड है। स्वामी दयानन्द की परिभाषा है कि मन-वचन कर्म की एकरूपता ही सत्य है। यही कठिन कार्य पाखण्डियों के लिए सम्भव नहीं। अतः दायें-बायें रास्ते खोजे जाते हैं। इस प्रकार संसार का उपकार करने वाली संस्था राष्ट्र और समाज का हित करने योग्य भी नहीं रह पाती। आर्यसमाज का जन्म देशवासियों द्वारा यहां के धर्म साहित्य संस्कृति और राष्ट्रीयता की रक्षा करने के लिए हुआ था, जिससे संसार का उपकार किया जा सके। यदि यह इसके द्वारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्भव नहीं तो उसे भी कूड़ क ढेर पर फेंक दिया जाना चाहिए, जहां संसार भर का पाखण्ड पड़ा है।

कुछ लोगों का विचार है कि यदि आर्यसमाज अल्पसंख्यक हो जाये तो जन्मना सभी आर्यसमाजी होंगे और हमें बिना प्रयत्न के ही आर्यसमाज के विस्तार का अवसर मिल जायेगा। यह विचार अज्ञानतापूर्ण है। क्योंकि स्वामी दयानन्द ने ऐसा एक भी साधन आर्यसमाज को नहीं दिया, जिससे बिना प्रयास कोई लाभ मिल सके। सत्य का ग्रहण दुनिया का सबसे कठिन कार्य है। यह किसी को कहीं जन्म लेने से नहीं मिल जाता। विद्या की पात्रता जन्म से नहीं आती। उपकार करने की क्षमता जन्म से नहीं आती। अतः आर्यसमाजी तो प्रयत्न से और बुद्धिपूर्वक बना जाता है। यह अनायास हाथ लगने वाली वस्तु नहीं। जो लोग जन्म से अल्पसंख्यक बनकर तुच्छ स्वार्थों को पूरा करने के इच्छुक हैं, उनमें और बाल बढ़ाकर अलग सिखिस्तान मागने वालों में क्या अन्तर है?

इस प्रकार आर्यसमाज क सुधार के नाम पर और उसक स्थायित्व क नाम पर यदि इन तुच्छ उपायों की आवश्यकता पड़े तो उसके अस्तित्व की आवश्यकता ही क्या है? अब प्रश्न उठता है कि हिन्दी को हम स्वीकार करना चाहते हैं तो इसमें अल्पसंख्यक बनकर नहीं अपितु राष्ट्र की आवश्यकता के लिए यह करना है। वेद को मानते हैं तो क्या अल्पसंख्यक होने के लिये वैदिक दर्शन को मानते हैं, राम को महापुरुष मानते हैं, कृष्ण को अवतार नहीं मानते—इस सब का उद्देश्य अल्पसंख्यक बनना तो नहीं है। वास्तव में आर्यसमाज को हिन्दुओं को बचाने वाला संगठन समझकर जो वावेला मचाया जा रहा है, वह जीर्णशीर्ण मनोवृत्ति का परिचायक है, जिसे समाप्त करने के लिए आर्यसमाज का जन्म हुआ था। यह प्रवृत्ति है—अपने को बचाने के लिए संकुचित करते जाना। इसी मनोवृत्ति के कारण भारतीयों ने अपने ही भाइयों को मुसलमान बनाया, ईसाई बनाया, अछूत बनाया और सारे प्रयत्न का एक ही उद्देश्य था अपने अस्तित्व को सुरक्षित करना, स्वयं को बचाना। इसी का परिणाम आज हमारे सामने विनाश के रूप में है। स्वामी दयानन्द ने इसी प्रवृत्ति का विरोध किया। उसे समाप्त करने का प्रयत्न किया। इसके लिए आर्यसमाज की स्थापना की उसी समाज को जीने के लिए विनाशकारी प्रवृत्ति को अपनाना पड़े इससे अधिक खेद-जनक बात क्या हो सकती है? आर्यसमाज का लक्ष्य राष्ट्रीयता की दृष्टि से बृहत्तर भारत और धार्मिक दृष्टि से समस्त विश्व को आर्य बनाना है। ●

वेदवाणी

* बहु बाह्वोर्बलम् (अथर्ववेद १९६०१) मेरी भुजाओं में बहुत बल हो।
* अपीलता केशा अशोक दन्ता (अथर्ववेद १९६०१) हमारे बाल शीघ्र श्वेत न हो तथा दांत न टूटे।
* श्रद्धया सत्यमाप्यते (यजुर्वेद १९.३०) श्रद्धा में सत्य की प्राप्ति होती हे।
* सुशेवो राजा (ऋग्वेद ३.५९.४) जनता की सुसेवा करने वाले को राजा कहते है।
* सत्येनोत्तभिता भूमि (ऋग्वेद १०.८५.१) सत्य से भूमि टिकी हुई है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के मुसलमान भारत में १९४७ से पूर्व की स्थिति लाना चाहते हैं

—वि० स० विनोद

१९४७ की १५ अगस्त की अर्द्ध रात्रि पहुंचने तक इस देश का प्रत्येक मुस्लिम लीगी कांग्रेस मैन बन गया। सिर पर जिन्नाह कैप की जगह गांधी टोपी पहुंच गई। ये कांग्रेसी बने जरूर लेकिन इनकी जहनियत बिल्कुल नहीं बदली। ३५ साल के बाद भी भारत के इन मुस्लिम नेताओं का वही रवैया है। जो १९४७ से पूर्व था।

देश का आम मुसलमान शांति से रहना चाहता है, जिसका प्रमाण यह है कि देहात में मुस्लिम किसान व मजदूर अपने पड़ौसी हिन्दू के साथ भाईचारे से रहते हैं। केवल कुछ पढ़े-लिखे मुस्लिम नेता तथा मुल्ला इन सीधे-सादे मुसलमानों को भड़काते रहते हैं कि इनकी नेतागिरी बरकरार रहे।

होना तो यह चाहिए था कि स्वतन्त्र होने के बाद मुस्लिम लीग पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता, लेकिन हुआ यह कि केरल में सत्ता प्राप्त करने के लिए कांग्रेस ने मुस्लिम लीग से समझौता किया और चुनाव के बाद मंत्री मंडल में मुस्लिम लीग को ३ स्थान दिये। उनके कुल ९ विधायक मुस्लिम लीग के टिकट पर चुनकर आये थे।

स्वतन्त्रता के बाद मुस्लिम लीग के साथ लगभग एक दर्जन मुस्लिम संस्थायें इस देश में खड़ी हो गईं। एक ने दूसरे को फिरकापरस्ती में पीछे छोड़ना चाहा, जिसका नतीजा यह है कि देश में कहीं न कहीं दंगे-फसाद होते रहते हैं।

५ नवम्बर को ४५ मुस्लिम सांसदों ने प्रधानमंत्री को एक ज्ञापन दिया जिसमें लगभग वही प्रश्न उठाये गये हैं जैसे १९४७ से पूर्व मुसलमान उठाते थे।

ये मुस्लिम नेता समझ रहे हैं कि सैक्युलरिज्म की आड़ में उन्हें यह अधिकार मिला हुआ है कि इस देश की साम्प्रदायिक एकता को भंग करते रहें और दोष हिंदुओं पर डालते रहे।

ये मुस्लिम नेता दंगों की जिम्मेदारी हिन्दुओं व पुलिस पर डालते हैं, जबकि हथियार, बम, हथगोले, तेजाब के भंडार इनके घरों से निकलते हैं। पुलिस इनकी हरकतों को पकड़ती है, तो पुलिस को बदनाम किया जाता है।

कई एक मुस्लिम नेताओं की मांग है कि मस्जिद के सामने बाजे के साथ हिन्दू जलूस न निकालें। मोटरों की पोंपों होती रहे, उससे उनकी नमाज में दखल नहीं पड़ता। दखल पड़ता है केवल हिन्दुओं के बाजे से।

एक मांग है उर्दू को आम लोगों पर थोपना। यही मांग देश के विभाजन से पूर्व थी कि उर्दू मुसलमानों की भाषा है। मुसलमान अन्य भाषाओं को अपनाने को तैयार नहीं होते थे। इस उर्दू भाषा ने भारत का विभाजन किया। अब फिर उर्दू

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का राग अलापा जा रहा है। उर्दू इस देश की भाषाओं में से एक है। जो चाहे उसे पढ़े। उसके लिए हर सुविधा है। लेकिन उसके पढ़ने वाले ही नहीं हैं। उत्तरप्रदेश सरकार ने उर्दू में गजट छापा। एक भी ग्राहक उर्दू गजट के लिए नहीं आया। एक व्यक्ति ने उर्दू गजट का चंदा सरकारी प्रेस को भेजा था। बाद में लिख भेजा कि मुझे भी हिन्दी का गजट ही दिया जाये। यह तो है उर्दू के लिए प्रेम और चिल्लाते हैं कि उर्दू को पीछे डाला जा रहा है।

एक अन्य मांग है कि पुलिस व अन्य सरकारी सेवाओं में मुसलमानों को संरक्षण दिया जाये। यही मांग देश के विभाजन से पूर्व होती थी और इसी मांग को लेकर देश के टुकड़े कर दिये, पाकिस्तान बनाया, जहां केवल मुसलमान को ही सरकारी नौकरी मिलती है। पाकिस्तान में हिन्दू को कहीं चपरासी भी नहीं रखा जाता। वहां भी मुसलमान शत प्रतिशत नौकरियां लें और भारत में भी बराबर के हिस्सेदार बनें, यह कैसे हो सकता है।

ये मुस्लिम संस्थायें किसी भी पार्टी की हों, सबका एक ही उद्देश्य है कि भारत में पुनः मुसलमानों का प्रभुत्व कायम हो और इसी उद्देश्य के लिए ये जी-जान से प्रयत्नशील हैं।

उनकी एक मांग यह है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ विश्व हिन्दू परिषद् पर पाबंदी लगाई जाये। मुस्लिम लीग, जमायते इस्लामी तुलबा, मुस्लिम मजलिस, मुस्लिम मशावरत व अन्य ऐसी ही मुस्लिम संस्थायें रात-दिन अलगाव का प्रचार करती हैं। उनके विरुद्ध पाबंदी की माँग नहीं की गई।

इन्हें यह समझ लेना चाहिये कि कुछ हिन्दू संगठनों पर प्रहार हिन्दुओं पर प्रहार है। ये लोग कुछ हिन्दू संगठनों का नाम लेकर वास्तव में हिन्दुओं पर प्रहार करते हैं। हिन्दू इस देश का ८२ प्रतिशत है। उसके साम्प्रदायिक होने का प्रश्न ही नहीं। हिन्दू इस देश का राष्ट्रीय (नेशनल) है। जब ये मुस्लिम संस्थायें इस असलियत को समझ लेंगी तो इनके हृदय में हिन्दुओं के खिलाफ जो घृणा हिलोरें मारती है, वह अपने आप शांत हो जायेगी।

उर्दू के मुस्लिम अखबार सबसे ज्यादा झूठे व भड़काने वाले समाचार छापते हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास है कि उनके विरुद्ध सरकार कोई कार्रवाई नहीं करेगी।

ये मुस्लिम नेता देश में शांति आने नहीं देते। इनका एक मात्र उद्देश्य यह है कि भारत दुनिया में (विशेषतः अरब देशों में) बदनाम हो, क्योंकि अरब देशों में आजकल भारत बहुत लोकप्रिय है। ये मुस्लिम संस्थायें पाकिस्तान के एजेन्ट के रूप में भारत को बदनाम करने में सहायक होती हैं। मुस्लिम संस्थायें इस षड्यन्त्र में शामिल हैं कि देश में हिन्दुओं का बहुमत समाप्त कर दिया जाये। हरिजनों का धर्मान्तरण कर लिया जाये। इनके सपने कभी भी सफल न हो सकेंगे।

संघ और विश्व हिन्दू परिषद् देश के टुकड़े करना नहीं चाहते। इसलिये उन पर प्रतिबन्ध लगे और जमायते इस्लामी तथा मुस्लिम लीग, जो देश के पुनः टुकड़े करना चाहते हैं उन पर कोई रोक न हो, यह मांग है इन मुस्लिम नेताओं की।

देश का हिन्दू इनके इरादे पूरे न होने देगा यह इन्हें समझ लेना चाहिये। हिन्दू ने कभी किसी अन्य धर्म से घृणा नहीं की और न घृणा का प्रचार किया है। यह हिन्दू परम्पराओं के विरुद्ध है। मुसलमान कभी हिन्दू ही थे। ये फिर हिन्दू समाज में आ सकते हैं ऐसा हिन्दू समझता है। फिर वह किसी से घृणा क्यों करेगा?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'मैंने आपका कर्ज चुका दिया है'

विलियम स्कॉट पहरा दे रहा था। वह सेना में एक सिपाही था। रात का समय था। दिन में भी वह अपनी ड्यूटी पर था। शाम के वक्त अचानक उसके सिपाही दोस्त की तबीयत खराब हो गयी थी। उसने उसे आराम करने के लिए भेज दिया था और उसकी जगह खुद पहरे पर तैनात हो गया था। वह बुरी तरह थक गया था। रह-रहकर उसकी आंखें झपक जाती थीं। ज्यों ही आंखें झपकने को होतीं, वह सिर झटककर फिर सावधान की मुद्रा में खड़ा हो जाता था।

आखिर वह अपने को कब तक रोक पाता। उसकी आंखें फिर बंद हुईं और खड़े-खड़े ही उसे नींद आ गयी। तभी सेना का उच्च अधिकारी वहां आ गया। उसने विलियम स्कॉट को रंगे हाथों पकड़ लिया। स्कॉट ने ज्यों ही आंखें खोलीं, अपने सामने खड़े अधिकारी को देखकर सिर से पांव तक कांप उठा।

स्कॉट को गिरफ्तार कर लिया गया। न्यायालय ने उसे प्राणदण्ड की सजा दी।

उन्हीं दिनों राष्ट्रपति लिंकन उसी शहर में आए हुए थे। वे विलियम स्कॉट से जिज्ञासावश मिलने पहुंचे।

राष्ट्रपति को सामने खड़ा देखकर स्कॉट उनके पैरों से लिपट गया।

राष्ट्रपति लिंकन ने कहा—'मैं तुम्हें इस सजा से छुटकारा दिला सकता हूं, मगर तुम्हें मेरा कर्ज चुकाना होगा।'

'मैं अपनी जान की खातिर अपना सब कुछ बेचकर पाँच-छह सौ डॉलर की राशि भेंट कर सकता हूं।' स्कॉट ने कहा।

'मगर मेरी मांग इससे बहुत ज्यादा है।' राष्ट्रपति ने दृढ़ता से कहा।

राष्ट्रपति ने समझाते हुए कहा—'अगर विलियम स्कॉट जीवन भर ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन करता रहा तो मैं समझूंगा कि स्कॉट ने मेरा कर्ज चुका दिया।'

जब स्कॉट ने राष्ट्रपति को विश्वास दिलाया तो उन्होंने उसे क्षमादान का आदेश भिजवा दिया। स्कॉट को मुक्ति मिल गयी।

कुछ ही दिनों के बाद पुनः युद्ध आरम्भ हो गया। विलियम स्कॉट वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हो गया। वीरगति पाने के कुछ ही क्षण पूर्व उसने राष्ट्रपति लिंकन को एक संदेश भिजवाया, जिसमें लिखा था—'मैंने आपका कर्ज चुका दिया है।'

स्कॉट की वीरता पर राष्ट्रपति लिंकन भाव-विभोर हो उठे और उनकी आंखों से हर्षमिश्रित आंसू टपक पड़े।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप भी सौ वर्ष जी सकते हैं

—हंस

एक वैदिक प्रार्थना है कि 'हम शताधिक वर्षों तक अपने कर्त्तव्यों का पालन करें।' प्राचीन काल में, जब जीवन में अधिक तनाव नहीं था, और पौष्टिक भोजन आसानी से उपलब्ध हो जाता था, लोग सामान्यतः सौ वर्षों तक जीते थे। आज सौ वर्षों की आयु पाने के लिए योजनावद्ध तरीके से जीने की आवश्यकता है। ये योजनाबद्ध और अनुभूत तरीके कौन से हैं, इन्हीं पर इस लेख में विचार किया गया है।

हाल में जब प्रख्यात जर्मन अभिनेत्री लिल दागोवर का ९२ वर्ष की आयु में निधन हुआ, तो उसके कई परिचितों को बड़ा आश्चर्य हुआ। आश्चर्य इस बात का था कि वे उन्हें सिर्फ ७५-८० वर्ष की ही मानते थे। निधन के समय वे पूरी तरह स्वस्थ और नीरोग थीं तथा अपनी देख-भाल स्वयं कर सकती थीं। अपने उत्तम स्वास्थ्य के कारण ही वे अपनी आयु से कम की नजर आती थीं। 'आपकी दीर्घायु का रहस्य क्या है?' इस प्रश्न का उत्तर देते हुए श्रीमती दागोवर ने, अपने निधन से कुछ समय पूर्व, एक साक्षात्कार में कहा था—'पहले मैं मांस-सेवन की बड़ी शौकीन थी। लेकिन एक दिन एक ऐसी घटना घटी कि मुझे म स-सेवन से अरुचि हो गयी। हुआ यह कि मेरे डाइनिंग रूम में रखे एक मछली-घर में एक सुन्दर मछली को देखकर एक मेहमान ने कहा, 'मुझे यह मछली खाने में बड़ी स्वादिष्ट लगती है।' फौरन उनकी इच्छा का पालन हो गया और मछली को तल कर उनके सामने पेश कर दिया गया। यह रंगबिरंगी मछली मुझे भी बहुत प्रिय थी, इसलिए जब मैंने उसकी मृत देह को खाने की मेज पर देखा, तो घोर वितृष्णा से मेरा मन भर आया। उस क्षण से मुझे मांस-सेवन से अरुचि हो गयी और मैं पूरी तरह शाकाहारी बन गयी। शाकाहार से मुझे न केवल दीर्घायु की प्राप्ति हुई, मेरे अनेक पुराने रोग भी गायब हो गये। मेरी दीर्घायु का रहस्य शाकाहार ही है।'

रूस के अजेरबाइजन नामक स्थान की ११७-वर्षीया जुबेदा शिदेवा इस आयु में भी कालीन बुनती हैं। पिछले सौ वर्षों से वे बिना नागा यही काम करती चली आरही हैं और मानती हैं कि नियमित रूप से कार्य करते रहने से ही वे आयु के सौ वर्ष पार कर सकी हैं। मिताहारी होने के अलावा वे बड़ा सादा जीवन बिताती हैं।

इसी स्थान में रहने वाले शेरअली मुसलीमोव को १९७४ में १६७ वर्ष की आयु में विश्व का सबसे अधिक आयु का व्यक्ति होने का श्रेय प्राप्त था। वह भी जुबेदा की भांति मिताहारी थे और बहुत सादा और चितारहित जीवन बिताने के अलावा काफी विश्राम भी करते थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्व की सबसे अधिक आयु की महिला (१९७५ में) रूस के जार्जिया राज्य में रहने वाली फॉफलाव-सेरिया थी, जिनकी आयु तब १३० वर्ष थी। उनके पुत्र की आयु ८२ वर्ष थी। उनकी दीर्घायु का रहस्य भी खूब व्यस्त रहना और खूब विश्राम करना है।

एक सरकारी आंकड़े के अनुसार, हमारे देश में ८० और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की संख्या दस लाख के अन्दर है। सबसे अधिक २०,००० शतवर्षीय रूस में हैं।

आधुनिक भारत के नामी शतवर्षियों में से हैं—उस्ताद अलाउद्दीन खान (जिनका निधन १९७२ में ११४ वर्ष की आयु में हुआ), महर्षि कर्वे और श्री विश्वेश्वरैया। कर्नाटक में ऐसी दो महिलाएं हैं, जो सौ से अधिक वर्ष की आयु की होने पर भी काफी सक्रिय और स्वस्थ हैं। राजस्थान में भी तीन पुरुष हैं, जो सौ वर्ष से अधिक की आयु में भी काफी उत्साही और सक्रिय हैं। वैसे हमारे देश में जहां के निवासियों की औसत जीवन-संभावना ५० के आसपास ही है, ९० वर्ष की आयु तक जीने वाले व्यक्ति भी एक अजूबा बन जाते हैं। किन्तु विश्व के तीन क्षेत्र ऐसे हैं, जहां के लोग विश्व के किसी भी क्षेत्र के निवासियों की अपेक्षा अधिक जीते हैं और जहां शतवर्षियों की संख्या भी सबसे अधिक है। ये तीन क्षेत्र हैं—(१) उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान का हुंजा प्रदेश, (२) सोवियत जार्जिया का अबरवाजिया प्रदेश और (३) एण्डी प्रदेश का विल्काबम्बा गांव।

विश्व के सबसे अधिक विकसित देश अमरीका में हर एक लाख अमरीकियों के पीछे ३ शतवर्षियों का औसत है और कुल दस प्रतिशत अमरीकी ही ६५ वर्ष की जीवन-रेखा पार कर पाते हैं। लेकिन ८१९ जनसंख्या वाले विल्काबम्बा गांव में शतवर्षीय व्यक्ति मौजूद हैं। एक रोचक बात यह है कि इस सारे गांव में कोई व्यक्ति न मोटा है, न कुपोषण के कारण पतला या बेढंगे शरीर वाला। इसका कारण है वह संतुलित आहार जो यहां के लोग लेते हैं।

४०,००० जनसंख्या वाले हुंजा प्रदेश में ५५ शतवर्षीय हैं। शेष सभी लोग स्वस्थ और नीरोग हैं। उनके स्वास्थ्य का रहस्य है—संतुलित आहार, जिसमें फलों और प्रोटीन-प्रचुर खाद्य पदार्थों की बहुतायत होती है। एक व्यक्ति प्रतिदिन औसतन १८२५ कैलोरी वाला भोजन लेता है।

अबरवाजिया प्रदेश में विश्व की सबसे अधिक आयु वाली महिला फॉफ लाव-सेरिया तो रहती ही है, १ ००वर्ष की आयु में 'श्रमवीर' की उपाधि पाने वाले तुमुर ताबरिया और १८४ वर्ष की आयु में आधे मील का सफ़र तय करके प्रतिदिन ठंडे पानी के सोते में स्नान करने वाले माखती तार्खिल भी रहते हैं। इसी प्रदेश में रहते थे—१६७-वर्षीय शेरअली मुसलीमोव। ५००० आबादी वाले इस बिखरे-छितरे क्षेत्र में २४ से अधिक शतवर्षीय हैं।

विश्वविख्यात जरा चिकित्सक डॉक्टर जोसेफ़ राखोवि का कहना है—'हर सामान्य व्यक्ति को सौ वर्ष तक जीना चाहिये। यदि वह नहीं जीता है तो दोष उसकी गलत दिनचर्या का है। तीन मुख्य कारण हैं, जो लोगों को सौ वर्षों तक नहीं जीने देते। (१) अति भोजन करना। (२) व्यायाम न करना। (घूमना और 'जौगिंग' करना भी व्यायाम हैं। (३) विश्राम न करना। आज की तनावपूर्ण जिन्दगी से मुक्ति पाते रहने के लिए कुछ समय तक शिथिल हो जाना निहायत जरूरी है,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
ताकि हमारा तन-मन नित-नवीन और नित-ताजा होता रहे। थकावट और तनाव व्यक्ति को समय से पूर्व ही बूढ़ा बना देते हैं।

डॉक्टर राखोवि का कहना है कि विटामिन की गोलियों के स्थान पर ऐसा प्राकृतिक आहार, जिसमें प्राकृतिक विटामिन होते हैं, लेना चाहिए, क्योंकि ऐसा आहार शरीर को स्वस्थ, चुस्त और तरोताजा रखता है। शहद, दूध, दही, फल, हरी सब्जियां आहार के अनिवार्य अंग होने चाहिए। मधुमेह आदमी को बहुत जल्दी बुढ़ापे के गड्ढे में धकेल देता है।

बुढ़ापे को किसी भी उपाय से न रोका जा सकता है, न टाला जा सकता है; लेकिन उसे उपयोगी और आनन्ददायक अवश्य बनाया जा सकता है। वृद्धावस्था में शरीर पहले की भांति चुस्त और सक्षम भले ही न रहे, लेकिन मन पहले की ही भांति सक्रिय और दक्ष रहता है।

डॉक्टर राधाकृष्णन् ६४ वर्ष की आयु में गीता का और ७२ वर्ष की आयु में ब्रह्म-सूत्र का अत्युत्कृष्ट अनुवाद किया था। उस्ताद अलाउद्दीन खान ७५ वर्ष से अधिक आयु में भी संगीत-कार्यक्रमों में भाग लेते थे। ९० वर्ष की आयु तक जीने वाले चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, एम० सी० सेतलवाड़ और पेरियार रामास्वामी नायकर जीवन के अन्त तक सक्रिय रहे और उनकी कार्यक्षमता युवकों को लजाने वाली थी। आज भी श्री मोरारजी देसाई इसी कारण ८६ से भी अधिक की आयु में मानसिक और शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ हैं कि वे सदा रचनात्मक ढंग से व्यस्त रहते हैं और नकारात्मक विचारों को अपने मन में नहीं आने देते।

आलस्य, ईर्ष्या, चिड़चिड़ापन, स्वार्थपरता, कृपणता और खिन्नता बुढ़ापे को दुःखी और असह्य बना देते हैं।

आशावाद बुढ़ापे को सुखी और हंसी-खुशी से भरपूर बना सकता है। बूढ़े व्यक्तियों को एक अंग्रेज कवि की इन पंक्तियों को अपना आदर्श-वाक्य बना लेना चाहिए—

'Grow old along with me. the best is yet to be.

—मेरे साथ वृद्धावस्था की ओर बढ़िये। जीवन के सर्वोत्तम क्षण आने को हैं।

वृद्धावस्था के बारे में सोवियत रूस के वैज्ञानिकों और चिकित्सकों के अनेक दल कई वर्षों से शोधरत हैं। इन शोधों के जो आश्चर्यजनक परिणाम अभी तक सामने आये हैं, वे वृद्धावस्था को सुखद और उपयोगी बनाने में बड़े सहायक सिद्ध होंगे और उनके सहारे आदमी शतायु हो सकेगा।

० गांवों की खुली और साफ़ आबो-हवा में रहने वाले लोग शहरों के प्रदूषित वातावरण में जीने वाले लोगों से ज्यादा जीते हैं।

० कारखानों और कार्यालयों में काम करने वाले लोगों की अपेक्षा खुले खेतों पर मेहनत करने वाले किसान ज्यादा जीते हैं और उनकी औसत आयु ८० वर्ष होती है। उनके दीर्घायु होने का एक और कारण होता है कि उनका आहार बढ़िया और मसालेदार नहीं होता—सादा मगर पौष्टिक होता है।

० जो पेंशनर रिटायर होने के बाद पूरी तरह निष्क्रिय हो जाते हैं वे जल्दी मर जाते हैं।

शतायु बनने के लिए संकल्पवान् होना परमावश्यक है। आइये, संकल्प करें। हम शताधिक वर्षों तक अपने कर्त्तव्यों का पालन करेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शहद : अद्वितीय दवा

विज्ञान की विस्तीर्ण किन्तु गहरी दृष्टि जब शहद पर गई तब अनेक तथ्य प्रकाश में आये। अमरीकी वैज्ञानिक डा० ए० वी० स्टुअर्टवेन्ट ने शहद के गुणों और क्षमता पर अनुसन्धान किया। उन्होंने बताया कि पुराने श्वास रोग और पेचिश में पाये जाने वाले रोगाणु शहद में रखने पर ४८ घण्टों में मर गए। जब उन्होंने टाइफाइड के रोगाणु रखे तो १२० घंटे बाद नष्ट हो गए। इसका कारण उन्होंने शहद की इस क्षमता को ही ठहराया जिसके कारण शहद आस-पास के परिवेश से नमी को शोषित कर लेता है।

सुजाक रोग के रोगी यदि शहद का प्रयोग करें तो उनको लाभ हो सकता है, क्योंकि शहद नमी को सोख लगा। फलत: रोगाणु खत्म हो जायेंगे।

कोलोरेडो विश्वविद्यालय में जीवाणु विभाग के अध्यक्ष डा सेंकर ने भी शहद का रोगों के कीटाणुओं पर प्रयोग कर यही निष्कर्ष निकाला कि शहद में अनेक बीमारियों के रोगाणुओं को मारने की शक्ति होती है।

चर्म रोगों में उपयोग

कई चर्म रोगों में शहद लाभदायक सिद्ध हुआ है। शहद में पानी मिलाकर पीने से अनेक चर्म रोगों जैसे खुजली, शरीर के हल्के दागों तथा फोड़े-फुंसी, मुहासों पर इसका प्रयोग अनुकूल रहा है। जलने की जगह शहद लगाने से जलन खत्म होकर आराम मिलता है। वियना के वैज्ञानिक डा० जियास ने प्रयोगों के उपरान्त इस तथ्य को प्रमाणित किया है।

उत्तम पोषाहार

कब्ज दूर करने के लिए शहद को पानी में मिलाकर पीने के लिए दिया जा सकता है। दवाई के रूप में ग्लूकोज के बाद शहद एक ऐसी औषधि है जो शरीर में शीघ्र अवशोषित होती है। शहद के उपयोग से शरीर में शर्करा नहीं बढ़ती। साथ ही अगर कार्बोहाइड्रट जिगर की मधुराग्रहण क्षमता से अधिक खा भी लिया जाय तो अवशेष भाग चिकनाई में बदलकर उसी रूप में एकत्रित होता रहता है।

बच्चों के लिए वरदान

बालकों को पानी में दो या तीन चम्मच शहद मिलाकर देना लाभकर होता है। शहद-पानी से गरारे करने पर गले और मुंह की कई बीमारियों से छुटकारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाया जा सकता है। अगर आप चाहते हैं कि बच्चा नींद में पेशाब नहीं करे, उसके दांत अच्छे रहें, पेट की कोई बीमारी उसे न सताए तो उसे शहद अवश्य दें। इससे बच्चे का वज़न भी पर्याप्त रूप से बढ़ाया जा सकता है।

शहद द्वारा चिकित्सा

न्यूमोनिया का एक रोगी जब डाक्टर टॉमस के पास पहुंचा तो उन्होंने शहद के द्वारा उसका इलाज प्रारंभ करते हुए प्रतिदिन एक चम्मच शहद देना प्रारंभ किया और इसके बाद दो-तीन चम्मच। फिर अधिकाधिक बढ़ाते-बढ़ाते एक किलो शहद देने लग गए। इस शहद चिकित्सा द्वारा रोगी क्रमशः सबल होकर अन्त में स्वस्थ हो गया।

खाद्य वैज्ञानिकों के मतानुसार शहद पाचन संस्थान की बीमारियों को दूर करता है। 'लेसेन्ट' नामक पत्रिका में डाक्टर जी० डब्ल्यू एन. थामस ने शहद को रोगी की आन्तरिक ताकत को बढ़ाने और हृदय की गति को तेज करने वाला बताया है। साथ ही उन्होंने शहद को हृदय की मांस पेशियों के लिए बल प्रदाता भी बताया है। इस प्रकार शहद अनेक रोगों की उत्तम दवा होने के साथ ही सर्वोत्तम पोषाहार (टॉनिक) भी है।

पश्चिमी बंगाल में हिन्दुत्व की लहर

अंडाल में हिन्दू सम्मेलन : बंगालियों में अपूर्व उत्साह

अंडाल (बर्दवान) ३० दिसम्बर बंगाल की क्रांतिकारी जनता को आगे बढ़कर देश के साप्रदायिक तत्वों के विरुद्ध युद्ध घोषणा करनी चाहिए, इन शब्दों के साथ महात्मा वेदभिक्षु: ने उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि सिर देंगे पर भारत मां का विघटन नहीं होने देंगे।

बंगाली जनता ने मन्त्र मुग्ध होकर महात्मा जी की गुरू गम्भीर गर्जना को सुना और संकल्प लिया कि देशद्रोही तत्वों को नष्ट करने में वे उनके प्रत्येक आदेश का पालन करेंगे।

सम्मेलन का आयोजन हिन्दु रक्षा समिति के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने विशेष रूप से श्री जयनारायण चौबे व उनके सहयोगी श्री बहादुर सिंह ने किया। दुर्गापुर, रानीगंज, आसनसोल आदि स्थानों के प्रतिनिधियों ने भी सम्मेलन में भारी संख्या में भाग लिया।

आशा की जा रही है कि बंगाल की उर्वेश भूमि में शीघ्र ही हिन्दू रक्षा समितियों का जाल बिछ जाएगा।

सम्मेलन ने एक प्रस्ताव द्वारा दयानन्द संस्थान दिल्ली की अध्यक्ष पंडिता रानी पर मुकदमे चलाए जाने की कठोर शब्दों में निन्दा की।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीय दल अकालियों की मांगों का विरोध करें

—वीरेन्द्र, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं
संपादक 'वीर प्रताप', जालन्धर

मुस्लिम लीग की तरह अकाली दल की भी मांगें बढ़ती ही जा रही है। अब समय आ गया है कि सरकार टकराव का खतरा मोल लेकर भी इन मांगों का प्रतिरोध करे—सम्पादक)

पंजाब की स्थिरता और शांति के लिए चुनौती बन रही अकाली नेताओं की मांगें कोई नई नहीं हैं। इसलिए अकाली आन्दोलन की वास्तविकता को समझने के लिए इसकी ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि का अवलोकन आवश्यक है।

इस समस्या के सूत्रधार मा० तारासिंह थे। सन् १९४७ में देश के विभाजन के समय उन्होंने नारा लगाया कि हिन्दुओं को हिन्दुस्तान और मुसलमानों को पाकिस्तान मिल गया, लेकिन सिखों को क्या मिला ? सिख नेताओं द्वारा अंग्रजों के साथ स्वतंत्र सिख राज्य की बातचीत भी चली लेकिन मुहम्मद अली जिन्ना सिखों को पाकिस्तान के साथ रखना चाहते थे। उनके स्वतंत्र अस्तात्व के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए मुस्लिम लीग और कांग्रस के दवाव के कारण यह बात न बन सकी। किन्तु स्वतंत्रता के बाद स्वतंत्र भारत में फिर यह नारा उभारना शुरू किया गया कि सिख स्वतंत्र राष्ट्र हैं। इसलिए मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्रवाद की तरह उन्हें भी स्वतंत्र राज्य मिलना चाहिए।

दर असल सिख नित्य नियमित रूप से अपनी अरदास के समय "राज करेगा खालसा, आकी रहे न कोय···" के नारे द्वारा स्वतंत्र राज्य की इस आकांक्षा को बल प्रदान करते रहते हैं।

प्रारम्भ में अकालियों की केवल यह मांग थी कि पंजाबी भाषा को राजनैतिक दर्जा किया जाये। हिन्दुओं का कहना था कि पंजाबी केवल बोली है, भाषा नहीं। हमारे सारे धर्म-ग्रंथ हिन्दी में हैं। अतः पंजाबी को सरकारी भाषा का दर्जा नहीं दिया जाना चाहिए। इसी बात पर संघर्ष हुआ तो तत्कालीन मुख्यमंत्री स्वर्गीय भीमसेन सच्चर के नेतृत्व में सन् १९४९ में सच्चर फार्मूला तैयार किया गया, जिसके अन्तर्गत पंजाब की भाषा समस्या के हल के लिए पंजाबी और हिन्दी प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में दोनों भाषाओं को वरीयता के आधार पर जारी रखने का निश्चय किया गया। लेकिन ३-४ साल बाद फिर से सिखों की आकांक्षाएं उभर उठी और मा० तारासिंह ने सन् १९५६ में नेहरूजी से क्षेत्रीय फार्मूला समझौता करके पंजाब को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाबी भाषी क्षेत्र और हिन्दी भाषी क्षेत्रों में बांट दिया। लेकिन सिख राज्य की मूल आकांक्षा पालने वाले अकाली सन्तुष्ट न हो सके। ३-४ साल बाद उन्होंने क्षेत्रीय फार्मूले को रद्द कर पंजाबी सूबे की मांग शुरू कर दी, जबकि उन्होंने क्षेत्रीय फार्मूला समझौता स्वीकार करते समय स्पष्ट रूप से लिखित आश्वासन दिया था कि अब हमारी और कोई मांगें नहीं होंगी और पंजाब में कोई गड़बड़ नहीं होगी। सन् १९६४ नेहरूजी के देहावसान के बाद सन् १९६६ में जब श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधानमंत्री बनीं तो एक नवम्बर सन् १९६६ को पंजाब का विभाजन हो गया कि अकालियों की अन्तिम मांग पूरी हो गई है और पंजाब में शांति और स्थिरता रहेगी। लेकिन सन् १९७७ में एक नई माँग उभर आई और वह थी पंजाब के लिए अधिक स्वायत्त्रता और अधिकारों की मांग। इस प्रकार अकाली आन्दोलन के इतिहास से स्पष्ट है कि सन् १९४९ में सच्चर फार्मूला, सन् १९५६ में क्षेत्रीय फार्मूला और सन् १९६६ में पंजाबी सूबा स्वीकार करके भी वे संतुष्ट न हो सके बल्कि मुस्लिम लीग की तरह पाकिस्तान की अन्तिम मांग के समान ही खालिस्तान के लिए एक पग-पग आगे बढ़ रहे हैं।

आनन्दपुर साहब प्रस्ताव

उनका आनन्दपुर साहब का समूचा प्रस्ताव भी राष्ट्रहितो के प्रतिकूल है। इस प्रस्ताव में मांग की गई है कि केन्द्र के पास रक्षा, वित्त, संचार, रेलवे और विदेशनीति रहें। शेष मंत्रालय राज्य के पास रहें। इस प्रस्ताव में यह भी निहित है कि जिन देशों में सिख तीर्थ हैं, तत्सम्बन्धों में विदेशी राज्य सरकार से सलाह ली जाय। इस प्रकार केन्द्र को कमजोर करने वाले इस प्रस्ताव की स्वीकृति से राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा हो सकता है और प्रकार की मांगें फिर अन्य राज्यों से भी उठ सकती हैं।

दरअसल इन पृथक्तावादी मांगों के पीछे कुछ गिने-चुने उग्रवादियों का ही हाथ है। इस आन्दोलन को सिख समुदाय के बहुमत का समर्थन प्राप्त नहीं। खेद की बात यह है कि बड़े नेता भी इस मामले में कोई स्पष्ट निर्णय नहीं ले पा रहे। अमृतसर को 'पवित्र नगर' घोषित करने जैसी मांगों के पीछे यदि धर्मभावना ही थी तो यह आश्चर्य है कि सौ वर्ष पूव महाराजा रणजीत सिंह के शासन में भी कभी सिखों ने इसे पवित्र नगर क्यों नहीं घोषित किया ? अकाली दल पाँच बार पंजाब में सत्ता में आया; अकालियों ने तब भी इसे पवित्र नगर घोषित नहीं किया। क्या सत्ता से बाहर होने पर ही उन्हें इस बात का अहसास हो सका ?

भेदभाव की शिकायत

अकाली कहते हैं कि सिखों के साथ भेदभाव और अन्याय हो रहा है—जबकि आंकड़े इसके विपरीत बोलते हैं। पंजाब पुलिस में ८० प्रतिशत सिख हैं। सरकारी नौकरियों में भी उनका प्रतिशत अन्य वर्गों से अधिक है। सिख ही अधिकतम मंत्री हैं। देश के राष्ट्रपति भी इसी समुदाय से हैं। रिजर्व बैंक के गवर्नर भी सिख ही हैं। वास्तविकता तो यह है कि पंजाब में अन्य समुदायों की ही उपेक्षा हो रही है। वहां अल्पसंख्यक ही उपेक्षित हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सरकार से अपेक्षा

केन्द्र और राज्य सरकार से यह अपेक्षा है कि वे अकालियों के प्रति स्पष्ट, सुनिश्चित और कड़ा रुख अपनाएं अन्ततोगत्वा अकालियों की मांगों का कहीं अन्त नहीं है। उनका अन्तिम लक्ष्य तो खालिस्तान है, अतः पृथकता के इन बढ़ते कदमों को प्रोत्साहन देना उचित नहीं। इस धर्मनिरपेक्ष देश में सर्वत्र अल्पसंख्यकों के हितों की बात की जाती है। पंजाब और कश्मीर ही दो ऐसे राज्य हैं, जहां हिन्दू अल्पसंख्यक हैं। अतः यहां उनके हितों की रक्षा सरकार का दायित्व है। इसलिए ऐसी किसी भी वार्ता में पंजाब के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाना चाहिए। पंजाब में सरकारी सेवाओं में हिन्दुओं को बहुत कम अनुपात दिया गया है। यह जानने के लिए कि पंजाब की सरकारी नौकरियों में हिन्दुओं और सिखों को किस अनुपात में संरक्षण प्राप्त है—उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया जाये। इसी प्रकार यदि अमृतसर में दरबार साहब क्षेत्र को पवित्र घोषित किया जाता है, तो हिन्दुओं के समस्त मन्दिरों और तीर्थस्थानों के क्षेत्र को भी पवित्र घोषित किया जाये।

अकाली आन्दोलन की सारी पृष्ठभूमि को देखते हुए यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय राजनैतिक दल भी इस संबंध में अपनी नीति स्पष्ट करें और राष्ट्रहित में ऐसी मांगों का सशक्त विरोध करें। कुछ राष्ट्रीय दलों ने इन मांगों का विरोध किया है। यह एक अच्छी शुरूआत है।

देश-धर्म की रक्षा के लिए

क्या आप १२५) भी नहीं भेज सकते ?

हमने पिछले डेढ़ वर्ष में हिन्दू जागरण के लिए जो कार्य किया
उससे इस्लाम व ईसाइयत के अन्तर्राष्ट्रीय
षडयन्त्रकारी बौखला उठे हैं। उनकी पूरी शक्ति
हमारे कार्यों को समाप्त करने में लगी हुई है।

सम्पूर्ण हिन्दू समाज के लिए यह एक चुनौती है

हमारे सम्पूर्ण कार्यक्रमों को चलाने में शक्ति देने के लिए धन की तुरन्त आवश्यकता है।

हमारी प्रार्थना है प्रत्येक हिन्दू अपने पास से
या
संग्रह करके शिव रात्रि पर अधिक से अधिक धन भेजें।

जो अधिक न भी भेंज सकें वे इन पंक्तियों को पढ़कर

एक रीम कागज का मूल्य
१२६) तो अवश्य भिजवाएं।

आप काम नहीं रुकने देंगे, इसी विश्वास से आप को पुकार रहा हूं—

—वेदभिक्षु
अध्यक्ष

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—आभा

सेना और जाति

"समानप्रसवात्मिका जातिः"

समान रूप से उत्पन्न होने वालों की एक जाति होती है। सब मनुष्यों की जाति एक है। हम सब एक पिता परमात्मा कीं संतान हैं।

संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों में कहा गया है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यःकृतः।
उरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

इसी आधार पर समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यः, शूद्र। ये चारों वर्ण कालान्तर में स्वयं ही विभिन्न जातियों, उपजातियों में बंट गये।

जाति, मजहब, वर्गभेद की कल्पना ने अलगाव की भावना को पनपा कर राष्ट्रीय चेतना को लुप्त ही कर दिया है।

देश की एकता, समाज की समरूपता के लिए घातक विष वृक्ष के रूप में यह "जातिवाद" देशवासियों के हृदयों में असमानता, ऊंच-नीच की भावना को निरन्तर बढ़ावा देने का साधनमात्र बन कर रह गई है।

समस्त देश के नागरिकों में जो स्वयं को शूद्र वा निम्न जाति का समझते हैं, "हीनता" को पैदा करती है जो स्वस्थ समाज के लिये घातक कोढ़ रूप में स्थिर हो चुकी है।

दुर्भाग्य कि हमारे देश में वर्तमान सेना का गठन और सैनिकों का चयन भी जातीयता के इसी आधार पर किया जाता रहा है।

जातिवाद के आधार पर सेना के गठन का दुष्परिणाम आज हमारे समक्ष उपस्थित है—अकालियों द्वारा भूतपूर्व सैनिकों के सम्मेलन का आयोजन।

क्या यह सम्मेलन देशहित का सूचक है? वर्तमान सेना के लिये क्या यह घटना लाभदायक है?

भविष्य में इसके बाद जाति रेजीमेंट्स हेतु जाति के आधार पर अपने संकीर्ण स्वार्थ सिद्धि हेतु एकजुट होकर संघर्ष करने का रास्ता ही तो बनाया है?

अपने संकीर्ण हितों के लिए कभी भी—किसी भी आपत्काल में जाट-मराठा आदि अन्य रेजीमेंट्स नेता भी अपने भूतपूर्व सैनिकों को इसी आधार पर संगठित कर सकते हैं।

ये अलगाव-पृथक्तावादी संकीर्ण स्वार्थ सिद्धि और राष्ट्र के सामने दलहित की भावना का परिचायक नहीं तो और क्या है?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश की अखंडता-एकता के लिए खतरे की सूचक नहीं तो क्या है ? अगर समय रहते इसे नहीं रोका गया तो इस नासूर का अन्ततः भयावह परिणाम देश को एक दिन गृहयुद्ध के कगार पर ला खड़ा करेगा।

इसका एकमात्र उपाय है जातिवाद जैसे दकियानूसी आधार पर न कर सेना का गठन वैज्ञानिक आधार पर दक्षता, योग्यता और श्रेष्ठता के आधार पर किया जाये। समाज के साथ-साथ सेना में भी जातीय आधार को तुरंत समाप्त करने के उपाय किये जाने चाहिये।

सैनिकों के लिए विशेष

सैनिक चाहे वे सेवारत हों या सेवा निवृत्त—उनका केवल एक क्षात्र धर्म होता है गीता के अनुसार—

"स्वधर्ममपि चावेक्ष्य"

उन्हें दलीय राजनीति और आन्दोलनों से ऊपर राष्ट्रीय हित, विकास और एकता के लिए निरंतर प्रयत्नशील होना चाहिये। उनके लिए पहले देश है—बाद में कुछ और!

समय की मांग है कि सेना-पुलिस को राष्ट्रीय आधार पर गठित किया जाए और सब में एक ही भाव हो कि हम भारतीय हैं—भारत मां के बेटे, मां के रक्षक और कोई भी भाव कभी भी गंभीर संकट बन प्रकट हो सकते हैं ?

देश-धर्म की रक्षा के लिए
कम से कम
या
अधिक से अधिक
जो भी संभव हो
प्रतिमाह अपना
दान अवश्य भेजिए

—राकेशरानी
अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान (ट्रस्ट)
१५९७ हरध्यान सिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत को इस्लामी देश और हिन्दुओं को अल्पसंख्यक बनाने का षड्यन्त्र

जो काम औरंगजेब और उसके साथियों ने हिन्दुओं को समाप्त करने और उनको मुसलमान बनाने का किया था, उस काम को अब पैट्रोडालर और भारत की मुस्लिम लीग और जमाते इस्लामी ने शुरू कर दिया है।

(१) इस्लामिक कल्चरल सैण्टर लन्दन के डायरेक्टर श्री वदवई ने कहा है कि भारत के हरिजनों को मुसलमान बनाकर यहां मुसलमानों की संख्या तुरन्त बीस करोड़ बनाई जा सकती है। इसलिए भारत में हरिजनों का सामूहिक धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।

(आर्य जगत् विशेषांक)

(२) मीनाक्षीपुरम में २१-२-८१ को ९००० हरिजनों को मुसलमान बनाया गया।

(३) ३-९-८१ के समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ है कि गृह राज्य मन्त्री श्री योगेन्द्र मकवाना ने बताया कि तमिलनाडु में फरवरी, १९८१ के बाद २,००० हरिजनों ने इस्लाम को अपनाया।

(४) केरल में एक मौनतुल इस्लाम एसोसिएशन संस्था ने एक लाख लोगों को मुसलमान बनाया।

(आर्य जगत् विशेषांक)

(५) भारतीय मुस्लिम लीग के अध्यक्ष श्री इब्राहिम सुलेमान सेठ ने बड़ी खुशी से कहा कि भारत में इस्लामीकरण की प्रतिक्रिया तेजी से जारी है। और ४०,००० हरिजनों को मुसलमान बनाया है। और अरब देशों से सहायता की मांग की है।

(Jeddah—Sept., 30, 18)

(६) मद्रास के एक धनवान् अब्दुल रहमान ने १७००० लोगों को मुसलमान बनाया।

(from the report of South India Ashkat Islamic Society)

(७) अरब देश के ६०-७० वर्ष की आयु के लोग भारत आकर कई-कई लड़कियों से विवाह करते हैं। यहां हैं पैट्रोडालरज।

(Hindustan Times 29-4-81)

(८) कुवैत, सऊदी अरब और दूसरे देशों से १४२८ करोड़ रु० भारत में आये।

(आर्य जगत् विशेषांक, दिल्ली १८-१०-८१)

(९) संयुक्त राष्ट्र के एक जनगणना विशेषज्ञ की रिपोर्ट के अनुसार सन् २००० में भारत की कुल जनसंख्या साधारण गति से ९० करोड़ हो जायगी, जिसमें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओं की संख्या ४० करोड़, मुसलमानों की ३५ करोड़ और ईसाइयों की १५ करोड़। इसका अर्थ है कि सन् २००० से पहले ही भारत में हिन्दू जाति अल्प-संख्यक बन जायेगी।

(आर्य जगत विशेषांक)

(१०) जामा मस्जिद दिल्ली का इमाम भी इस काम में किसी से पीछे नहीं है। खुले आम हरिजनों और गरीब हिन्दुओं को पैट्रो डालसज के जोर से मुसलमान बना रहा है।

(१) १६ हरिजनों को मुसलमान बनाया।

(Hindustan Times Dec. 6. 1981)

(२) १५ अगस्त, ८२ को जब स्वतन्त्रता दिवस पर प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी राष्ट्रीय ध्वज लहरा रही थीं, उस समय जामा मस्जिद दिल्ली का इमाम मेरठ जिले के १२ हरिजन को मुसलमान बना रहा था।

(साप्ताहिक आर्गनाईजर १५-२२-८-८२ दिल्ली)

भारत सरकार से अपील

हम सब हिन्दू भारत सरकार से अपील करते हैं कि तुरन्त मुस्लिम लीग और जमाते इस्लामी जैसी जमायतों तथा अरब लोगों की काली करतूतों की ओर ध्यान दें। यदि अब ध्यान नहीं दिया गया, तो देश का फिर विभाजन होगा, जैसा १९४७ में हुआ था। मुसलमानों को तो पाकिस्तान मिल गया। क्या भारत के हिन्दू भारत में भी शांति-पूर्वक और आराम से नहीं रह सकते। इतिहास साक्षी है, जहां भी मुसलमान बहुसंख्या मे हैं, वहां हिन्दू नहीं रह सकते। आप अरब देश, पाकिस्तान आदि-आदि देशों को देखें।

क्या भारत के हिन्दुओं का अपना कोई देश है या नहीं। क्या सबकी आत्मा मर चुकी है। यदि इस बात को देशभक्त व सरकार न समझे, तो इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है।

समस्या का समाधान

(१) जिन हरिजन हिन्दु भाइयों को मुसलमान या ईसाई बनाया गया है, उनको शुद्ध कर पुन: गले लगायें।

(२) प्रत्येक हिन्दू धार्मिक संस्था में शुद्धि सभा बनायें।

(३) भारत देश में रहने वाले प्रत्येक नागरिक (चाहे वो किसी भी मत का हो) के लिए कानून व्यवस्था समान करवाने के लिए संघर्ष छेड़ा जाये।

(४) परस्पर अस्पृश्यता की भावना को त्यागें।

(५) हम तन, मन और धन से हिन्दु रक्षा समिति को सहायता दें।

—इन्द्र सेन शर्मा
९०, विनोबा पुरी, नई दिल्ली-२४

हर एक मनुष्य का उत्तम कर्त्तव्य है कि इसकी २००० कापियां छपवाकर बांटे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य रजनीश : कुछ नये रहस्योद्घाटन

पोर्टलैंड (ओरेगॉन) का समाचार है कि अमरीका के आप्रवासन (Immigration) अधिकारियों ने आचार्य रजनीश को स्थायी रूप से अपने यहां रहने की अनुमति देने से इनकार कर दिया है। आचार्य रजनीश ने इसके लिये आवेदन-पत्र दिया था। आप्रवासन अधिकारियों ने बताया कि आचार्य रजनीश ने वीसा आवेदन-पत्र में गलत सूचनाएं दी थीं। अधिकारियों ने रजनीश फाउंडेशन इटरनेशनल की वह प्रार्थना भी अस्वीकृत कर दी, जिसमें आचार्य रजनीश को धार्मिक नेता या शिक्षक के नाते स्थायी निवासी का स्तर दिलाने की मांग की गई थी। सम्बन्धित अधिकारी की दलील यह थी कि आचार्य रजनीश का मौनकाल चल रहा है, इसलिए उन्हें शिक्षक नहीं माना जा सकता।

आचार्य रजनीश के बारे में इतना कुछ लिखा जा चुका है कि शायद ही कोई नई बात लिखने को बची हो। जून एक, १९८१ को अमरीका प्रस्थान से पूर्व वह पुणे में रहते थे। आधे से अधिक पुणे नगर उनके विचारों को गलत समझता था और उनके शिष्यों की करतूतों से परेशान था। पुणे आने से पूव वे बम्बई में रहते थे। उन दिनों (सन् १९६९ से १९७१ तक) विख्यात जादूगर आनन्द 'संन्यासी' बनकर उनके पास रहे। तब उनका नाम स्वामी आनन्द परमहंस था। अब उनके संस्मरण दिल्ली के समाचार साप्ताहिक दिनमान में प्रकाशित हुए हैं। इन संस्मरणों को पढ़कर आचार्य रजनीश की असलियत सामने आ जाती है। निस्सन्देह आचार्य रजनीश का अध्ययन बहुत गहरा है, लेकिन केवल अध्ययन काफी नहीं। अनुभूति और साधना भी तो होनी चाहिए। आचार्य रजनीश ने प्रारम्भ में कुछ तपस्या की, लेकिन धीरे-धीरे तपस्या कम होती गई और पाखंड बढ़ता गया। इस सम्बन्ध में जन-ज्ञान में अनेक लेख प्रकाशित हो चुके हैं—इसलिए उन बातों को न दोहराकर हम आनन्द के संस्मरणों की ओर आते हैं। आनन्द लिखते हैं कि "एक दिन रजनीश बोले"—आप जादूगरों की एक टीम बनाइये और विश्व यात्रा पर निकलिये। संन्यास का भी प्रचार करिये।" कुछ दिन बाद उन्होंने मुझे ताजमहल में आयोजित एक पत्र प्रतिनिधि सम्मेलन में चमत्कार दिखाने को भी कहा और वे बोले आप चमत्कार दिखाइये और साईं बाबा सदृश लोगों को चैलेंज कीजिए। फिर रजनीश ने प्रयत्न किया कि मैं एक ऐसी करोड़पति लड़की से विवाह कर लूं, जो उनके प्रति समर्पित थी। मैंने पाया कि रजनीश के यहां पाखंड का जाल बिछा हुआ है। रजनीश ने यहां सैक्स की खुली छूट दे रखी थी। एक दिन हम-लोग अपने कमरे में बैठे बातें कर रहे थे। इस बीच रजनीशजी के कमरे से चांटा लगने की आवाज आई। हम सब चौंक पड़े, क्योंकि रजनीशजी जैसा व्यक्ति किसी को चांटा मारे, यह हो नहीं सकता था और रजनीशजी को कोई चांटा मारे, इसकी कल्पना भी न की जा सकती थी। चांटे की आवाज सुनकर हम सब लोग रजनीशजी के कमरे की ओर दौड़े। वहां जाकर देखा कि एक बहुत ही सुन्दर स्त्री तमतमाई खड़ी थी। वह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रजनीश को गालियां दिये जा रही थी। सम्भवतः उसी ने रजनीश को चांटा मारा था। उससे पूछा, तो वह बोली कि 'यह बदमाश है, फ्राड है। यह मुझसे कपड़े उतारने को कह रहा था। इसने पहले भी यह कोशिश की थी। यह संन्यासी-वन्यासी कुछ नहीं।' उस औरत को समझाबुझाकर वहां से हटाया गया। इस प्रकार के अनेक उदाहरण है। एक ही उदाहरण दूंगा। फिनलैंड से एक युगल आया था। पत्नी बहुत ही सुन्दर थी। पति से बातें करने पर पता चला कि उसकी पत्नी 'आश्रम' में आकर गर्भवती हुई है, जबकि पति ने यात्रा के दौरान और 'आश्रम' में आकर उससे कभी सम्भोग नहीं किया। रजनीश से ही सम्भोग करने के फलस्वरूप उसे गर्भ ठहरा, यह बात तब पक्की हो गई, जब उस देवी ने माना कि 'मेरी यह सन्तान प्रभु का आशीर्वाद है।' रजनीश ने यह सब कुंडलिनी जाग्रत करने के नाम पर किया। रजनोश ने उससे कहा कि 'कुंडलिनी नाभि के नीचे होती है। उसे जाग्रत करना होगा।' 'द्वार नॉक करना होगा।' (उसे कोई आपत्ति न हुई।) रजनीश ने उससे यह भी कहा कि 'तुम्हारे लिए मैं कितना बड़ा त्याग कर रहा हूं।' उस विदेशी महिला ने यह भी बताया कि किस प्रकार रजनीश ने उसे निर्वस्त्र होने को कहा और किस प्रकार वे स्वयं भी निर्वस्त्र हुए। वह स्त्री अनेक बार कुंडलिनी जागरण के लिए रजनीश के पास गई।"

अन्त में आनन्द लिखते हैं कि "रजनीश प्रतिभाशाली लोगों को इस्तेमाल करते हैं। विनोद खन्ना को ही लीजिए। वह मेरा दोस्त है। रजनीश उसे स्वामी विनोद भारती बनाकर अमरीका ले गये—यह कहकर कि तुम्हें हॉलीवुड का स्टार बनायेंगे। पर उसके बेचारे का क्या हो रहा है? रजनीश ने एक प्रतिभाशाली कलाकार की हत्या ही कर डाली।"

फैलता हुआ साम्राज्य

अब स्थिति यह है कि ऑरेगान में रजनीशपुरम् का निर्माण पूरा हो चुका है। सौ वर्ग मील में फैले इस नगर में प्रशासन भी उन्हीं का चलता है। संसार भर में रजनीश के २५० केन्द्र हैं। उनके प्रवचनों की सैकड़ों पुस्तक जहां-तहां मिलती हैं। सन् १९८० में ही उन्हें अपने प्रकाशनों से एक करोड़ पन्द्रह लाख रुपये की आय हुई और चार करोड़ ७४ लाख सात हजार रुपये दान के रूप में मिले। और तो और कम्युनिस्ट रूस में भी रजनीश अंडरग्राउंड संन्यासी मौजूद हैं।

सचमुच रजनीश की माया को समझना कठिन है। उनकी मनमोहक शैली अच्छे-अच्छों को चक्कर में डाल देती है।

—प्रस्तुति : सत्यपाल शास्त्री

प्रतिमाह २० जन-ज्ञान मंगाकर
अपना लक्ष्य पूरा करें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक माह में तीन दिन काम कर १०००) मासिक कमाइए

यदि आप केवल एक माह श्रम कर लें तो आप अपने क्षेत्र में १००० प्रतियां "जन-ज्ञान" की खपा सकते है।

हम आपको १०००) में १००० प्रति देंगे। यदि आप २) में भी उन्हें देंगे तो १०००) आप बचा सकेंगे।

५०० प्रतियां ६२५) में आप को देंगे। और वर्ष भर में सब से अधिक प्रतियां प्रसारित करने वाले का चित्र व परिचय भी छपेगा।

१९८३ में "जन-ज्ञान" का क्रांति संदेश भारत के घर-घर में पहुंचाइए।

१००० प्रतियां—१०००) में
५०० प्रतियां—६२५) में
२५० प्रतियां—३५० में
और कम प्रतियां
केवल १)५० प्रति

डाक व्यय सभी पर हमारा होगा।

हिन्दू राज्य स्थापनाके लिए आगे आइए। सहयोग दीजिए जन-ज्ञान (मासिक) १५९७ हरध्यान सिंह मार्ग करौल बाग, नई दिल्ली-५

—आभा
प्रबन्धक

दक्षिण की भाषाओं में

१००० ट्रैक्ट बांटने के लिए

२५१) दान भेजिए

—वेदभिक्षु:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक हिन्दू : प्रधान मंत्री—गृह मंत्री
व राष्ट्रपति को पत्र लिखकर
पंडिता राकेशरानी पर चलाए जा रहे
१७ अभियोग
वापिस लेने की माँग करें

शासन का यह प्रहार एक महिला पर नहीं अपितु
समस्त हिन्दू कहलाने वालों पर है—

देरी का समय नहीं, तुरन्त ही पत्र-तार भेजकर, प्रस्ताव पास कर भेजिए और लिखिए कि—

मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए धार्मिक हिन्दू नेता
पंडिता राकेशरानी पर चलाए जा रहे सभी
अभियोग तुरन्त वापिस लिए जाएं।

हिन्दू देश में हिन्दू हितों की मांग करने पर अभियोग चलाना सहन नहीं होगा

लाखों की संख्या में कार्ड भेजिए—यह आपकी परीक्षा है—

धर्मवीर
मन्त्री

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति १५९७ हरध्यानसिंह मार्ग
करौलबाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

—सत्यपाल शास्त्री

इन्दिरा गांधी के नाम खुला पत्र

पांडिचेरी के एक अज्ञात भारतीय ने प्रधानमन्त्री श्री इन्दिरा गांधी के नाम एक खुला पत्र लिखा है, जो १६ जनवरी के "टाइम्स ऑफ इण्डिया में प्रकाशित हुआ है। पत्र लेखक लिखता है कि "मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त दुःख होता है कि आपने कठोर चेहरे वाले लोगों को यह इजाजत दे रखी है कि वे आपको घेरे रहें। ये लोग राजनीति को जातपात, वर्ग और धन की आंखों से देखते हैं। ये लोग अनुभव से कुछ नहीं सीखते। यदि आप वह रोल अदा करना चाहती हैं, जो इतिहास ने आपके लिए नियत किया है और जिसके लिए हम भारतीय आशा भरी दृष्टि से आपकी ओर देखते हैं, तो आपको इन लोगों को वहीं भेजना होगा जहां से यहां आये हैं। छोटे लोग पैसे के पीछे भागते हैं। मूल्यों और वर्णों के भारतीय वरिष्ठता—क्रम में ऐसे लोग तीसरे नम्बर पर आते हैं।

फिर ये सार्वजनिक लोग तो वर्ण शब्द के सही अर्थों में वैश्य भी नहीं। ये तो मुफ्तखोर (परोपजीवी) हैं, जो उस वृक्ष को ही खा जायेंगे, जिस पर टिके हुए हैं। भारत का इतिहास एक अन्य बात को भी अधोरेखांकित करता है। जब देश में कोई बड़ा नेता होता है—अशोक, अकबर और नेहरू जैसा (नामों को लेकर मतभेद हो सकता है—सम्पादक) तब देश उन्नति करता है। जब दरम्याने दर्जे के और कमजोर लोग ऊपर जाते हैं—तब देश लड़खड़ाने लगता है। यही कारण है कि भारत को आपकी आवश्यकता है। लेकिन भारत को आपकी आवश्यकता इस लिए है, ताकि आप उसका मिलन उसकी नियति से करायें। जब माता जी जीवित थीं, तब आपने श्री अरविन्द आश्रम की जो यात्राएं की थीं, मैंने उनका वृत्तान्त पढ़ा है। इसलिए आप मेरी बात समझ सकेंगी और स्वयं जान सकेंगी कि आप भारत माता की सेवा की साधन मात्र हैं। यह एक सुविदित सत्य है कि पौधे को जन्म देने के लिए बीज को अपने आपको मिटा देना होता है। जो सच्चे अर्थों में महान् होते हैं, वे इस सत्य के अनुसार अपना जीवन बिताते हैं। जो ऐसा नहीं कर सकते, वे इस सम्मान के योग्य नहीं होते। भारत चौराहे पर खड़ा है। वह या तो समृद्धि और बड़प्पन की ओर बढ़ेगा या अव्यवस्था और पीड़ा की ओर। यदि आप असफल हो गईं, तो इस समय आपका स्थान लेने के लिए कोई व्यक्ति मैदान में नहीं। इस प्राचीन देश का भविष्य आपके हाथ में है। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप भारत माता की पुकार सुनें और उसकी ओर ध्यान दें।

पत्रलेखक ने पत्र के साथ एक अनुलेख (Post Seridt) भी लिखा है। उसमें पत्र लेखक लिखता है कि महान् शासकों ने अपने दरबार में उल्लेखनीय ज्ञानियों, विद्वानों और सदाचारियों को रखा हुआ था। (इस प्रसंग में पत्र लेखक ने फिर अकबर का नामोल्लेख किया है, जिससे हम असहमत हैं—सम्पादक)। क्या आप अन्तर्मन से कह सकती हैं कि आपने भी अपने दरबार में ऐसे ही पुरुषों और स्त्रियों को रखा है। आपके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इर्द-गिर्द मँडराने वाले प्रायः सभी लोग बौने हैं। जब आप जैसे ऊंचे व्यक्ति को बौने घेर लें, तब आप भी बौने हो जाते हैं। हमेशा ऐसा नहीं हुआ। सन् १९७१ में जब आपने इतिहासमें अपने लिए स्थान बनाया था, तब आपकी सहायताके लिए प्रतिष्ठित, अनुभवी और प्रतिभाशाली व्यक्ति मौजूद थे। आपको जहां कहीं योग्य व्यक्ति मिलते थे, आप उन्हें चुन लेते थे। तब आप उन्हें तथा कथित वफादारी की कसौटी पर नहीं कसते थे। यह आत्मविश्वास और शक्ति की निशानी थी अब तो आप अपने ही दल के लोगों से भेदभाव बरतती हैं, यदि वे सन् १९७८ में आपके साथ न थे। कितना अन्तर आ गया है। देश को सन् १९७१ की इन्दिरा की आवश्यकता है।

क्या इन्दिरा जी इस पत्र में लिखी बातों पर ध्यान देंगी।

क्या एक शताब्दी में हिन्दू संस्कृति का अन्त हो जाएगा ?

जन-ज्ञान के जयहिन्दू विशेषांक (ज्येष्ठ २०३९) में उक्त शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ था। पन्द्रह वर्ष पूर्व लिखे गए इस लेख के लेखक थे बाबू श्रीप्रकाश— भारत के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता और विख्यात दार्शनिक डॉ० भगवान्दास के सुपुत्र। (पाठकों से अनुरोध है कि वे एक बार फिर इस लेख को पढ़ें। जो कुछ हम आगे लिख रहे हैं, उसे समझने के लिए उक्त लेख की पुनरावृत्ति आवश्यक भी है।)

आज सेक्युलरिज्म ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि कोई कांग्रेसी हिन्दुत्व की बात नहीं कर सकता। अन्य सब सम्प्रदायों के हित की बातें हो सकती हैं, लेकिन यदि कोई कांग्रेसी हिन्दू हितों की बात करे, तो कांग्रेसी मुसलमान उसके गले पड़ जायेंगे और उसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ का एजेंट कहकर लांछित करेंगे।

अपने लेख में बाबू श्रीप्रकाश ने अनेक खतरों की ओर संकेत किया है। उनका विचार था कि दस वर्ष के भीतर-भीतर देश पन्द्रह अथवा इससे भी अधिक छोटे, दुर्बल, दरिद्र और स्वतंत्र राज्यों में विभक्त हो जायेगा। उन्हें विदेशी आक्रमण का भी खतरा दिखाई देता था, क्योंकि गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण संसार में हमारा कोई मित्र नहीं। जब हम किसी के मित्र नहीं; तो कोई हमारा मित्र क्यों होगा ?

उक्त लेख में बाबू श्रीप्रकाश ने यह भी लिखा था कि विवश होकर मुझे कहना पड़ता है कि मुझे भय है कि जिस मानव व्यवस्था को हम हिन्दू धर्म के नाम से जानते हैं, वह एक शताब्दी में लुप्त हो जाएगी। उन्होंने यह भी लिखा है कि जब हिन्दू धर्म लुप्त हो जाएगा, अफ्रीका व एशिया से इस्लाम और कम्युनिज्म देश भर में प्रभावी होंगे। आज हमारा धर्म ही हमारी रक्षा कर रहा है। जब धर्म ही नहीं रहेगा, तब इनके आक्रमणों से हमारी रक्षा कौन करेगा ? उन्होंने सुझाव दिया था कि जनता को विदेशी आक्रमण का सामना करने की शिक्षा दी जाये।

बाबू श्रीप्रकाश के विचार बहुत अच्छे हैं। आज हिन्दू समाज के समक्ष अनेक खतरे हैं। विदेशी मिशनरी और पैट्रोडालरों पर मुटियाने वाले मौलवी मुल्ला हिन्दुओं को धर्मभ्रष्ट करने में जुटे हुए हैं। समाचार है कि मार्च, १९८३ तक ३२ करोड़ रुपए इस देश के हिन्दुओं के धर्मान्तरण के लिए भारत आएगा। हम अपनी संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। पब्लिक स्कूल खोलकर अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ाने में सहायक हो रहे हैं। यह सब देखकर अमरीका के राष्ट्रपति रीगन ने अमरीकन विश्वविद्यालयों में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दी-संस्कृत की पढ़ाई बन्द करवाकर अरबी-फ़ारसी की पढ़ाई शुरू करवा दी है—यह कहकर कि जब भारत में इन भाषाओं पर बल नहीं दिया जाता, तो अमरीका में इनकी पढ़ाई की क्या आवश्यकता है ?

लेकिन निराश होने की आवश्यकता नहीं। बाबू श्रीप्रकाश का प्रश्न है—क्या एक शताब्दी में हिन्दू संस्कृति का अन्त हो जाएगा ? हमारा उत्तर है कि एक शताब्दी में तो क्या एक हजार शताब्दियां बीत जाने पर भी हिन्दू संस्कृति का अन्त नहीं होगा।

यूनान मिस्र रोमां सब मिट गये जहां से,
कोई बात है कि बाकी अब तक निशां हमारा।

क्या उत्तरप्रदेश दूसरा असम बनेगा ?

अंग्रेजी साप्ताहिक आर्गनाइजर में प्रकाशित समाचार के अनुसार बंगलादेश से आठ लाख घुसपैठिये पूर्णिया और किशनगढ़ क्षेत्र में आ चुके हैं। इनमें से छह लाख तो कलकत्ता में ही रह रहे हैं। बत्तीस लाख असम में हैं। पिछले दिनों पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जो दंगे हुए, वे इन्हीं के कारण हुए। मुरादाबाद दंगा जांच आयोग के समक्ष मुरादाबाद के मुस्लिम नेताओं ने जो बयान दिये, उनमें उन्होंने यह भी बात मानी कि बंगलादेश से दस हजार घुसपैठिये मुरादाबाद जिलों में आकर यहां आबाद हो गये हैं।

घुसपैठिये दिल्ली तक पहुंच गये हैं, जहां वे मजदूरी करते हैं। वे अपना नाम हिन्दुआना बताते हैं—जैसे अशोक और शान्ति। जो मुसलमान कभी बंगलादेश लौट गए थे, उनके पास भारत का वीज़ा (प्रवेश पत्र) है। वे इसे दिखाकर पुनः भारत में प्रविष्ट हो जाते हैं। सीमा पार घुसपैठियों को रोकने के लिए पर्याप्त व्यवस्था नहीं।

आखिर यह सिलसिला कब तक चलेगा ?

असम के सम्बन्ध में गलत सरकारी नीतियों का ही परिणाम है कि वहां अखिल असम छात्र संघ और अखिल असम गणतंत्र संग्राम परिषद् द्वारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन थमने में ही नहीं आ रहा। ताजा समाचारों के अनुसार दोनों संगठनों ने पन्द्रह दिसम्बर से प्रतिदिन सायंकाल सात बजे से पन्द्रह मिनट के लिए नारेबाजी का कार्यक्रम शुरू कर दिया है। उनकी मांग है कि विदेशी घुसपैठियों की समस्या हल की जाए और जब तक यह समस्या हल नहीं हो जाये, तब तक राज्य में चुनाव न कराये जायें।

पिछले तीन वर्ष से सरकार और आन्दोलनकारियों में लुका-छिपी चल रही है। क्या हम मान लें कि सरकार आन्दोलनकारियों को थका डालना चाहती है ! यदि सरकार ऐसी आशा लगाये बैठी है, तो उसकी यह आशा दुराशा ही सिद्ध होगी।

मासूम बच्चे की हत्या

पाकिस्तान हमारा पड़ोसी देश है। कल तक वह हमारे ही देश का अंग था। स्वाभाविक है कि वहां की घटनाओं में हमारी दिलचस्पी हो। वहीं की एक घटना है। एक मस्जिद से नमाजी बाहर निकल रहे थे कि उन्होंने एक नवजात शिशु को नाली के किनारे हुमकते हुए पाया। उन नमाजियों के दिल में खौफ़े खुदा और इंसानी मुहब्बत नाम की कोई चीज न थी। जैसे ही अनपढ़ मुल्ला ने उस नन्हीं-सी जान को हरामी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करार दे दिया, नमाजियों ने उसे पत्थर मारने शुरू कर दिए। कुछ ही क्षणों में उस अबोध शिशु ने दम तोड़ दिया। कुछ लोगों ने उसे बचाने का प्रयत्न किया, तो उन्हें भी पत्थर झेलने पड़े—तब तक जब तक वे वहां से हट न गए।

पाकिस्तानी महिलाओं के एक संगठन ने इस हत्या के विरुद्ध आवाज उठाई है। इंसानियत के नाम पर इस हत्या का जोरदार विरोध किया है। महिलाएं किसी भी देश की हों, सामान्यतः वे पुरुषों की अपेक्षा अधिक भावुक और कोमल हृदय की होती हैं।

निजामे-मुस्तफ़ा के नाम पर पाकिस्तान में पहले भी कुछ कम अत्याचार नहीं हुए। यह हत्या उन अत्याचारों की पराकाष्ठा है जिस मुल्ला ने इस शिशु की हत्या का फ़तवा दिया, उसे चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल ज़िया उल हक़ दावा करते हैं कि वे जो कुछ करते हैं, अल्लाह की प्रेरणा से करते हैं। उनके शासन में ऐसी घटना होने से उनका गौरव बढ़ेगा नहीं, घटेगा ही। पाकिस्तान के माथे पर यह कलंक का टीका है, जिसे चिरकाल तक न धोया जा सकेगा। ऐसी दरिन्दगी से मज़हब बदनाम होता है। माता-पिता हरामी हो सकते हैं, लेकिन मासूम बच्चा उनके किये की सजा क्यों भुगते? इस्लाम शान्ति और सुरक्षा का दावेदार बनता है? क्या यह हत्या इस दावे की पुष्टि करती है? जब तक पाकिस्तानी जनता की नकेल मुल्ला-मौलानाओं के हाथ में रहेगी, तब तक उन्हें मजहबी जनून का शिकार होना ही पड़ेगा।

अकाली आन्दोलन और चौधरी चरणसिंह

अकाली आन्दोलन का सामना करने के लिए केन्द्रीय सरकार सभी सम्भव पग उठा रही है। उसने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि वह सुरक्षात्मक व्यवस्था तो करेगी ही, उसके साथ ही अकाली दल का सामना राजनैतिक स्तर पर भी करेगी। यह देश और अकालियों दोनों के लिए ही दुर्भाग्य की बात है कि अकालियों ने जो दृष्टिकोण अपना रखा है, देश का कोई भी राजनैतिक दल उसका समर्थन करने को तैयार नहीं। श्रीमती इन्दिरा गांधी को एकाएक यह विचार आया कि पंजाब में बहुमत किसानों का है और वे अधिकतर सिख हैं, यदि उनका मुकाबला हरियाणा के किसानों से हो जाये तो उनकी स्थिति काफी सरल हो जाएगी। हरयाणा के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल तो इन्दिरा जी के अपने ही हैं, परन्तु इसके लिए तो गैर-कांग्रेसी दलों की भी आवश्यकता थी। अतः उन्हें चौधरी चरणसिंह की याद आई। गत कुछ दिनों में चौधरी साहब अकालियों की अनुचित मांगों का विरोध कर चुके हैं। इन्दिरा जी ने उसका लाभ उठाने की सोची। श्रीमती इन्दिरा गांधी और चौधरी चरणसिंह में दो बार भेंट हो चुकी है। गृहमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी भी चौधरी साहब से बातचीत करते रहे हैं। बताया गया है कि चौधरी चरणसिंह ने इस बात पर सन्देह व्यक्त किया कि श्रीमती गांधी अकालियों के मुकाबले पर अड़ी रहेंगी।

श्री सेठी ने चौधरी चरणसिंह से कहा कि इस समय केन्द्रीय सरकार को क्षेत्रीय दलों से खतरा है। अतः इस बात की आवश्यकता है कि राष्ट्रीय दल एक-दूसरे के निकट आयें। श्री सेठी चौधरी चरणसिंह का सहयोग प्राप्त करने में सफल हो गए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। इस सहयोग का प्रणाम यह होगा कि उत्तर-प्रदेश और राजस्थान के बाद हरयाणा भी पंजाब के अकालियों के विरुद्ध मैदान में उतर आयेगा। इन राज्यों की सरकारें तो पहले ही अकालियों की मांगों के विरुद्ध थीं। अब इन क्षेत्रों के बड़े और राष्ट्रीय दलों का समर्थन भी उन्हें प्राप्त हो जाएगा।

फारूख अब्दुल्ला की बहकी-बहकी बातें

कश्मीर के मुख्यमंत्री डा० फारूख अब्दुल्ला को मुख्यमंत्री का पद मुख्यत: इसीलिए प्राप्त हुआ है कि वह कश्मीर के स्वर्गीय नेता शेख अब्दुल्ला के पुत्र हैं। मगर पिछले दिनों उन्होंने जो वक्तव्य दिये हैं, उनसे यही आभास मिलता है कि वे युवक और उत्साही जरूर हैं, मगर उनमें अनुभव का अभाव है। कुछ दिन हुए उन्होंने बड़ी गर्मजोशी से फरमाया कि जम्मू और कश्मीर के लोगों के भविष्य का निर्णय करने का हक किसी को नहीं है, केवल राज्य के लोगों को है। मगर साथ ही यह भी कह दिया कि वर्तमान नियन्त्रण रेखा को भारत और पाकिस्तान की सीमा बना दिया जाए। अब यह प्रश्न उभरता है कि क्या पाकिस्तान ने कश्मीर का वह भाग जिस पर उसका अवैध नियन्त्रण है, कश्मीर की जनता से पूछकर लिया है? स्वर्गीय शेख तो यही कहा करते थे कि उस पर पाकिस्तान का कोई हक नहीं और वह भारत को वापिस मिलना चाहिए। अब फारूख साहब फरमाते हैं कि नियन्त्रण रेखा को दोनों देशों की सीमा मान लिया जाये।

अब आपने कहा है कि आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अवैध घोषित कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ-साथ आपने दो-एक अन्य संस्थाओं का नाम भी ले लिया। जब आपसे प्रश्न किया गया कि क्या भारतीय जनता पार्टी को भी अवैध घोषित किया जायेगा, तो आपने उत्तर दिया कि भारतीय जनता पार्टी एक धर्म निरपेक्ष पार्टी है, अतः उसे स्पर्श नहीं किया जाएगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्हें इससे कुछ हासिल नहीं होगा। इस मामले पर केन्द्रीय सरकार भी समय-समय पर विचार करती रही है, परन्तु अब तक उसे कोई ऐसा ठोस कारण नहीं मिला कि कुछ संस्थाओं पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाकर उन्हें अवैध घोषित कर दिया जाये। इस बारे में श्री लालकृष्ण आडवाणी ने ठीक ही कहा है कि डा० फारूख संविधान के ३७०वें अनुच्छेद के अन्तर्गत प्राप्त विशेष स्तर का अनुचित लाभ उठा रहे हैं।

देश में सर्वत्र डॉ० फारूख के इस अविवेकपूर्ण वक्तव्य की कड़ी आलोचना हुई है। आपने फरमाया कि संघ के स्वयंसेवक बन्दूकें और तलवारें लेकर परेड करते हैं। कई जिम्मेदार क्षेत्रों में उनके इस वक्तव्य को चुनौती दी गई है कि मुख्यमंत्री महोदय इसके लिए कोई ठोस साक्षी प्रस्तुत करें। क्योंकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर इस प्रकार का आरोप पहली बार नहीं लग रहा, इससे पूर्व कई बार लग चुका है। आपातकाल के समय संघ को अवैध घोषित करके श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपना "प्रयोग" कर लिया था। वर्षों से चिल्लाया जा रहा है कि संघ साम्प्रदायिकता फैला रहा है, परन्तु अब तक किसी ने यह नहीं बताया कि यह साम्प्रदायिकता है क्या? क्या ऐसे ही गाड़ी चलेगी?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए

पवित्र धर्म ग्रंथ : परमात्मा की वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-अर्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य लगभग ४४४ रु०

किन्तु प्रचार के लिए : अपने सदस्यों को

जनता संस्करण : २११ रु०, पुस्तकालय संस्करण : २५१ रु०

उपहार संस्करण : ६०४ रु०

३० रु० अग्रिम भेजें । रेलवे स्टेशन लिखें

अध्यक्ष दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५

दूरभाष : ५६२६३६/५६४७५१

दान के प्रत्येक अवसर पर

वेद मन्दिर को स्मरण कीजिए

१—अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कमरा बनवाइए। ५००१) से १५०००) तक।

२—यज्ञशाला अधूरी पड़ी है। उसके लिए कम से कम ५०१) दीजिए। आपका नाम पत्थर पर अंकित होगा।

३—वेद महाविद्यालय, अनुसंधान विभाग और जिस कार्य में भी आपकी रुचि हो उसके लिए।

अपना सहयोग उदारतापूर्वक दीजिए

दान भेजने का पता

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यानसिंह रोड, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक हिन्दू से !

आपको यह भलीभांति ज्ञात ही है कि संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य ने देश को नई दिशा दी है। यवन-ईसाई शक्तियां पूरे बल से हमारे विरोध में खड़ी हैं और इस समय मुझ पर १७ मुकद्दमे व महात्मा वेदभिक्षु: जी पर ४ मुकद्दमे चल रहे हैं।

हमारी प्रार्थना है कि आप उदारतापूर्वक हमें निरंतर सहयोग दें।

१—साहित्य प्रकाशन के लिए कागज दीजिए। कम से कम एक रीम कागज का मूल्य लगभग १२५) प्रत्येक हिन्दू भूखा रहकर भी भेजे।

२—जन-ज्ञान के आजीवन सदस्य बनकर सहयोग दीजिए।

३—जन-ज्ञान अपने मित्रों-परिचितों को भिजवाइए।

४—प्रतिमास २० प्रतियां मंगाकर केवल ३०) में २० मित्रों तक हमारी—समय की आवाज पहुंचाइए।

५—अपने क्षेत्र में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए।

—राकेशरानी

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, नई दिल्ली-५

'ईश्वर सिद्धि' का प्रामाणिक ग्रन्थ
सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित
(वर्तमान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती) लिखित
भूमिका : स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

The Concept Of God

सजिल्द : लगभग २०० पृष्ठ। बढ़िया कागज मूल्य ५०)। किन्तु अभी १००) की ५ प्रतियां, १५०) की १० प्रतियां, ५००) की ५० प्रतियां २८-२-८३ तक मिलेंगी।

अपना आदेश धन सहित आज ही भेजिए

दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर, १५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१—चारों वेदों का हिन्दी भाष्य		मूल्य ४४४)
२—सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)		४०)
३—गीता का योगपरक भाष्य (पं० आर्यमुनि)		२५)
४—वेदांजलि : ३६५ मंत्रों की प्रेरक व्याख्या		३०)
५—सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या—(पं० चमूपति)		१५)
६—ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार		१५)
७—संस्कारविधि : (सजिल्द)	छोटा साइज	१०)
	बड़ा साइज	१५)
८—सरस्वतीन्द्र जीवन-चरित्र		३०)
९—अग्निहोत्र दर्पण : (डा० रामनाथ वेदालंकार)		२०)
१०—सत्यार्थ-प्रकाश : (१०+१५ इंच) स्थूलाक्षर		१५१)
	आर्ट पेपर पर	२५१)
११—ज्योति स्तम्भ :		१०)
१२—दयानन्द दर्शन :		१०)
१३—योगासन :		२)
१४—योग और ब्रह्मचर्य :		३)
१५—दयानन्द चित्र दर्शन :		२०)
१६—श्रीमद्दयानन्दप्रकाश :		२०)
१७—LIGHT OF TRUTH		४०)
१८—प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर		६)
१९—अथर्ववेद परिचय :		६)
२०—संक्षिप्त महाभारत :		६)
२१—वाल्मीकि रामायण :		६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, पो० आ० अलीपुर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शामली नगर पंडिता राकेशरानी के जयनाद से गूँज उठा

(कु० आभा द्वारा प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर)

० ० ०

शामली। आर्यसमाज शामली के वार्षिकोत्सव पर आयोजित विशाल हिन्दू सम्मेलन में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए पंडिता राकेशरानी ने कहा कि हमने संघर्ष नहीं छेड़ा, केवल चुनौती स्वीकार की है और हमें विश्वास है कि उनके पास अपार धन-साधन होते हुए भी विजय हमारी ही होगी, क्योंकि सत्य हमारे साथ है।

पंडिता राकेशरानी ने कहा कि हम अपनी परम्पराओं और संस्कृति को नष्ट करने का अधिकार किसी को भी नहीं दे सकते। आज जागने का समय है। एक नया षड्यन्त्र पनप रहा है—इतिहास बदलने का। आज के इतिहास में लिखाया जा रहा है कि

—औरंगजेब धार्मिकता में कट्टर नहीं था।

—अकबर धर्मनिरपेक्ष व महान् राजा था।

—शिवाजी व प्रताप के आगे महान् शब्द का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिये।

क्या ऐसा इतिहास लिखा जाना हमारे लिए गौरव की बात है? आप स्वयं सोचिये।

मुझ पर १७ मुकद्दमे दायर हैं; लेकिन कोई चिन्ता नहीं। चिन्ता मुझे अपने देश की—देशवासियों की है। यदि देश की रक्षा के लिए मुझ पर १७-क्या १०० मुकद्दमे भी हो जायें, तो भी मुझे नहीं डिगा सकते। सच्ची बात कहने से मैं कभी नहीं हटूँगी। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द व पंडित लेखराम का बलिदान हमारा मार्गदर्शन कर रहा है और हम इसी मार्ग पर चलते रहेंगे।

सम्मेलन में महात्मा वेद भिक्षु: जी का भी ओजस्वी भाषण हुआ। उन्होंने कहा कि अब भाषण देने का समय नहीं और न ही सुनने का समय है। अब समय है क्रियाशील होकर कार्य करने का। मैं आज आर्यसमाज के विषय में नहीं—संपूर्ण राष्ट्र की कुछ समस्याओं को आपके समक्ष प्रस्तुत करूँगा, जिनसे आप अनभिज्ञ हैं।

हमारे देश पर संकट के बादल छाये हुए हैं। पहली अगस्त १९८० को भारत के लिए अत्यन्त मनहूस दिन बताते हुए उन्होंने कहा कि यह वह दिन है,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जबकि भारत की आजादी का नारा देने वाले लोकमान्य तिलक का देहान्त हुआ था। इसी दिन से भारत में अलगाव और विभाजन की भावना का अंकुर महात्मा गांधी ने प्रस्फुटित किया था। वही अंकुर आज विषवृक्ष के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित है।

गोधरा, गुजरात, हैदराबाद, मीनाक्षीपुरम् और मेरठ में हुई घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि आज फिर महमूद गजनवी सोमनाथ मन्दिर को लूटने के प्रयत्न में है, लेकिन मैं इसी आर्यसमाज के मंच से घोषणा करता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति—वह मुसलमान हो या ईसाई—हमारी संस्कृति के प्रतीक मन्दिर की मूर्तियों को टेढ़ी नजर से देखता है, तो हम उसे कभी क्षमा नहीं करेंगे।

अगर भारत देश में रहना है तो भारतवासी बन कर रहना होगा। हमारे राष्ट्र का मन्दिर का सम्मान करना होगा। जब हम उनकी मस्जिद पर, अजान पर कोई आपत्ति नहीं उठाते तो उन्हें क्या अधिकार है हमारी मन्दिर की घंटियों पर आपत्ति करने का ?

यहां रहना है तो मिलजुल कर, एकता से और समान अधिकार भाव से रहना होगा।

दयानन्द संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती राकेशरानी पर चल रहे अभियोगों पर रोष प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि भारत के इतिहास में वे पहली धार्मिक महिला हैं, जिन्हें सरकार ने १७ अभियोगों द्वारा 'पुरस्कृत' कर गौरवान्वित किया है।

फिर भी हमें प्रसन्नता इस बात की है कि धीरे-धीरे हमारी सरकार का दिमाग भी पलट रहा है। सरकार हिन्दू अधिकारों के प्रति सजग हो रही है।

अंत में उन्होंने कहा कि मेरा तो बस एक ही स्वप्न है—भारत को पूर्ण हिन्दू राष्ट्र के रूप में देखने का।

अजमेर दयानन्द कालिज के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो० धर्मवीर ने अपने धाराप्रवाह भाषण में जनता को जागृत करते हुए कहा कि हम किसी को छेड़ते नहीं, किन्तु जो हमें छेड़ता है उसे छोड़ते भी नहीं।

सम्मेलन से पूर्व सारे नगर में आर्यवीरों ने पंडिता राकेशरानी का जुलूस निकाला। सारा नगर वैदिक धर्म की जय, हिन्दू धर्म की जय, भारत माता की जय, आर्यसमाज अमर रहे, महर्षि दयानन्द की जय, शहीद श्रद्धानन्द-लेखराम की जय के साथ ही पंडिता राकेशरानी की जय के नाद से गूंज उठा।

अनेक स्थानों पर जनता ने पुष्पमालाओं, मिठाई, इलायची आदि से पंडिता राकेशरानी का स्वागत किया। उनकी वाणी नगरवासियों को लम्बे समय तक कर्म की प्रेरणा देती रहेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू शब्द का अर्थ है भारतीय

श्रीमती इन्दिरा गांधी

(नीचे इन्दिराजी के वे विचार दिए जा रहे हैं, जो उन्होंने नई दिल्ली में आयोजित रामकृष्ण-विवेकानन्द युवा सम्मेलन में प्रकट किये।

—सम्पादक)

एक मानव के नाते हमें जो कुछ करना चाहिए उसमें हम असफल रहे हैं। जो कुछ हम करते हैं उसमें दोष हैं। अपने दृष्टिकोण को हम छोटा करना चाहते हैं। हम में से कुछ तो जरूर पूर्णता की ओर बढ़ने की कोशिश करते हैं, पर हम उससे अभी काफी दूर हैं। लेकिन यह बड़े महत्त्व की बात है कि भारत में हमारे आदर्श अभी भी वैसे ही हैं और ये आदर्श, यह ज्ञान की ज्योति हमें हमारे अतीत से प्राप्त हुई है, जिसने हमारे अध्यात्म को, हमारी आत्मा को ज्योतिर्मय किया और हमें स्वामी विवेकानन्द जैसी विभूतियां प्रदान कीं। बाद में गांधी जी भी उसी परम्परा की देन थे। हमारे इस देश के ऋषि-मुनि हमारे आदर्श हैं और भारत का भविष्य उज्ज्वल है। लेकिन इसका दायित्व अकेले सरकार के ऊपर नहीं है, बल्कि हमारे आदरणीय विद्वानों और धार्मिक नेताओं पर भी इसका भार है। दूसरे लोगों का भी दायित्व है, लेकिन मूल रूप से यह दायित्व हमारे युवा वर्ग का है, चाहे वे लड़के हैं चाहे लड़कियां। ये हमारे भविष्य के कर्णधार हैं।

धर्म का सन्देश

कभी-कभी मुझसे पूछा जाता है कि क्या मैं धर्मपरायण हूँ, तो इसका उत्तर देना मेरे लिए कठिन हो जाता है। मेरा उत्तर है कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप धर्म का क्या अर्थ करते हैं। अगर आप कर्मकाण्ड और कुछ महात्माओं की बात को बार-बार दोहराना ही धर्म समझते हैं तो इस दृष्टि से शायद मैं धर्म-परायण नहीं हूं। लेकिन मैं समझती हूँ कि सच्चा धर्म सत्य की खोज है। धर्म यही है कि हम अपनी अन्तरात्मा टटोलकर यह देखें कि क्या उचित है और उसे बेहतर बनाने की कोशिश करें। स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा के बारे में कहना है कि इसका अर्थ यह नहीं है कि कोई व्यक्ति कितना जानता है, बल्कि शिक्षा वह है कि कोई क्या बनना चाहता है और कोई क्या है? इसे प्राप्त करना ही शिक्षा है।

आत्म-अवलोकन करें

हम युवा वर्ग से यही चाहते हैं और यही हमारे दर्शन शास्त्र का संदेश है कि हम आंखें बन्द करके या कान बन्द करके हर चीज पर विश्वास न करें, बल्कि सत्य का स्वयं अन्वेषण करें।

स्वामी जी शक्ति के विषय में कहा करते थे कि शक्ति का किस प्रकार विनाश किया जाता है—किस प्रकार वह बरबाद की जाती है और किस प्रकार उसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शक्ति का सदुपयोग करके मानव जाति और विश्व का कल्याण करने में सहायता ली जा सकती है। मैं सोचती हूं कि यही बात हमारे अन्दर निहित सभी शक्तियों के बारे में है। संसार में परिवर्तन लाने के लिए, मानवता में परिवर्तन के लिए विज्ञान में आश्चर्यजनक शक्ति है। पर साथ ही यह विनाश का एक भीषण साधन बन सकती है और आज दुर्भाग्य से हर स्थान पर बैठे शक्तिशाली लोग शायद इसके सदुपयोग की बजाय इसके दुरुपयोग की ही कोशिश कर रहे हैं।

यह युवा वर्ग का ही काम है कि वह हर कदम को सोच-सोच कर रखे। वह बेहतर रास्ते पर जाना चाहता है या फिर बुरे मार्ग पर। कभी-कभी सरल मार्ग श्रेष्ठ मार्ग नहीं हुआ करता और तभी आपको संघर्ष के लिए तैयार होना पड़ता है और मैं समझती हूं कि इसीलिए स्वामी विवेकानन्द ने भी संघर्ष पर इतना बल दिया है। संघर्ष से आप अपने आपको सुदृढ़ बना सकते हैं। आपको सिर्फ बुराइयों से ही नहीं लड़ना है। संघर्ष का अर्थ है ऐसे कार्य जो आपको शक्ति दें। आप यदि अपनी मांसपेशियों का प्रयोग नहीं करते तो कुछ समय बाद वे निष्क्रिय हो जायेंगी। यदि आप बिस्तर पर लेटे रहते हैं, चाहे आप बीमार भी नहीं हैं, तो आपको पता चलेगा कि एक महीने के बाद आपके लिए चलना तक मुश्किल हो जायेगा। केवल पेशियों को हरकत में लाने से ही, चाहे वे शारीरिक शिरायें हैं या मानसिक शिरायें हैं, आपका शरीर और मस्तिष्क विकसित हो सकता है। शक्ति से ही अधिक शक्ति उत्पन्न होती है और इसी तरह एक समाज आगे बढ़ सकता है।

भारतीय विरासत पर गर्व करें

हमारे इस देश में एक अविकल परम्परा है और इस शाश्वत सत्य का प्रकाश हमारे सामने होता है। जैसा कि स्वामी जी ने उचित ही कहा है कि 'हिन्दू' शब्द का अर्थ है भारतीय। सचमुच उस समय भारत ऐसा भारत नहीं था जैसा आज समझा जाता है। उस समय जो कुछ था उसमें सभी लोगों को शामिल किया जाता था और बहुत समय तक यूरोप में भारत के सभी धर्मों को इसी रूप में देखा जाना था। मुझे याद है कि जब मैं १९३५ या उसके आसपास यूरोप गई तो वहाँ के लोगों ने मुसलमानों का जिक्र भी हिन्दुओं के रूप में किया। वे कहा करते थे कि आप हिन्दू हैं। आप कौन-से हिन्दू हैं, क्या आप इस्लम का पालन करते हैं या वेदान्त अथवा किसी और धर्म का? ऐसी बात थी, क्योंकि हिन्दू का अर्थ वे समझते थे भारतीय।

बहुत वर्ष पहले—मेरे ख्याल से १९२० के बाद जब मैं एक छोटी बच्ची थी, हमारे एक राष्ट्रीय नेता डा० सैयद महमूद जर्मनी के एक विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे, जो संसार के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में से एक था। एक जर्मन प्रोफेसर ने उन्हें विश्वविद्यालय के प्रांगण में रोककर गीता के विषय में कुछ सवाल पूछे। डा० महमूद भौंचक्के रह गए और उन्होंने कहा—"मैं एक मुसलमान हूं, मैंने गीता नहीं पढ़ी।" वह प्रोफेसर आश्चर्यचकित था। उसने कहा कि इससे क्या फर्क पड़ता है। मैं एक ईसाई हूं, आप एक मुसलमान हो सकते हैं, यहूदी हो सकते हैं, आप कुछ भी हो सकते हैं, पर आपके पास गीता के रूप में आपके देश में एक खजाना है और आपने उसे नहीं पढ़ा। आप भारतीय कैसे कहला सकते हैं? आपको ये चीजें जाननी चाहिएं। यह आपकी राष्ट्रीय धरोहर है। यह किसी धर्म-विशेष की धरोहर नहीं। डा० महमूद के लिए यह एक नया अनुभव था। इस प्रकार पहले कभी उनसे किसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने ऐसी बात नहीं की और न ही ऐसा सुझाव दिया, लेकिन इसके बाद उन्होंने गीता पढ़ी—जैसा कि सभी धर्मों के बहुत से व्यक्ति दुनिया भर में इसे पढ़ रहे हैं।

आत्मबल को पहचानें

आत्मानुशासन प्रगति की सबसे पहली सीढ़ी है। अनुशासन बाहर से भी लागू किया जाता है, लेकिन वह सच्चा अनुशासन नहीं। सच्चा अनुशासन वही है, जो आपके मन-मस्तिष्क में छाया होता हैं, जो आपके शरीर को नियंत्रित करता है, जो अच्छी अन्तरात्मा से पैदा होता है और जिस का उद्देश्य शुभ होता है। स्वामी विवेकानन्द ने हमारे दर्शन की उत्कृष्ट व्याख्या की है। वे कहते हैं कि आत्म-बल पहचानो। यह सब से शक्तिशाली है। मानव की चेतना को जगाने की चेष्टा करें, ताकि सम्पूर्ण मानवता का कल्याण हो।

सदा जिज्ञासु रहें

मैं समझता हूँ कि हम संसार को बहुत कुछ सिखा सकते हैं, लेकिन मेरा विचार है कि हम भी दुनिया से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उम्र या पद की दृष्टि से कोई छोटा नहीं है। सचमुच में कोई भी व्यक्ति चाहे कितना ही बड़ा हो, उनमें भी कौन ऐसा है जिसे कुछ न कुछ सीखना न हो। हमारे महापुरुषों और विदुषियों की यही महानता रही कि वे सदा अपने जीवन के अनुभवों से सीखते रहे। उनसे सीखते रहे, जिनसे वे मिले और उनमें आत्म-ज्ञान का विकास हुआ। शिक्षा परीक्षाएं पास करने से पूरी नहीं हो जाती। परीक्षाएं पास करना ठीक है, लेकिन पूरा जीवन ही एक परीक्षा है। मुश्किल से ही कोई दिन गुजरता होगा, जब आपको किसी चुनौती या परीक्षा का सामना न करना पड़ता होगा। कोई बात नहीं कि आपने वह परीक्षा उत्तीर्ण की हो या न की हो, लेकिन इस बारे में क्या सोचते होंगे। असली बात यह है कि जैसा कि आपका दिल गवाही दे कि आपने वह परीक्षा पास कर ली है या कम से कम आप ने उसके लिए पूरी कोशिश तो की। यह एक सवाल है जिसे आप में से हरेक अपने आप से पूछे। यदि आप कुछ करने की कोशिश करते हैं, दूसरों को दिखाने के लिए नहीं बल्कि अपने संतोष के लिए, तभी आपका कल्याण हो सकता है।

कर्म को उपासना समझें

कभी-कभी मैंने इस बात का जिक्र किया है कि मेरे पितामह ने उस समय मुझे क्या शिक्षा दी जब मैं एक छोटी बच्ची थी। उन्होंने कहा था, " दुनिया में दो प्रकार के लोग होते हैं। एक तो वे जो काम करते हैं और दूसरे वे जो उसका श्रेय लेते हैं। आप पहली श्रेणी में आने की कोशिश करें, क्योंकि ऐसे लोग बहुत कम होते हैं।" इसलिए मुझे उम्मीद है कि आप भी पहली श्रेणी में आने की कोशिश करेंगे और इस बात की परवाह नहीं करेंगे कि लोग आपकी प्रशंसा करते हैं या निंदा। अगर अगर आपको इस बात में यकीन है कि आप जो कुछ कर रहे हैं, वह ठीक कर रहे हैं। अगर आप इस बात से आश्वस्त हैं कि आप सही रास्ते पर चल रहे हैं, तो रास्ता कितना ही कठिन क्यों न हो, आप यह पाएंगे कि आप उसमें एक प्रकाश भर सकते हैं, न केवल अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी। और यही वह प्रकाश है जो हमें अपने देश के ऋषियों से विरासत में मिला है। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रो० बलराज मधोक

गाय और भारत

एशियाड में भाग लेने के लिए आए खिलाड़ियों और खेल अधिकारियों के लिए एशियाड के संचालकों ने गो-मांस खिलाने की भी व्यवस्था की थी। इसके पीछे एक दूषित मानसिकता है जिसका तथाकथित धर्मनिरपेक्षता और विदेशों में भारत की छवि के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। वास्तव में इसकी जड़ में हीन भावना, मुस्लिम तुष्टीकरण की भावना तथा भारत के इतिहास, परम्परा और संस्कृति से अनभिज्ञता ही है।

गोरक्षा—हमारी राष्ट्रीय परम्परा

गो संरक्षण और गो-हत्या तथा गोमांस खाने का निषेध भारत की परम्परा है। यह हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता की पहचान भी है। जब कभी भारत या उसका कोई राज्य स्वतन्त्र हुआ, उसमें गो-वध और गोमांस खाने पर रोक लगी। वास्तव में गोहत्या का निषेध हमारी स्वतन्त्रता की निशानी बन चुका है। भारतीय राजाओं की मुगलों तथा ब्रिटिश सरकार के साथ हुई सन्धियों से यह बात स्पष्ट झलकती है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गोरक्षा पर विशेष बल दिया था और गांधी जी का भी यह कहना था कि भारत के स्वतन्त्र होते ही देश में गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया जाएगा। सन्त विनोबा भावे भी अपने अन्तिम श्वास तक भारत में गोवध के पूर्ण निषेध पर बल देते रहे।

गो-संरक्षण और धर्मनिरपेक्षता

भारतीय हिन्दू राज्य इस्लामी या ईसाई राज्यों की तरह कभी मजहबी राज्य (थियोक्रेटिक स्टेट) नहीं रहे। जब संसार भर में मुसलमान और ईसाई मजहब के नाम पर मार-काट कर रहे थे, तब भी भारत में "सर्वधर्म-पंथ-समभाव" का बोलबाला था और ईसाई तथा मुस्लिम शासकों के अत्याचारों से पीड़ित यहूदियों और पारसियों को भारत में शरण मिलती रही। जब पारसी ईरान से भाग कर पहले-पहल गुजरात में आए तो वहां के हिन्दू राजा ने उन्हें अभयदान दिया, उन्हें अपने मजहब और पूजापद्धति की पूरी छूट दी। परन्तु एक शर्त लगाई। वह थी, "तुम गौ नहीं काटोगे और गो मांस नहीं खाओगे।" पारसियों ने इसे सहर्ष स्वीकार किया। जब महाराजा रणजीत सिंह ने अपनी सेना में कुछ ईसाई-फ्रांसीसी अफसर भरती किये, तब उन्होंने भी उन पर यही एक स्पष्ट शर्त लगाई। परन्तु उन्होंने अपने इन ईसाई कर्मचारियों के लिए स्वयं लाहौर में पहला गिरजाघर बनवा कर दिया। इससे यह स्पष्ट है कि गोवध के निषेध का तथाकथित "धर्मनिरपेक्षता" के साथ कोई विरोध नहीं।

गाय का दूध माता के दूध के समकक्ष माना जाता है। गाय भी अपने बच्चे को नौ महीने तक अपने गर्भ में रखती है। गाय का अपने बच्चे के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्यार मां के प्यार का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। इसीलिए हमारे पूर्वजों ने गाय को धरती और जन्म देने वाली माता के समान माता माना और इसके प्रति विशेष आदर रखने की परम्परा कायम की। तब से गाय हमारा मान-बिन्दु रही है और उसकी रक्षा के लिए बड़े से बड़े बलिदान किये जाते रहे हैं।

जो लोग गोहत्या निषेध और गोमांस न खाने को पोंगापंथी कहकर इसका उपहास करते हैं, वे भी किसी इस्लामी देश में सूअर का मांस खिलाए जाने की कल्पना तक नहीं कर सकते। परन्तु ऐसे लोग भारत को विशिष्ट परम्पराओं वाला देश नहीं मानते। वे तो इसे एक धर्मशाला समझे बैठे हैं जिस के एक हिस्से को काटकर अपने अधिकार में कर लेने वाले का भी शेष "धर्मशाला" पर बराबर का अधिकार बना रहता है। देश में बढ़ती हुई विघटनकारी प्रवृत्तियों और आन्दोलनों का भी यही कारण है।

राष्ट्रीय एकता का आधार

गऊों के प्रति माता का भाव हिन्दुस्तान की एकता का एक बड़ा आधार है। जहां हिन्दुत्व की भावना दुर्बल हुई और लोग गोरक्षक की जगह गोभक्षक बन गए, वह क्षेत्र भारत से निकल गया। सारा इतिहास इस बात का साक्षी है। इसलिए भारत में गोहत्या और गोमांस पर प्रतिबन्ध की मांग की उपेक्षा करना हिन्दुस्तान की एकता और अस्मिता के साथ खिलवाड़ करना है। गऊ और भारत का एक विशेष नाता है। इसे तोड़ने से केवल गोवंश का ही ह्रास नहीं होगा, अपितु भारत का भविष्य भी खतरे में पड़ जाएगा।

मेरी अभिलाषा : भारत अखंड हो

आदरणीय वेदभिक्षु: जी,
सादर चरणस्पर्श।

जन-ज्ञान मासिक (भाद्रपद २०३९) मैंने पढ़ा। स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार, डा. गौरीशंकर कोठारी (सूरतगढ़) द्वारा लिखित व अन्य लेख पढ़े। मैं एक छात्र हूं। मैं चाहता हूं कि भारत अखण्ड हो। इस्लाम एक कट्टर व पक्षपाती धर्म है। हिन्दू धर्म को छोड़कर अन्य सब धर्मावलम्बी भारत को अपना देश नहीं समझते—ऐसा मैंने भी महसूस किया है। न ही वे हमें एक देखना चाहते हैं? परन्तु क्या आप सच्चे हृदय से भारत को प्यार करते हैं? यदि ऐसा है तो ये हरिजन आपसे क्यों असन्तुष्ट हैं? क्या हिन्दुओं की बिरादरी एक है? क्या हिन्दुओं व हरिजनों का हुक्का-पानी एक है? क्या अपने ही भाइयों का शोषण करने वाले और अपनी भूल स्वीकार न करने वाले देश के दुश्मन नहीं? यदि नहीं तो राष्ट्रभक्ति क्या है? हमारी प्राचीन सभ्यता क्या है? यह निश्चित है कि किसी भी व्यक्ति को जिस धर्म, देश व जाति में सुख मिलेगा, वह उसी में रहना पसन्द करेगा। हरिजन भारत को अपना देश समझते हैं। यह सम्भव है कि हिन्दू व हरिजन एक हो जायें बशर्ते कि उनमें परस्पर विवाह सम्बन्ध और बिरादरी सम्बन्ध हों। अन्यथा विघटन के लिए हिन्दू ही जिम्मेदार होंगे? क्या आप एक हरिजन की अपेक्षा अन्य धर्म के मानने वाले को अधिक सम्मान नहीं देते? मेरे कालिज के साथी मुझे चमार कहकर चिढ़ाते हैं।

रमेश चन्द्र
रुड़की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमान अपनी रक्षा के लिए हथियार उठाएं

—इमाम बुखारी

दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी एक धर्मगुरु हैं। उनका काम जनता को शांति का पैगाम देना है न कि मुसलमानों में जहर फैलाना। बुखारी साहब ने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के छात्रों को सम्बोधित करते हुए जो जहरीला भाषण दिया, वह मैं यहां अलीगढ़ के साप्ताहिक 'शिकवा-शिकायत' समाचारपत्र से उद्धृत कर रहा हूं। इससे इमाम साहब की कलई खुल जायेगी। इमाम साहब के चमचे श्री बहुगुणा भी देखें कि उनके आका क्या हैं। फिरकापरस्तों के तलवे चाटने से देश आगे नहीं बढ़ेगा, यह हम सदैव कहते आये हैं। बहुगुणा, चन्द्रशेखर, वाजपेयी व सत्यपाल मलिक तलवाचाट नीति को छोड़कर राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनायें।

इमाम का जहर

अलीगढ़—दिनांक २०-१२-८२ को अब्दुल्ला बुखारी अलीगढ़ आया और रात के साढ़े आठ बजे उसने मुस्लिम यूनिवर्सिटी के कैनेडी हाल में मुस्लिम लड़कों की एक विशेष मीटिंग को सम्बोधित किया। जैसे ही बुखारी ने कैनेडी हाल में प्रवेश किया, त्यों ही 'अल्लाहो अकबर'—'इस्लाम जिन्दाबाद' के नारों से हाल गूंज उठा। बुखारी ने अपनी तकरीर श्रीमती गांधी की आलोचना से शुरू की और बताया कि १९८० में श्रीमती गांधी मेरे सहयोग और समर्थन से चुनाव जीती थीं। बुखारी ने यह भी बताया कि श्रीमती गांधी ने चुनाव से पहले बहुत वायदे किये थे, जिन्हें पूरा नहीं किया गया। केवल मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ को अल्पसंख्यक रूप दिया गया है, जिससे मुसलमान सहमत नहीं हैं। ज्यों ही बुखारी ने श्रीमती गांधी को बेवफा कहा, त्यों ही हाल तालियों की आवाज से गूंज उठा।

मुस्लिम विद्यार्थियों के बीच इस्लाम की व्याख्या करते हुए बुखारी ने इस बात पर जोर दिया कि अधिक से अधिक हिन्दुओं को मुसलमान बनाना ही इस्लाम की सेवा करना है। जब-जब बुखारी इस्लाम की तारीफ करता था, तब-तब अल्लाहो अकबर—इस्लाम जिन्दाबाद के नारे लगाकर उसका स्वागत किया जाता था। बुखारी का कैनेडी हाल का भाषण सिद्ध कर रहा था कि बुखारी अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में नहीं, बल्कि इस्लामाबाद की यूनिवर्सिटी में बोल रहा है। बुखारी ने लड़कों को यह भी बताया कि हरिजनों को पैसा देकर मुसलमान बनाओ, चूंकि हरिजन गरीब हैं और हमें अरब से इतना पैसा मिलता है कि हम पूरे हिन्दुस्तान के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की क्षमता रखते हैं। बुखारी ने मुस्लिम छात्रों को औरंगजेब की मिसाल देते हुए कहा कि जैसे औरंगजेब ताकत से हजारों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओं को मुसलमान बनाता था, वैसे ही आज मुस्लिम शासन स्थापित करने का हमारा हौसला होना चाहिए।

'बुखारी ने कहा कि मुरादाबाद में ईद के दिन हजारों मुसलमान मारे गये थे, जिनका दर्द आज भी हमारे दिल में है। उसके बाद उसने मेरठ के दंगे के बारे में बताया कि मेरा इरादा तो यह था कि मेरठ के हिन्दुओं को नेस्तनाबूद कर दिया जाये, लेकिन हम मेरठ में फेल हो गये और पी.ए.सी. ने हमारे मुस्लिम भाइयों को मौत के घाट उतार दिया। बुखारी ने बड़ौदा के मुसलमानों की तारीफ की और कहा कि अलीगढ़ के मुसलमानों को भी बड़ौदा के मुसलमानों की तरह पी.ए.सी. के खिलाफ जेहाद बोलना चाहिए। बड़ौदा के मुसलमानों ने जसपाल सिंह पुलिस कमिश्नर को हटाकर यह सिद्ध कर दिया है कि अगर इन्दिरा गांधी को या किसी राजनीतिक पार्टी को जिन्दा रहना है तो मुसलमानों की बात माननी पड़ेगी। हिन्दुस्तान के हिन्दू राजनीतिज्ञों को कामयाबी तभी मिल सकती है, जब वे मुसलमानों के साथ बनाकर चलें। बुखारी ने धर्मनिरपेक्षता के बारे में कहा कि हमारे कुरान में धर्मनिरपेक्ष शब्द नहीं है। हम कट्टर मुसलमान हैं। इस्लाम के नाम पर मरना और जीना तथा इस्लाम को फैलाना ही सच्चे मुसलमान की जिन्दगी है। उठो, वक्त आ गया है, तमाम दुनिया के मुसलमान तुम्हारा जौहर देखने के लिए बेचैन हैं। मुसलमानों ने तलवार की नोक पर शासन किया है और करेंगे, यही इरादा बनाये रखना चाहिये। यह यूनिवर्सिटी मुसलमानों की है। खुदा का शुक्र है कि हिन्दुस्तान में एक ऐसी बेहतरीन जगह मिली है, जहां से हम इस्लाम की खिदमत कर सकते हैं।

'बुखारी ने कहा कि मेरी निगाह तुम्हारी ओर रहती है। जैसी भी जरूरत हो, मेरे पास आना। इन्शा अल्लाह सभी बरकतें पूरी होंगी। बुखारी ने अपनी तकरीर में बार-बार बदला लेने की बात पर जोर दिया और कहा कि मरे हुए मुसलमानों की मय्यतें कब्र में पड़ी हुई इस बात का इन्तजार कर रही हैं कि तुम कब बदला लोगे, खुदा हाफिज।'

हिन्दुओं पर बुखारी की तकरीर का काफी असर पड़ा है, लेकिन इसके बावजूद हिन्दू नगर में शान्ति बनाए रखने में यकीन करते हैं। हिन्दू शासन और प्रशासन से मांग करते हैं कि बुखारी पर पाबन्दी लगाई जाये कि वह भविष्य में अलीगढ़ न आये, अन्यथा फिजा खराब होने की सम्भावना है, क्योंकि वह मुसलमानों को भड़का रहा है। सवाल इस बात का है कि प्रशासन ने बुखारी को अलीगढ़ में घुसने की इजाजत क्यों दी? दो कौड़ी के एक कठमुल्ले ने इतनी हिम्मत की कि वह हिन्दुओं को चुनौती देकर भी सही सलामत वापिस चला गया। प्रशासन को आगाह किया जाता है कि भविष्य में बुखारी को अलीगढ़ में घुसने की इजाजत न दी जाये अन्यथा परिणाम गम्भीर होंगे।

हिन्दुओं की सुरक्षा में रहते हुए हिन्दुओं को निगलने के मनसूबे बनाना कृतघ्नता है। इनमें इतना ही साहस है तो पाकिस्तान जायें और वहां की सरकार के विरुद्ध तथा बहुसंख्यकों के विरुद्ध ऐसी बातें कहें। इनकी नंगी कमर पर कोड़े पड़ेंगे। जेलखाना अलग होगा। भारत में सैक्युलरिज्म की अंगीठी पर अपनी रोटी सेकने वाले समझ लें कि वे दिन खत्म हो गये जब खलीलखां फाख्ता उड़ाते थे। अब यहां रहना है, तो शांति से रहें।

—वि० स० विनोद

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या अस्तित्व रक्षा की चिन्ता साम्प्रदायिकता है ?

—डॉ. राजेश्वर

धीरे-धीरे स्थिति बदल रही है। भ्रम दूर हो रहा है। अन्यथा हम स्वयं को हिन्दू कहने में भी संकोच अनुभव करते थे। अभी भी हमारे बीच बहुत-से लोग हैं जो हिन्दू शब्द से ही चौंक पड़ते हैं—मानो इस शब्द से कुछ हीन भावना की गंध आती हो—पिछड़ेपन अथवा समाज को कलुषित करने वाली साम्प्रदायिकता की बू आती हो। किन्तु यह एक तथ्य है कि गत कुछ दिनों से यह शब्द वातावरण में गूंजने लगा है। वस्तुतः यह गूंज एक विशेष परिस्थिति के कारण उठ रही है। वह विशेष परिस्थिति है हिन्दू समाज की अस्तित्व-रक्षा की चिन्ता। हिन्दुस्थान की जो आधुनिक सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थिति है, इतिहास के आलोक में उसके अवलोकन से यह स्पष्ट दीखता है कि यहां के हिन्दू समाज के अस्तित्व पर बहुत तेजी से यह प्रश्न-चिह्न उभर रहा है। यदि हिन्दू समाज अतिशीघ्र संघबद्ध एवं सतेज होकर उठ खड़ा नहीं हुआ, तो निश्चय ही अगले १५-२० वर्षों में उसका अस्तित्व संकट में पड़ जायेगा, जिससे उसकी रक्षा कठिन हो जायेगी। इस समाज में आज हिन्दू शब्द की जो गूंज-अनुगूंज सुनाई पड़ रही है, वस्तुतः वह उपर्युक्त परिस्थितियों का ही परिणाम है।

कुछ भी हो, हिन्दू समाज से अभी संकोच का वह भाव गया नहीं, जिसका मैंने ऊपर उल्लेख किया है। साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य है कि यह संकोच शीलजन्य संकोच नहीं, वरन् ग्लानिजन्य संकोच है। ऐसा क्यों? क्या सचमुच हम ग्लानिजन्य संकोच के योग्य हैं? ग्लानि योग्य वह समाज हो सकता है, जिसने संकुचित स्वार्थ के लिए संसार को क्षति पहुंचाई हो, जिसने अपने संकुचित हित के लिए छल से, बल से परहित पर आघात किया हो। हमने तो कभी ऐसा आचरण नहीं किया। हमसे सदा संसार का कल्याण ही हुआ है। स्वार्थ-साधन के लिए हमने कभी किसी पर प्रभुता स्थापित नहीं की। आत्मरक्षार्थ प्रत्याक्रमण के अतिरिक्त (बल रहते हुए भी) हमने कभी किसी को छेड़ा नहीं। 'कृण्वन्तो विश्मार्यम्' का भी हमने संकल्प लिया तो विशुद्ध कल्याण की दृष्टि से। संसार का कल्याण हिन्दू दृष्टि की मूल धारा रही है।

हमने विश्व को अनेक प्रकार से गौरवान्वित किया है। वेदोपनिषद् विश्व को हमारी अनुपम देन है। भगवान् बुद्ध, स्वामी दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी विवेकानन्द मानव समाज की शोभा हैं। हमने आक्रमणकारियों को भी अनेक बार क्षमा किया है, वैरियों की स्त्रियों का भी सम्मान किया है, उनके बच्चों को भी सकुशल उनके शिविरों तक पहुंचाया है। अन्यों में ऐसा आचरण इतिहास में दुर्लभ है। वस्तुत: हिन्दू समाज धरती पर सर्वाधिक गौरवमण्डित समाज है। अत: ग्लानि का कोई कारण नहीं। हमारी पराजय के पश्चात् विदेशी सत्ता ने विगत हजार वर्षों में इतिहास को तोड़-मरोड़ कर यह भाव हमारी चेतना में समाविष्ट किया है। अत: हम जिस संकोच अथवा ग्लानि का अनुभव करते हैं, वह नितान्त भ्रमपूर्ण है। वास्तविकता से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। हां, यह ठीक है कि विगत एक हजार वर्षों में हम कुछ विदेशी बर्बर जातियों के पशु-बल एवं छल-बल के समक्ष टिक न सके, जिससे हम परतंत्र हो गए। उन्होंने हमारे शिक्षण-संस्थानों को नष्ट कर दिया। धीरे-धीरे हमारा स्वतंत्र विवेक नष्ट हो गया और हमारे जातीय जीवन में अनेक दुर्गुण आ घुसे। विगत एक हजार वर्ष हमारे जातीय जीवन में घोर अंधकार का युग रहा है। इस बीच विदेशी सत्ता ने इतिहास को विकृत करके हमें सिखाया कि तुम निर्बल, बिखरे, संकीर्ण तथा पिछड़े रहे हो। हमने भी इसे ऐतिहासिक सत्य के रूप में स्वीकार कर लिया। हिन्दू समाज में ग्लानि भाव का वस्तुत: यही आधार है। किन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिस समाज ने हजारों-हजार वर्षों तक विश्व को उजाले में रखा हो, संसार को कल्याणोन्मुख एवं गौरवान्वित किया हो, यदि वह अन्यों के छल-बल के कारण कुछ शताब्दियों तक स्वयं अंधेरे में आ गया हो, तो यह उन लोगों के लिए ग्लानि का विषय है, जिन्होंने विश्व के इस स्निग्ध प्रकाश पुंज को अपनी कोरी भौतिक सुख-सुविधा के लिए नष्ट कर देना चाहा। हिन्दू समाज ने कभी ऐसा कदाचरण नहीं किया। सेव्य की इसने कभी उपेक्षा नहीं की। श्रद्धास्पद वस्तु को इसने ईर्ष्या से कभी नष्ट नहीं किया। अत: हम ग्लानि के योग्य हैं—ऐसी मानसिक स्थिति का हमें पूर्णत: परित्याग कर देना चाहिए।

जब मेरी दृष्टि अपने इतिहास पर जाती है, तो उसकी विकृतियों को देखकर रोना आता है—चिन्ता होती है। आधुनिक काल के अब तक प्रचलित इतिहास से दो ही बातें मूलत: सामने आती हैं—एक तो यह कि हिन्दू सदा से निर्बल, पिछड़े तथा दुर्गुणों से पूर्ण रहे हैं, जिन्हें जिसने पाया पददलित किया, शासित किया तथा दूसरी यह कि यहां जो कुछ भी गौरव का विषय है – वह सब विदेशियों की देन है। यह सोचने की बात है कि यदि हम सचमुच सदा निर्बल, पिछड़े तथा दुर्गुणों से पूर्ण थे तो हमने अनुपम साहित्य, महान् चिन्तकों, महान् सम्राटों एवं महान् पुरुषों को कैसे उत्पन्न किया ? आज हमने संविधान भी पूरा का पूरा उधार लिया है—मानो हमने कभी समाज को समेट कर चलाया ही नहीं, मानो सामाजिक व्यवस्था से हम पूर्णत: अनभिज्ञ थे। किन्तु ध्यानपूर्वक देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि अब तक के जीवन में अनेक बार हमने ऐसी सामाजिक-राजनैतिक व्यवस्था दी है, जैसी अन्यत्र खोजने से भी नहीं मिलती। यदि हम सचमुच सदा से निर्बल थे, तो क्या कारण है कि जिस इस्लाम ने केवल दो सौ वर्षों में आधे यूरोप एवं अफ्रीका के उत्तरी भाग के अनेक देशों को अपनी लहरों में डुबो दिया, उसी इस्लाम की लहरें लगभग सात सौ वर्षों के सतत संघर्ष के बाद भी सिन्धु में ही आकर विलीन हो गयीं। सिंध एवं पंजाब पर भी १९४७ के पहले तक उसका पूर्ण आधिपत्य न हो सका ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहते हैं कि ताजमहल शाहजहां ने बनवाया, कुतुब मीनार कुतुबुद्दीन ने बनवाई, फतहपुर सीकरी अकबर ने बनवाया—बसाया—आदि-आदि। ध्यान तो दीजिए। हिन्दू जाति को ऐसी समृद्ध भूमि मिली, जहां अभाव का कभी नाम न रहा। ऐसी प्रकृति, ऐसा वातावरण, ऐसी ऋतुएं, ऐसी नदियां, ऐसे पर्वत, ऐसे वन, इतने प्रकार के अन्न-फल-फूल, इतनी खनिज सम्पदा, ऐसी वसुन्धरा—किसी अन्य जाति को उपलब्ध नहीं। तभी तो इसके गर्भ से ऋचाएं उद्भूत हुईं, तभी तो इस पुण्यभूमि ने अनेकानेक अलौकिक महापुरुषों को जन्म दिया और तभी तो हमने इस भूमि को स्वर्गादपि गरीयसी माना। किन्तु आश्चर्य की बात है कि जिस भूमि की स्वर्गादपि गरीयसी मातृ-भूमि के रूप में हमने चरण-वन्दना की, जिसकी समृद्ध गोद में हम फूले-फले, जिसके सौम्य, स्निग्ध वातावरण में हमने सहस्रों वर्षों तक शान्त-समृद्ध साम्राज्य का उपभोग किया, जहां सभी कलाओं का हमने विकास किया, उस पुण्यभूमि को शोभामंडित करने के लिए तथा अपने विकास के अहं की तृप्ति के लिए हमने इस धरती पर कुछ भी खड़ा न किया। किन्तु उन बर्बर जातियों ने, जिनके पास अब तक शिक्षा का अभाव है, जिनके सम्राट् भी प्रायः निरक्षर ही हुए, जिनके जीवन में न बाहर शान्ति रही, न भीतर, जो अपने पैर जमाने के लिए सतत युद्ध में ही संलग्न रहे, जो बाप-बेटे तथा भाई-भाई में संघर्षरत रहे तथा जिन्होंने इस पुण्यभूमि को कभी मातृभूमि न माना, उन्होंने इस धरती को अपनी सुरुचि एवं सृष्टि-सामर्थ्य से सुशोभित कर दिया, विध्वंसक ने अल्पावधि में सारी सृष्टि कर डाली, किन्तु सृष्टि-साधन-सम्पन्न जाति ने सुदीर्घ अवधि में भी कुछ न किया। ऐतिहासिक विकृतियों की इस विडम्बना पर किसे हंसी न आएगी? चिन्ता होती है यह देखकर कि अपने लोग निजी स्वार्थों के कारण इन ऐतिहासिक विकृतियों को चलाये चले जा रहे हैं।

अनेक लोगों का विश्वास है कि अंग्रेजों का युग हमारे देश में वरदान-स्वरूप आया। किन्तु इस तथ्य पर उनका ध्यान नहीं जाता कि मैकाले ने इस शिक्षा के माध्यम से हमारी संस्कृति के मूलोच्छेद का प्रयत्न किया तथा संस्कृति के विनाश से उस जाति का ही विनाश हो जाता है। इस सम्बन्ध में मैकाले का अपने पिता से पत्राचार देखने योग्य है। शिकारी चिड़ियों को चुगने के लिए दाने देता है—कितना सुखद! कैसा अनुकूल अवसर! पर अन्तर में कैसी घोर घात। फंसने पर चिड़िया तो दानों के रहस्य को समझ जाती है, किन्तु मैकाले के दानों को हम अब तक न समझ पाये। उसी शिक्षा का प्रभाव है कि मातृभूमि को भी बेच खाने में हम लज्जा का अनुभव नहीं करते। यह उसी शिक्षा का प्रभाव है कि जब हम हिन्दू जाति—हिन्दू संस्कृति की सुरक्षा की चिन्ता करते हैं तो हमारे ही अनेक बन्धु यह कहते हैं कि ये सब साम्प्रदायिकता की बातें हैं। उन बन्धुओं को मैं कैसे समझाऊं कि हिन्दू साम्प्रदायिक हो ही नहीं सकता। हमारे पूर्वजों ने "अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्'—सर्वे भवन्तु सुखिनः'—'आत्मवत् सर्वभूतेषु'—'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' आदि श्लोकों और मंत्रों से हमें अब तक मंत्र-मुग्ध कर रखा है। पृथ्वीराज ने आक्रमणकारी मुहम्मद गौरी को सोलह बार क्षमा किया, किन्तु उन्हें गौरी से एक बार भी क्षमा न मिली। हिन्दुस्थान ने बार-आक्रमण करने वाले पाकिस्तान को अभी कुछेक वर्ष पूर्व जीती हुई भूमि लौटा दी। क्या पाकिस्तान ने हमारे कश्मीर के अधिकृत भाग के सम्बन्ध में अब तक इस दृष्टि से कभी सोचा भी है? हिन्दुस्थान ने पाकिस्तान के एक लाख बंदी सैनिकों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को सकुशल लौटा दिया। क्या पाकिस्तान ने कभी ऐसा आचरण किया है? देश विभाजन के समय ही करोड़ों की सम्पत्ति से लदे हमारे दो पोतों को पाकिस्तान ने बलपूर्वक कराची में रोके रखा था तथा आश्वासन के बाद भी उन्हें हमें नहीं लौटाया। वस्तुत: दोनों संस्कृतियां नितान्त विपरीत प्रकृति की हैं। परहित हिन्दू संस्कृति की मूल प्रकृति है—सबों की राख पर निजहित इस्लाम का मूल मंत्र। आज हमारे समाज में हिन्दू शब्द की जो गूंज-अनगूंज है—वह वस्तुत: इतिहास के कटु-मधु के दंश की देन है। आज हिन्दुस्थान की जो सामाजिक-राजनैतिक स्थिति है, उसे देखते हुए हिन्दू चेतना चिन्तित हो उठी है कि वह अपने अस्तित्व की रक्षा कैसे करे?

मुसलमानों की संख्या तेजी से बढ़ रही है—बढ़ाई जा रही है। हिन्दुओं की घट रही है—घटाई जा रही है। मुसलमान संगठित हैं, हम बिखरे हुए हैं। वे अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित हैं, हम निहत्थे हैं। वे सचेत हैं, हम अचेत। सन् १९४७ की दर्दनाक घटनाओं के आलोक में उपर्युक्त परिस्थितियों का परिणाम स्पष्ट है। किन्तु कैसा दुर्भाग्य है कि हम अब भी नहीं जाग रहे। कब जागेंगे?

आप बधाई के पात्र हैं!

आदरणीय बहिन पंडिता राकेश रानी जी एवं वेदभिक्षु जी,

आपके जन-ज्ञान के पढ़ने के लिए काफी उत्साहित रहता हूं। खाना पीना भी छोड़ देता हूं। अब तक देशभक्तों की कहानियां सुनते थे, परन्तु अब आंखों से देख रहे हैं। आप को कहां तक बधाई दूं, लिख नहीं सकता। अब मुख्य अभिलाषा के रूप में परम पिता परमात्मा से आपकी रक्षा की प्रार्थना सुबह-शाम करते रहते हैं। आप ने सोते समाज को जगाया है। भगवान् आपकी आयु में वृद्धि करे। अपने देश के हिन्दू समाज में जो जोशीला लहू था उसे यवनों व ईसाइयों ने बुरी तरह नष्ट कर दिया। लेकिन दैव शक्ति से आशा है कि वह राई को पर्वत और पर्वत को राई कर देता है। उसकी माया का किसी ने पार नहीं पाया। जन-ज्ञान के सम्पादक के रूप में आपकी योग्यता पर एक दम अचम्भा होता है। भगवान् आपकी, मनः कामना को सफल करे। अपनी बुद्धि अनुसार जो कुछ करना चाहिये करूंगा। इसमें किसी पर अहसान नहीं, अपना ही कर्तव्य है।

आपका भाई
रूपकिशोर बरन् वाल

नयागंज पुरा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अकालियों के षड्यन्त्र का भंडाफोड़ करें

देशवासियों से प्रो० शेरसिंह की अपील

रोहतक। हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष और हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रोफ़ेसर शेरसिंह ने समाचारपत्रों के नाम निम्नलिखित वक्तव्य जारी किया है—

'सेक्युलरिज्म' का अर्थ है सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव रखना। सब साम्प्रदायिक आतंकवादियों के सामने समान रूप से घुटने टेकने का नाम 'सेक्युलरिज्म' नहीं है। धर्म की मूल प्रेरणा है करुणा और परदुःखकातरता। निजी स्वार्थ और सुख-सुविधाओं को भूलकर विपत्तियों से ग्रस्त मानवता की रक्षा व सेवा के रूप में जब यह 'करुणा' प्रकट होती है—वही धर्म है। कुछ को अपना मानकर उनके लिए उल्टे-सीधे हर तरीके से बड़ी-बड़ी सुविधाएँ बटोरना और शेष सबको 'पराया' मानकर उन्हें साधारण न्याय से भी वंचित करना तो 'कम्युनलिज्म' है। हर धर्म की दृष्टि से ऐसा व्यवहार हेय और पाप है।

क्रूर, लालची और पापान्ध शासकों के अत्याचारों से पीड़ित मूक प्रजा की रक्षा के लिए ही तो हमारे महान् गुरुओं ने अपना सुख-चैन ही नहीं, अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए। इतने ऊँचे त्याग व बलिदान की दूसरी मिसाल इतिहास में मिलनी कठिन है। लेकिन हमारे अकाली भाइयों का आचरण हरयाणा ही क्या, सारे देश के प्रति 'गुरुओं' की इस सीख से ठीक उल्टा है। अपने भाई व पड़ोसी का बुनियादी हक तक अन्यायपूर्वक हड़पने वाले और आतंक के सहारे अपनी मनमानी करके विशेषाधिकार चाहने वाले लोग भला 'गुरुओं' के सच्चे 'शिष्य' (सिख) कैसे हो सकते हैं? अकाली भाइयों का अन्याय और आतंक के सहारे चलने वाला 'मोर्चा' 'धर्मयुद्ध' नहीं, बल्कि 'पाप युद्ध' है। इसे धर्मयुद्ध का नाम देना धर्म का मान घटाना है। अपने अकाली भाइयों से मेरी हार्दिक विनय है कि वे भेदभाव की नीति को छोड़कर प्रेम और न्याय का रास्ता अपनाकर 'गुरुओं' का यश और गौरव बढ़ाएँ।

लेकिन अगर हमारे अकाली भाई हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान न दें तो हमें याद रखना होगा कि अत्याचार करने से भी बढ़कर पाप है अत्याचार सहना। राष्ट्र की एकता और हरयाणावासियों के हितों की रक्षा के लिए यदि हम अकाली मोर्चे का डटकर जवाब नहीं देते, तो हम पापी ही नहीं, महापापी होंगे। देश के भीतर साम्प्रदायिक शक्तियों और विदेश में भारतविरोधी ताकतों से सांठगांठ करके देश को तोड़ने और कमजोर करने वाली जो नीति हमारे अकाली भाइयों ने पकड़ी है उसे हम हरगिज नहीं चलने देंगे, यह हमारी घोषणा है। प्रत्येक देश-भक्त भारतवासी से हमारा निवेदन है कि इस षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ करके अपने कर्त्तव्य का पालन करे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लौह पुरुष सरदार पटेल ने कहा था !

सिख यह सोच लें कि शेष भारत में एक भी सिख नहीं रहेगा !

आज लौह पुरुष राष्ट्रनिर्माता सरदार वल्लभभाई पटेल जैसी सूझबूझ रखने वाले राष्ट्र नेता की आवश्यकता है। अंग्रेजों ने भारत में फूट डाल कर पाकिस्तान का तो निर्माण कर ही दिया था, परन्तु साथ ही वे कुछ रियासतों व रजवाड़ों को भी उकसा कर भारत के और भी टुकड़े करवाना चाहते थे। लेकिन सरदार ने निजाम हैदराबाद जैसों से घुटने टिकवा दिए। वे नीति और बुद्धि के धनी थे। आज ऐसे निर्भीक और युक्तियुक्त उत्तर देने वाले नेता की आवश्यकता है। अकालियों का एक प्रतिनिधिमण्डल जब उनसे मिला और उसने कहा कि "मुसलमानों को मिला पाकिस्तान, हिन्दुओं को मिल गया हिन्दुस्तान, पर सिखों को क्या मिला ? इसलिए हमें सिखिस्तान मिलना चाहिए।" उत्तर में स. पटेल ने कहा था—"सरकार इस बारे में जल्दी ही कुछ करेगी।" यह भी कहा कि "अकाली सिख होमलैण्ड के लिए बड़े उतावले हैं। उन्हें चाहिए कि वे रक्षामन्त्री स० बलदेव सिंह को मना लें। उन्हें सिखिस्तान मिल जाएगा पर "सिख यह सोच लें कि शेष भारत में एक भी सिख नहीं रहेगा। सेना एवं अन्य नौकरियों से सभी सिखों को निकल जाना होगा। यह सिखों को सोचना है कि उन्हें भारत में रहने से अधिक लाभ है या सिखिस्तान लेने में ?"

इस उत्तर के आगे किसी की और बात करने की हिम्मत नहीं हुई। खेद है कि अकालियों को दो-टूक उत्तर देने वाले सरदार पटेल आज जीवित नहीं हैं। ●

मेरठ में २० बम बरामद

मेरठ। मुहल्ला पुर्वा इलाहीबख्श के एक नाले के पास से पुलिस ने बीस जीवित देसी बम बरामद किए। इस संबंध में अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हो सकी।

पुलिस उप-अधीक्षक श्री एल० पी० मिश्र ने बताया कि इस क्षेत्र में अवैध विस्फोटकों व हथियारों की तलाशी का कार्य किया जाना था। उससे पूर्व ही इन बमों को नाले में फेंकने का असफल प्रयास किया गया। होटलों, चाय की दूकानों, क्लबों, बस स्टापों आदि पर अपराधियों की खोज की गई। इसके साथ ही प्रत्येक प्रकार के वाहनों की बारीकी से जांच की गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन्मदात्री के प्रति

--जयभगवान् आर्य

शक्ति-रूप भण्डार है नारी, मत अबला समझ नादान इसे।
दस लाख उपाध्याय सम माता, सब कहते हैं विद्वान् इसे ॥
नारी उत्तम रचना की, जब ईश्वर ने संसार रचा,
पुत्र-पुत्री रतन की खातिर कैसा अनुपम भण्डार रचा,
माता बहिन पुत्री और पत्नी सबका इसमें प्यार रचा,
आंखों में गंगा-यमुना आंचल में शिशु आहार रचा,
पांव की जूती घर की कुतिया, फिर कहते क्यों शैतान इसे ॥१॥
स्नेह दया सन्तोष सरलता नारी में विद्यमान रहें,
शुद्ध भावना रूप और लज्जा सौन्दर्य प्यार उपादान कहें,
धैर्य शान्ति श्रद्धा ममता और शील रतन की खान कहें,
निःस्वार्थ भाव और प्रेम भाव इसके दिल की पहचान कहें,
भव सागर की तरणी है, कहें जीवन पथ का विश्राम इसे ॥२॥
यदि नारी रूपी बन्धन न हो मानव पागल बन जाता,
संसार रूप इस वन में घूम कर दर-दर की ठोकर खाता,
स्वर्ग के सौन्दर्य की लाली परलोक की है मुक्तिदाता,
भूले-भटके आ जाएं पथ पर दो चक्षु दीप दिए दान इसे ॥३॥
बिन नारी के इस जग में कोई काम पूर्ण नहीं हो पाता,
जहां इज्जत न हो नारी की श्मशान समान घर बन जाता,
प्रेमाश्रु ने घेरा जग को ज्यों जल ने घेरी धरती माता,
चिन्ता दुःख दुर्गुण से मानव इस मधुर सरिता में सुख पाता,
कवियों के लिए कला वृक्ष, प्रेमियों की प्रतिमा जान इसे ॥४॥
कहीं यमी शची श्रद्धा लक्ष्मी कहीं पार्वती सीता है,
कहीं सत्यवान् सावित्री, रोहिणी गायत्री गीता है,
कहीं लोमशा उलूपी पोलीमि अनसूया उर्वशी अनीता है,
पन्ना दाई लक्ष्मीबाई का इतिहास सदा को जीता है,
हम सबकी है जन्मदात्री पति परायण जान इसे ॥५॥
जन्मदात्री इस माता ने पैदा वीर बलवान् किए,
हरिश्चन्द्र दधीचि से दानी गौतम कपिल विद्वान् किए,
हनुमान् अंगद से योद्धा अर्जुन कृष्ण श्रीराम किए,
सुभाष भक्तसिंह अभिमन्यु हकीकत से बलिदान किए,
जयभगवान् मेरी बात मान कर सुबह शाम कर प्रणाम इसे,
दस लाख उपाध्याय सम माता सब कहते हैं विद्वान् इसे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय दर्शनशास्त्रों पर एक दृष्टि

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

जब से मनुष्य का इस धरा-धाम पर प्रादुर्भाव हुआ, तभी से उसने सोचना आरम्भ किया—मैं कौन हूं ? कहाँ से आया हूं ? मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है ? यह संसार क्या है ? इस संसार से मनुष्य का छुटकारा कैसा हो सकता है ? यह सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई ? इस सृष्टि का स्रष्टा कौन है ? सुख की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? परमात्मा की उपलब्धि कैसे हो सकती है ? आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का परस्पर क्या सम्बन्ध है ? ये और इस प्रकार के न जाने कितने प्रश्न उसके हृदय और मस्तिष्क में चक्कर काटते रहे। तत्त्वदर्शियों के मत में मनुष्य को इन विषयों का तत्त्वज्ञान हो सकता है। इसी तत्त्वज्ञान को भारतीय मनीषियों, चिन्तकों और विचारकों ने 'दर्शन' की संज्ञा प्रदान की है। तत्त्वज्ञान होने पर कर्म मनुष्य को बन्धन में नहीं डालते। तत्त्वज्ञान मनुष्य को कर्म-बन्धन से छुड़ा, प्रकृति और पुरुष का विवेक कराकर मानव-जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचा देता है।

व्युत्पत्ति-शास्त्र के अनुसार दर्शन का अर्थ है—

दृश्यतेऽनेन इति दर्शनम्—जिसके द्वारा देखा जाए। क्या देखा जाए ? वस्तु का तात्त्विक स्वरूप। इस जगत् का सच्चा स्वरूप क्या है ? यह जड़ है या चेतन ? इस संसार में हमारा कर्तव्य क्या है ? जीवन को श्रेष्ठ, सुन्दर और सुखी बनाने के साधन क्या हैं ? हम कौन हैं ? परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? इन और इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना दर्शनों का कार्य है।

अर्थशास्त्र के प्रणेता कौटल्य का कहना है—

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता।। (कौ० अ० २।१३)

यह आन्वीक्षिकी विद्या सब विद्याओं का प्रदीप, सब कार्यों का साधनभूत तथा सब धर्मों का सदा आश्रयभूत मानी गई है।

पाश्चात्य विचारधारा वाले दर्शन के लिए 'फ़िलॉसॅफ़ी' (Philosophy) शब्द का प्रयोग करते हैं। 'फ़िलॉसॅफ़ी' दो ग्रीक शब्दों के मेल से बना है—फ़िलॉस+सोफ़िया। 'फ़िलास' का अर्थ है प्रेम, अनुराग और 'सोफ़िया' का अर्थ है 'विद्या।' इस प्रकार इस शब्द का अर्थ हुआ विद्या का प्रेम— विद्यानुराग। आरम्भ में 'फ़िलॉसॅफ़ी में विज्ञान का भी समावेश था, परन्तु आजकल पाश्चात्य देशों में दर्शन और विज्ञान का पार्थक्य स्पष्ट कर दिया गया है।

भारतीय दर्शन की खोज का विषय रहा है 'आत्मा'। उपनिषदों ने घोषणा-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूर्वक कहा – **आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः ।** वह आत्मा ही जानने-योग्य, दर्शन करने योग्य है ।

बृहदारण्यक उपनिषद् (२।४) में एक प्रसिद्ध कथा है । जब दार्शनिक-शिरोमणि याज्ञवल्क्य गृहस्थाश्रम का परित्याग कर संन्यास में प्रविष्ट होने लगे, तब उन्होंने अपनी भार्या मैत्रेयी को बुलाकर कहा—'मैं इस गृहस्थाश्रम में पड़े रहना नहीं चाहता, मैं परलोक साधन करना चाहता हूं । आओ, मैं कात्यायनी और तुम्हारे लिए अपने धन का विभाजन कर दूं ।' याज्ञवल्क्य की बात सुनकर विदुषी मैत्रेयी ने पूछा —'यदि यह सारी पृथिवी धन-धान्य से परिपूर्ण होकर मेरी हो जाए तो **'कथं तेनामृता स्याम्'** क्या मैं उससे अमरत्व को प्राप्त कर सकूंगी ?' महर्षि ने उत्तर दिया —'जैसे साधन-सम्पन्न व्यक्ति सुख-चैन से जीवन निर्वाह करते हैं, वैसा ही तुम्हारा जीवन भी हो जाएगा' **'अमृतत्वस्य तु न आशा अस्ति वित्तेन'** धन-धान्य से अमरत्व पाने की तो तनिक भी आशा नहीं है ।' मैत्रेयी ने कहा --**'येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्'**— जिस धन से अमरत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती उसे लेकर मैं क्या करूँगी ।' इस उत्तर को सुनकर दार्शनिक-शिरोमणि याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को जो आध्यात्मिक उपदेश दिया, वह भारतीय धर्म तथा दर्शन के इतिहास में सदा अमर रहेगा । उन्होंने कहा —

"पति पति के लिए प्यारा नहीं होता, अपितु आत्मा के लिए । पत्नी पत्नी के लिए प्रिय नहीं है, प्रत्युत आत्मा के लिए । पुत्र पुत्र के लिए प्यारे नहीं होते, अपितु आत्मा के लिए प्रिय होते हैं । संसार की समस्त वस्तुएँ उनके लिए प्रिय नहीं होतीं, अपितु आत्मा के लिए प्रिय होती हैं, अतः सबसे प्रिय वस्तु आत्मा है—

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम् ॥

'मैत्रेयी ! उस आत्मा का ही दर्शन करना चाहिए, श्रवण करना चाहिए, मनन करना चाहिए और निदिध्यासन (निरन्तर ध्यान) करना चाहिए, क्योंकि आत्मा के दर्शन, श्रवण, मनन तथा विज्ञान से सब कुछ जाना जा सकता है ।'

आत्मतत्त्व का श्रवण करना चाहिए श्रुति वाक्यों से, मनन करना चाहिए तार्किक युक्तियों से और निदिध्यासन करना चाहिए योग-प्रतिपादित उपायों से ।

भारतीय दर्शनों को दो भागों में विभाजित किया गया है— आस्तिक और नास्तिक । चारवाक, जैन और बौद्ध — ये तीनों नास्तिक दर्शन हैं । न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और वेदान्त — ये छह आस्तिक दर्शन हैं ।

कुछ लोगों का विचार है कि भारतीय दर्शनों में परस्पर विरोध है । परन्तु यह विचार ठीक नहीं है ।

दार्शनिक शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती इस विषय में लिखते हैं—

'जैसे एक विद्या में अनेक विद्या के अवयवों का एक-दूसरे से भिन्न प्रतिपादन है, वैसे ही सृष्टि-विद्या के भिन्न-भिन्न छह अवयवों का छह शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं । जैसे घड़े के बनाने में कर्म, समय, मिट्टी, संयोग-वियोगादि का पुरुषार्थ, प्रकृति के गुण और कुम्भकार कारण हैं, वैसे ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सृष्टि का जो कर्म कारण है उसकी व्याख्या मीमांसा में, समय की व्याख्या वैशेषिक में, उपादान कारण की व्याख्या न्याय में, पुरुषार्थ की व्याख्या योग में, तत्त्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या सांख्य में और निमित्त कारण जो परमेश्वर है, उसकी व्याख्या वेदान्त शास्त्र में है। इससे कुछ भी विरोध नहीं है। जैसे वैद्यक-शास्त्र में निदान, चिकित्सा, औषधदान और पथ्य के प्रकरण भिन्न-भिन्न कथित हैं परन्तु सबका सिद्धान्त रोग की निवृत्ति है, वैसे ही सृष्टि के छह कारण हैं। इनमें से एक-एक कारण की व्याख्या एक-एक शास्त्रकार ने की है। इसलिए इनमें कुछ भी विरोध नहीं।'

— सत्यार्थप्रकाश, तृतीय समुल्लास

आगे चलकर सृष्टि-प्रकरण में ऋषिवर लिखते हैं —

'विरोध उसको कहते हैं कि एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्धवाद होवे। छह शास्त्रों में अविरोध देखो इस प्रकार है—मीमांसा में—"ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नहीं होता कि जिसके बनाने में कर्म-चेष्टा न की जाए।" वैशेषिक में — "समय न लगे बिना बने ही नहीं।" न्याय में —"उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता।" योग में—"विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाए (तो नहीं बन सकता)।" सांख्य में —"तत्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता और वेदान्त में —"बनानेवाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न न हो सके।" इसलिए सृष्टि छह कारणों से बनती है; उन छह कारणों की व्याख्या एक-एक की एक-एक शास्त्र में है। इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं। जैसे छह पुरुष मिलकर एक छप्पर उठाकर भित्तियों पर धरें वैसे ही सृष्टि-रूप कार्य की व्याख्या छह शास्त्रकारों ने मिलकर पूरी की है। जैसे पांच अन्धे और एक मन्द-दृष्टि को किसी ने हाथी का एक-एक देश बतलाया। उनसे पूछा कि हाथी कैसा है? उनमें से एक ने कहा—खंभे, दूसरे ने कहा सूप, तीसरे ने कहा मूसल, चौथे ने कहा झाड़ू, पाँचवें ने कहा चौतरा और छठे ने कहा काला-काला चार खंभों के ऊपर कुछ भैंसा-सा आकारवाला है। इसी प्रकार आज-कल के अनार्ष नवीन ग्रन्थों को पढ़ने और प्राकृत भाषावालों ने ऋषि-प्रणीत ग्रन्थ न पढ़कर नवीन क्षुद्र-बुद्धिकल्पित संस्कृत और भाषाओं के ग्रन्थ पढ़कर एक-दूसरे की निन्दा में तत्पर होके झूठा झगड़ा मचाया है। इनका कथन बुद्धिमानों के वा अन्य के मानने योग्य नहीं।" —स० प्र०, अष्टम समु०

दर्शन वेदांग हैं, अतः उनमें परस्पर भेद नहीं हो सकता। यहाँ हम कतिपय विषयों में दर्शनों का अविरोध दिखाते हैं—

ईश्वर

वेदान्तदर्शन ब्रह्म के विचार से ओत-प्रोत है। ब्रह्म क्या है? वेदान्तदर्शन में इसका उत्तर दिया है—

जन्माद्यस्य यतः ॥—वेदा० १।१।२

जो इस संसार की उत्पत्ति, पालन और विनाश करने वाला है, वही ब्रह्म है।

कुछ विद्वानों का ऐसा विश्वास है कि न्यायदर्शन में परमात्मा का वर्णन नहीं है। उनके भ्रम-भञ्जन के लिए निम्न प्रमाण प्रस्तुत है—

ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात् ॥—न्या० ४।१।१९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनेक बार पुरुष-कर्मों की असफलता देखे जाने से यही निश्चय होता है कि ईश्वर ही कर्मफल-प्रदाता और सृष्टि का कारण है।

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् ।। वैं०१।१।३

नित्य, निर्दोष ईश्वर का वचन होने से वेद की प्रामाणिकता है।

ईश्वरप्रणिधानाद्वा ।।—यो० १।२३

ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण द्वारा अतिशीघ्र समाधिलाभ होता है।

कुछ लोग सांख्य के रचयिता कपिलाचार्य को नास्तिक मानते हैं परन्तु यह मत समीचीन नहीं है। ईश्वर के सम्बन्ध में महर्षि कपिल की मान्यता है—

स हि सर्ववित् सर्वकर्त्ता ।।—सां० ३।५६

वह परमात्मा सर्वान्तिर्यामी और सब जगत् का कर्त्ता है।

ईदृशेश्वरसिद्धिः सिद्धा ।।---सां० ३।५७

ऐसे सृष्टिकर्त्ता परमात्मा की सिद्धि सिद्ध है अथवा उसकी सिद्धि इस शास्त्र में दृढ़तापूर्वक की गई है।

कुछ भाष्यकारों का मत है कि मीमांसा में परमात्मा का खण्डन है परन्तु यह भी अयुक्त है।

देवताश्रये च ।।—मी० ६।२।१६

शास्त्र का ज्ञान देवता—परमेश्वर का आश्रय लेने से ही हो सकता है, अन्यथा नहीं।

इस प्रकार सभी दर्शनकार परमात्मा की सत्ता को स्वीकार करते हैं, साथ ही उसे शरीर और इन्द्रियों से रहित, सर्वज्ञ, सर्वद्रष्टा, सर्वसाक्षी, कर्मफल-प्रदाता आदि भी बताते हैं।

जीवात्मा

सभी दर्शनकार जीवात्मा को नित्य, अल्पज्ञ, ज्ञानादि गुणों से युक्त एकदेशी तथा कर्मफलभोक्ता मानते हैं। जीव और ब्रह्म एक नहीं हैं। इनका पृथक्-पृथक् प्रतिपादन किया गया है—

आनन्दमयोऽभ्यासात् ।।--वै०१।१।१२

ब्रह्म की निरन्तर उपासना से जीवात्मा आनन्दमय हो जाता है। इस सूत्र से ब्रह्म और जीव का भेद स्पष्ट है।

भेदव्यपदेशाच्च ।।– वै० १।१।१७

नात्माऽश्रुतेर्नित्यत्वाच्च ताभ्यः ।। —वे०२।३।१७

वेद में भी जीवात्मा तथा परमात्मा का भेद बताया गया है।

जीवात्मा उत्पन्न नहीं होता, क्योंकि उसकी जन्म-मरणविषयक श्रुति उपलब्ध नहीं होती।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नित्यत्वाच्चानित्यैर्नास्ति सम्बन्धः ।। मी० ६।७।५

जीवात्मा के नित्य होने से उसका अन्य पदार्थों से कार्यकारण सम्बन्ध नहीं, अर्थात् जीव उत्पन्न नहीं होता।

शरीरदाहे पातकाभावात् ।। न्या० ३।१।४

शरीर के जलाने में पाप न होने से आत्मा शरीर से पृथक् है। इस सूत्र में महर्षि गौतम ने जीवात्मा की नित्यता का प्रतिपादन किया है।

तस्य द्रव्यत्वनित्यत्वे वायुना व्याख्याते ।। वै० ३।२।५

जैसे कारण रूप वायु नित्य तथा गन्धगुण युक्त होने से द्रव्य है वसे ही जीवात्मा किसी कारण से उत्पन्न न होने से नित्य और ज्ञानादि का आश्रय होने से द्रव्य है।

प्रकृतिपुरुषयोरन्यत् सर्वमनित्यम् ।। सां० ५।६८

प्रकृति और पुरुष (जीवात्मा और परमात्मा) को छोड़कर शेष सब कुछ अनित्य है।

इस प्रकार सांख्य में भी जीव की सत्ता को नित्य माना है।

सदा ज्ञाताश्चित्तवृत्तयस्तत्प्रभोः पुरुषस्यापरिणामित्वात् ।। यो० ४।१८

चित्त की वृत्तियाँ सदा ही जानी जाती हैं, क्योंकि जीवात्मा नित्य एवं अपरिणामी है।

इस प्रकार सभी दर्शनों से यह सिद्ध है कि जीवात्मा जन्म-मरण से रहित अतएव नित्य है। सभी दर्शनकार उसे चेतन और ज्ञाता भी मानते हैं।

ज्ञोऽत एव ।। वे० २।३।१८

आत्मा नित्य होने और श्रुति द्वारा वैसा प्रतिपादित होने से ज्ञानवान्, चेतन और अभौतिक कहा जाता है।

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिंगम् ।। न्या० १।१।१०

इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान आत्मा के लक्षण हैं।

वैशेषिक ३।२।४ में महर्षि कणाद ने भी जीव को ज्ञान गुणवाला स्वीकार किया है।

कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति ।। यो० ४।३४

ज्ञानशक्तिरूप जीवात्मा का सर्वद्रष्टा परमात्मा के स्वरूप में प्रतिष्ठित होने का नाम कैवल्य—मोक्ष है।

यहां महर्षि पतञ्जलि ने जीव को चेतन एवं ज्ञानवाला लिखा है।

चिदवसाना भुक्तिस्तत्कर्मार्जितत्वात् ।। सां० ६।५५

चेतन, ज्ञानवान् जीवात्मा ही कर्त्ता और भोक्ता है।

जीवात्मा के सम्बन्ध में एक और समस्या है कि जीवात्मा का परिमाण क्या है ? दर्शनों के अर्वाचीन टीकाकारों में इस विषय में मतभेद है। कोई जीवात्मा को विभु—सर्वव्यापक मानता है, कोई मध्यम परिणाम वाला और कोई अणु-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिणाम वाला मानता है। हमारे विचार में सभी दर्शनकार जीवात्मा को अणु-परिणाम मानते हैं। कुछ प्रमाण प्रस्तुत हैं—

उत्क्रान्तिगत्यागतीनाम् ॥ वै० २।३।१६

मृत्यु के पश्चात् जीव का शरीर से निकलना, पुनः गति करके दूसरे शरीर में आना-जाना आदि बातों से सिद्ध है कि जीव अणु है, क्योंकि विभु में गमन आदि नहीं हो सकते।

अर्थववेद १०।८।२५ में **'बालादेकमणीयस्कम्'** कहकर जीवात्मा को बाल से भी सूक्ष्म बताया है। मुण्डकोपनिषद् ३।१।६ में **'एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः'** — यह आत्मा अणु है, अतः इसका ज्ञान चित्त से ही करना चाहिए।

अविरोधश्चन्दनवत् ॥ वै० २।३।२३

जैसे शरीर में एक स्थान पर चन्दन लगाने से उसकी शीतलता का भान सर्वत्र होता है, इसी प्रकार जीवात्मा एक स्थान में रहता हुआ सर्वत्र कार्य करता है।

पुनरुत्पत्तिः प्रेत्यभावः ॥ न्या० १।१।१६

आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करता है, इसी को पुर्नजन्म कहते हैं। इससे सिद्ध है कि महर्षि गौतम जीव का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना-जाना मानते हैं, और यह गमन-आगमन विभु में हो नहीं सकता, यह तो अणु में ही सम्भव है।

अन्य दर्शनों से भी यही सिद्ध होता है कि जीव एकदेशी तथा अणु है।

जीव कितने हैं ? दर्शनों के अनुसार जीव अनेक हैं—

अंशो नानाव्यपदेशात् ॥ वै० २।३।४३

जीव एकदेशी है, क्योंकि वेद में अनेक जीव बतलाये गये हैं।

व्यवस्थातो नाना ॥ वै० ३।२।२०

व्यवस्था से जीव अनेक हैं। सुखी-दुःखी, जीवित-मृत बद्ध-मुक्त, पापी-पुण्यात्मा, रंक-राजा आदि की व्यवस्था होने से जीव अनेक हैं। यदि जीव एक ही हो तो यह व्यवस्था नहीं हो सकती।

जन्मादिव्यवस्थातः पुरुषबहुत्वम् ॥ सां० १।१४९

जन्म-मरण, सुख-दुःख आदि की व्यवस्था से जीव अनेक हैं, एक नहीं।

श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम् ॥ यो० १।२०

अन्य योगियों को श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रज्ञा से 'उपायप्रत्यय' नामक असम्प्रज्ञात समाधि सिद्ध होती है।

इस सूत्र में महर्षि पतञ्जलि भी जीवों की अनेकता को स्वीकार करते हैं।

सभी शास्त्रकार जीवात्मा को कर्त्ता और भोक्ता भी मानते हैं। इस विषय में निम्न प्रमाण द्रष्टव्य हैं—

कर्त्ता शास्त्रार्थवत्वात् ॥ वै० २।३।३३

जीवात्मा कर्त्ता है, क्योंकि वेदों में जीवात्मा को कर्त्ता कहा गया है।

शास्त्रफलं प्रयोक्तरि तल्लक्षणत्वात्तस्मात्स्वयं प्रयोगे स्यात् ॥ मी० ३।७।१८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शास्त्रविहित अग्निहोत्रादि का फल कर्त्ता को मिलता है, अतः उनका अनुष्ठान स्वयं करना चाहिए। इससे यह सिद्ध है कि मीमांसाकार जीव को कर्त्ता मानते है।

न कर्मकर्तृसाधनवैगुण्यात् ॥ न्या० २।१।५६

यदि वेद में प्रतिपादित कर्मों का फल नहीं मिलता तो उसका कारण यह है कि कर्त्ता, कर्म और साधन में कोई दोष है। यहाँ महर्षि गौतम जीव को कर्त्ता मान रहे हैं।

प्रवृत्तिनिवृत्ती च प्रत्यगात्मनि दृष्टे परत्र लिंगम् ॥ वै० ३।१।१९

प्रत्येक आत्मा में प्रवृत्ति—अनुकूल कार्य को करना और निवृत्ति—प्रतिकूल कार्य को न करना दृष्टिगोचर होता है। इस सूत्र से सिद्ध है कि प्रवृत्ति और निवृत्ति का कर्त्ता जीव है।

कर्तुः फलावगमः ॥ सां० १।७१

फल की प्राप्ति कर्त्ता को ही होती है।

द्रष्टादृशिमात्रः शुद्धोऽपि प्रत्ययानुपश्यः ॥ यो० २।२०

द्रष्टा जीवात्मा शुद्ध होता हुआ भी कर्मों का कर्त्ता है।

आत्मेन्द्रियमनोऽर्थसन्निकर्षात्सुखदुःखे ॥ वै० ५।२।१५

आत्मा, इन्द्रिय, मन और विषय के परस्पर सम्बन्ध से आत्मा में सुख-दुःख आदि की अनुभूति होती है। यहाँ स्पष्ट ही आत्मा को भोक्ता कहा है।

भोक्तृभावात् ॥ सां० १।१०८

भोक्ता होने के कारण आत्मा शरीर से पृथक् है।

भोगापवर्गार्थं दृश्यम् ॥ यो० २।१८

यह संसार जीवात्माओं के भोग और मोक्ष के लिए है।

इन सभी सूत्रों द्वारा आत्मा का भोक्ता होना स्पष्ट है।

प्रकृति

जीव और ब्रह्म की भाँति प्रकृति की भी स्वतन्त्र सत्ता है। प्रकृति भी नित्य है। प्रकृति जड़ है और कार्य जगत् का उपादान कारण है। सभी दर्शनों में जीव को भोक्ता, परमात्मा को निमित्त कारण और प्रकृति को उपादान कारण माना है। कुछ प्रमाण प्रस्तुत हैं—

प्रकृतिश्च प्रतिज्ञादृष्टान्तानुपरोधात् ॥ वे० १।४.२३

प्रकृति जगत् का उपादान कारण है, क्योंकि वेदों में प्रकृतिविषयक प्रतिज्ञा और दृष्टान्त पाये जाते हैं।

साक्षाच्चोभयाम्नानात् ॥ वे० १।४।२५

वेदों में साक्षात् दोनों कारणों का पृथक्-पृथक् उल्लेख होने से यह सिद्ध होता है कि जगत् का निमित्त कारण ब्रह्म और उपादान कारण प्रकृति है।

सत्त्वरजतमसां साम्यावस्था प्रकृतिः ॥ सां० १।२६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्त्व, रज और तम की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है।

यहाँ सांख्यकार ने प्रकृति की सत्ता स्वीकार की है।

सदकारणवन्नित्यम् ॥ वै० ४।१।१

जो वस्तु सत्ता वाली है, जो किसी दूसरे से उत्पन्न नहीं होती, वह पदार्थ नित्य कहलाता है, ऐसी मूल प्रकृति इस जगत् का उपादान कारण है।

मुक्ति और उसके साधन

मुक्ति और उसके साधनों के विषय में भी सभी दर्शनकारों का एक ही मत है, अवलोकन कीजिए—

तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः ॥ न्या० १।१।२२

जन्म-मरण रूप दुःख से छूटकर परमानन्द को प्राप्त होने का नाम मुक्ति है। यहाँ महर्षि गौतम ने दुःखों से छूटने को मुक्ति माना है।

ब्राह्मणे जैमिनिरुपन्यासादिभ्यः वै० ४।४।५

मुक्त जीव दुःखों से छूटकर ब्रह्म के आनन्द में रहता है। इस सूत्र से यह स्पष्ट है कि जीव मुक्ति में ब्रह्मानन्द का अनुभव करता है।

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः। सां० १।१

तीनों प्रकार के दुःखों से अत्यन्त छूट जाने को मुक्ति कहते हैं। यहाँ कपिलाचार्य ने भी दुःखों से छूटने को मुक्ति माना है।

पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति। यो० ४।३४

जब गुणों के द्वारा जीव को सांसारिक सुख-दुःख मिलना बन्द हो जाता है तथा जीवात्मा परमात्मा के स्वरूप में स्थिर हो जाता है, उसे मुक्ति कहते हैं। यहाँ पतञ्जलि ने दुःखाभाव और ब्रह्मप्राप्ति को मोक्ष माना है।

तदभावे संयोगाभावोऽप्रादुर्भावश्च मोक्षः। वै० ५।२।१८

शरीरधारक मनः कर्म के अभाव होने पर शरीर से आत्मा के संयोग का अभाव और शरीरान्तर का प्रादुर्भाव न होना (जन्म-मरण के चक्र से छूटने का नाम) ही मोक्ष है।

मोक्ष-प्राप्ति के साधनों के विषय में भी दर्शनकारों में विरोध नहीं, मतैक्य ही है।

अरण्यगुहापुलिनादिसु योगाभ्यासोपदेशः। न्या० ४।२।४१

वन, गुहा और नदी आदि के तट पर बैठकर मुक्ति के लिए योगाभ्यास करना चाहिए।

तदर्थं यमनियमाभ्यामात्मसंस्कारो योगाच्चाध्यात्मविध्युपायः। न्या० ४।२।४५

मोक्ष-प्राप्ति के लिए यम-नियम-योग और अध्यात्म-शास्त्रोक्त उपायों द्वारा आत्मा का संस्कार करना चाहिए।

ध्यानधारणाभ्यासवैराग्यादिभिस्तन्निरोधः। सां० ६।२९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ध्यान, धारणा, अभ्यास, वैराग्य आदि से उन वासनाओं, चित्त की वृत्तियों का निरोध करना चाहिए।

अभिषेचनोपवासब्रह्मचर्यगुरुकुलवासवानप्रस्थयज्ञदानप्रोक्षणदिङ्नक्षत्रमन्त्रकाल-नियमाश्चादृष्टाय । वै० ६।२।२

स्नान, उपवास, ब्रह्मचर्य, गुरुकुलवास, वानप्रस्थ, यज्ञ, दान, मन्त्रों का जप आदि धर्म मुक्ति के लिए होते हैं—

शमदमाद्युपेतः स्यात्तथापि तु तद्विधेस्तदंगतया
तेषामवश्यमनुष्ठेयत्वात् । वै० ३।४।२७

मुमुक्षु को चाहिए कि वह शम-दम आदि साधनों से मुक्ति प्राप्त करे। क्योंकि वे मुक्ति के अंग हैं, अतः उनका अवश्य अनुष्ठान करना चाहिए।

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानासमाधयोऽष्टावंगानि । यो० २।२६

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये योग के आठ अंग हैं।

जीव मुक्ति से भी वापस आता है। दर्शनकारों का इस विषय में भी एक ही मत है—

इदानीमिव सर्वत्र नात्यन्तोच्छेदः । सां० १।१२४

इस सर्ग के समान सब सर्गों में संसार का अत्यन्त उच्छेद नहीं होता। मुक्ति के पश्चात् जीव पुनरपि संसार में लौटता है।

कुछ लोग सांख्य और वेदान्त के निम्नलिखित सूत्रों को मुक्ति से न लौटने के पक्ष में लगाते हैं—

न मुक्तस्य पुनर्बन्धयोगोऽप्यनावृत्तिश्रुतेः । सां० ६।१७

मुक्तात्मा का मोक्ष से बन्धन में आना सम्भव नहीं, क्योंकि श्रुति से अनावृत्ति सिद्ध है।

अनावृत्तिशब्दादनावृत्तिशब्दात् । वै० ४।४।२२

शब्द प्रमाण से सिद्ध है कि जीव मुक्ति से नहीं लौटता, नहीं लौटता।

इन सूत्रों का ऐसा अर्थ करना उचित नहीं है। इन सूत्रों का तात्पर्य केवल इतना है कि—

यावदायुष्यं ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते । छांदो० ८।१५।१

जब तक मुक्ति की अवधि है, तब तक उसकी पुनरावृत्ति नहीं होती; अवधि समाप्त होने पर तो लौटता ही है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है

सभी दर्शनकार वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। यथा—

शास्त्रयोनित्वात् । वेदा० १।१।३

अनेक विद्याओं से युक्त प्रदीपवत् सब अर्थों का प्रकाश करने वाले सर्वज्ञ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शास्त्र का कारण ब्रह्म है। ऐसे सर्वज्ञ गुणों से युक्त शास्त्र को सर्वज्ञ परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं बना सकता।

औत्पत्तिकस्तु शब्दस्यार्थेन सम्बन्धस्तस्य ज्ञानमुपदेशोऽव्यतिरेकश्चार्थेऽनुपलब्धे तत्प्रमाणं बादरायणस्यानपेक्षत्वात् । मी० १।१।५

वेद के प्रत्येक पद का अर्थ के साथ स्वाभाविक सम्बन्ध है, अतः वह धर्म के यथार्थ ज्ञान का साधन है, क्योंकि वह परमेश्वर द्वारा उपदिष्ट है। जो अर्थ प्रत्यक्ष आदि किसी भी प्रमाण से उपलब्ध नहीं होता उसका उपदेश भी वेद द्वारा परमात्मा ने किया है, अतः वेद स्वतः प्रमाण है।

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् । वै० १।१।३

ईश्वर का वचन होने से वेद-चतुष्टय का प्रमाण है।

मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात् । न्या० २।१।६९

मन्त्र और आयुर्वेद के प्रामाण्य की भाँति वेद का भी प्रामाण्य है, क्योंकि वह परमपुरुष, पूर्ण आप्त परमात्मा द्वारा उपदिष्ट है।

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् । यो० १।२६

वह परमेश्वर काल द्वारा नष्ट न होने के कारण पूर्ण ऋषि-महर्षियों का भी गुरु है।

निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम् । सां० ५।५१

परमात्मा की निज शक्ति—स्वाभाविक शक्ति से प्रकट होने के कारण वेदों का स्वतःप्रामाण्य है।

पुनर्जन्म

मनुष्य के शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार उसका पुनर्जन्म होता है, इस विषय में भी सभी दर्शनकार एकमत हैं। प्रमाण निम्नलिखित हैं—

पुनरुत्पत्तिः प्रेत्यभावः ।। न्या० १।१।१९

मरने के पश्चात् शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि के साथ जीवात्मा के पुनः संबंध को पुनर्जन्म कहते हैं।

पूर्वाभ्यस्तस्मृत्यनुबन्धाज्जातस्य हर्षभयशोकसम्प्रतिपत्तेः ।। न्या० ३।१।१९

सद्योजात—अभी-अभी पैदा हुए बालक को हर्ष, भय, शोक आदि होते हैं, इससे सिद्ध होता है कि पुनर्जन्म है।

प्रेत्याहाराभ्यासकृतात् स्तन्याभिलाषात् ।। न्या० ३।१।२२

जन्म होते ही बालक स्तनपान की अभिलाषा करता है, बालक का यह अभ्यास पुनर्जन्म का साधक है।

स्वरसवाही विदुषोऽपि तन्वनुबन्धोऽभिनिवेशः ।। यो० २।९

विवेकशील पुरुष भी मरना नहीं चाहता, मरने से सब डरते हैं। यह अभिनिवेश—मरणभय पुनर्जन्म का साधक है।

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः ।। यो० २।१३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अविद्यादि क्लेश, संस्कार और वासनाओं के शेष रहने पर उनके फल, जाति, आयु और भोग का चक्र चलता रहता है, अर्थात् पुनर्जन्म होता रहता है।

ऊर्ध्वं सत्त्वविशाला: ।। सां० ३।४८

सत्त्व प्रधान—सतोगुणी पुरुष उच्च योनियों में जन्म लेते हैं।

तमोविशालामूलत: ।। सां० ३।४९

तमोगुणी पुरुष तिर्यक् तथा स्थावर आदि नीच योनियों में जन्म लेते हैं।

मध्ये रजोविशाला: ।। सां० ३।५०

रजोगुण-प्रधान जीव मध्य योनियों में जन्म लेते हैं।

इस प्रकार सांख्यदर्शन में पुनर्जन्म का प्रतिपादन है।

कृतप्रयत्नापेक्षस्तु विहितनिषिद्धावैयर्थ्यादिभ्य: ।। वै० २।३।४२

जीव को अपने कर्म के अनुसार ही शुभ-अशुभ फल तथा दूसरा शरीर मिलता है। यदि ऐसा न हो तो विहित तथा प्रतिषिद्ध सब कर्मफल निष्फल हो जाएँ।

तदभावे संयोगाभावोऽप्रादुर्भावश्च मोक्ष: ।। वै० ५।२।१८

शुभाशुभ कर्म का अभाव होने से जीव का पुनर्जन्म नहीं होता और पुनर्जन्म के न होने से मोक्ष हो जाता है।

इस प्रकार सभी दर्शनों में पुनर्जन्म को स्वीकार किया गया है।

एक प्रसिद्ध विरोधाभास का परिहार

मीमांसा दर्शन में शब्द को नित्य माना है, परन्तु न्याय में शब्द को अनित्य माना है—यह प्रत्यक्ष विरोध है।

विरोध नहीं है। शब्द दो प्रकार के होते हैं— एक नित्य और दूसरा अनित्य। इनमें जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध परमेश्वर के ज्ञान में हैं, वे सब नित्य ही होते हैं और जो हम लोगों की कल्पना से उत्पन्न होते हैं, वे अनित्य हैं। मीमांसा में वैदिक शब्दों को ही नित्य सिद्ध किया गया है, क्योंकि उनका अधिकरण परमेश्वर नित्य ज्ञान वाला है। उसका ज्ञान कभी भी नष्ट नहीं हो सकता।

इस प्रकार शब्द की नित्यता और अनित्यता के विषय में दर्शनों में कोई विरोध नहीं है।

भारतीय दर्शनों की कुछ विशेषताएँ

भारतीय दर्शनों की सबसे बड़ी विशेषता उनका व्यावहारिक पक्ष है। उनका उद्देश्य है नाना प्रकार के दुःखों से पीड़ित मनुष्यों को राग-द्वेष और अविद्या से छुड़ाकर मोक्ष की प्राप्ति करा देना।

भारतीय दर्शन की दूसरी विशेषता है—आशावाद। दुःखमय वर्तमान से असन्तोष हुए बिना सुखमय भविष्य की कल्पना दुराशामात्र ही है। इस जगत् पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ृष्टिपात करने पर विवेकीजन इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह संसार नितान्त दुःखमय है। इस दुःख का कारण द्रष्टा और दृश्य का संयोग है। इस दुःख को दूर करना है और दुःख को दूर करने के लिए मार्ग खोजना है। इस प्रकार भारतीय दर्शन वर्तमान दशा से असन्तोष प्रकट कर उसके सुधारने का प्रयत्न करता है।

भारतीय दर्शन की तीसरी विशेषता है—नैतिक व्यवस्था में विश्वास। मनुष्य जो कर्म करता है, उनका लोप नहीं होता, अपितु उन कर्मों से एक 'अपूर्व' की सृष्टि होती है। यही अपूर्व फलोत्पत्ति का प्रधान कारण है। न्याय-वैशेषिक में इसी 'अपूर्व' को अदृष्ट की संज्ञा दी गई है।

भारतीय दर्शन की चौथी विशेषता है—कर्मसिद्धान्त। मनुष्य जो भी कर्म करता है, उसका नाश कभी नहीं होता तथा जिस फल को हम भोग रहे हैं, वह पूर्वजन्म में किये हुए कर्म का ही फल है। कर्म-सिद्धान्त को स्वीकार कर मनुष्य जहाँ एक ओर पाप करने से बच जाता है, वहाँ दूसरी ओर शुभ कर्मों के अनुष्ठान से अपनी आगामी जीवन को उच्च, दिव्य एवं महान् बना सकता है।

भारतीय दर्शन की पाँचवीं विशेषता है—मोक्षमार्ग का निर्देश। संसार में बन्धन का कारण है अविद्या। अविद्या से बन्धन होता है और ज्ञान से मुक्ति। जीवन-यापन के दो मार्ग हैं—प्रेय और श्रेय। मनुष्य प्रायः आपाततः रमणीय विषयों की ओर आकृष्ट होकर संसार में प्रवृत्त होता है। इस प्रवृत्ति का मूल कारण है राग और द्वेष। यह प्रेय मार्ग मनुष्य की अधोगति का कारण है। श्रेय मार्ग मनुष्य के मंगल का मूल है। दर्शनकार इस मंगल-मार्ग पर आरूढ़ होने के लिए यम-नियम आदि अष्टांग योग का विधान करते हैं। मनुष्य को जैसे भी हो इस संसार के उच्छेद के लिए, त्रिविध तापों से छूटने के लिए, ब्रह्म की प्राप्ति के लिए महान् प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करना चाहिए।

दर्शनों का काल

दर्शन कब लिखे गये, इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। दर्शनकारों ने इस विषय में कोई लिखित प्रमाण नहीं छोड़ा है। परन्तु एक बात सुनिश्चित है कि सभी दर्शन ऋषियों द्वारा प्रणीत हैं और ऋषियों का युग महाभारत तक अविच्छिन्न रहा है। अतः दर्शन महाभारत से पूर्व और महाभारत-काल के आस-पास लिखे गये। इस प्रकार दर्शनों का समय आज से कम-से-कम पांच सहस्र वर्ष पूर्व है। पाश्चात्य लेखकों द्वारा निर्दिष्ट काल सर्वथा भ्रामक, तथ्यों से दूर और युक्तिशून्य है।

अपने नगर में 'जन-ज्ञान' मंगाएं। हम प्रतिमास २० प्रतियां ३० रु० की वी. पी. से भेजेंगे। आप केवल ४० रु० रक्षा धन भेज दें। यह धन एजेंसी समाप्त होने पर लौटा देंगे। —प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुस्लिम अत्याचारों की कहानी-४

—सीताराम गोयल

मध्यकालीन मुस्लिम इतिहास के क्षेत्र में सफेद झूठ बोलने के मामले में केवल शैक्षणिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद् ही दोषी नहीं। काफी समय से आकाशवाणी हिन्दी में एक कार्यक्रम प्रस्तुत कर रही है—इतिहास के झरोखे से। इस कार्यक्रम के सहारे श्रोताओं पर यह असर डालने की कोशिश की जाती है कि मुस्लिम शासकों के अधीन मध्यकालीन भारत में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच मैत्री भाव था – शान्ति थी। मुस्लिम शासक—विशेषतः औरंगजेब हिन्दुओं के प्रति दयाभाव दर्शाने के मामले में पहल करते थे और हिन्दुओं का ध्यान रखते थे। ऐसा असर डालने की कोशिश करने वाले असल में कहना यह चाहते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम फूट के जन्मदाता ब्रिटिश साम्राज्यवादी थे, जिनके "गन्दे खेल" को अब "हिन्दू साम्प्रदायिक" जारी रख रहे हैं।

आकाशवाणी के इस कार्यक्रम में वक्ता जो ऐतिहासिक प्रमाण देते हैं, उनमें सच्चाई को छिपाने और झूठ को उभारने की कोशिश की जाती है। उदाहरणार्थ औरंगजेब ने अपने चहेते हिन्दू दरबारियों के कहने पर यदि दो-तीन हिन्दू मन्दिरों को थोड़ी-बहुत राशि दान दे दी, तो इस बात को खूब उछाला जाता है। लेकिन इस बात की कभी चर्चा नहीं की जाती कि उसने अपने लम्बे शासनकाल में योजनाबद्ध तरीके से हजारों हिन्दू मन्दिरों को गिराया और देवी-देवताओं की असंख्य मूर्तियों को अपवित्र किया। पर्वतसदृश बड़े अपकार के मुकाबले में राई सदृश उपकार की चर्चा करने के ये दयनीय प्रयत्न भारतीय इतिहास के एक पूरे काल के सम्बन्ध में फैसला करने के मामले में मात्रासम्बन्धी समझ के विरुद्ध जाते हैं। इसके साथ ही हम उस दास मनोवृत्ति का दुःखद दृश्य देखते हैं, जो भारत में इस्लामी साम्राज्यवाद के दीर्घकाल के दौरान कुछ खास किस्म के हिन्दू बुद्धिजीवियों ने पैदा की। मालिक को यह दैवी अधिकार प्राप्त है कि वह अपने गुलाम को दिन भर में हजार बार ठोकर मारे। लेकिन यदि मालिक चांदनी रात में गुलाम को देखकर मुस्करा दे, तो उसे उसके प्रति आभार प्रकट करना चाहिए। यदि कोई इस्लामी पुनरुत्थानवादी अथवा मुसलमानों का कोई वकील इस्लामी साम्राज्य के गीत गाये, तो यह बात समझ में आती है। लेकिन किसी हिन्दू का इस कार्यक्रम में सम्मिलित होना अपने को गिराने की पराकाष्ठा है। धर्मनिरपेक्षता की कितनी भी दुहाई दी जाये, इस पाप को छिपाया नहीं जा सकता।

जो लोग ऐसा बचकाना प्रचार करते हैं, उनसे पूछा जा सकता है कि यदि मध्यकालीन भारत में इस्लाम का रिकार्ड इतना ही उज्ज्वल और निर्दोष है, तो लीपापोती की इस रस्म-अदायगी की क्या आवश्यकता है? चन्द्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त, हरिहर, बुक्का, महाराणा प्रताप, शिवाजी और गुरु गोविन्दसिंह (हम कुछ ही नाम ले रहे हैं) को तो ऐसी लीपापोती की कभी आवश्यकता नहीं पड़ी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आखिर अलाउद्दीन खिलजी, फीरोज तुगलक, सिकन्दर लोधी और औरंगजेब (हम कुछ ही सर्वाधिक कुख्यात शासकों के नाम दे रहे हैं।) सदृश राक्षसों ही को बार-बार प्रशंसा की आवश्यकता क्यों पड़ती है? इस प्रश्न का उत्तर मध्यकालीन भारत के मुस्लिम इतिहासकारों ने दिया है। उन्होंने अपने नायकों को इस्लामी आदर्शों के अमिट रंग में चित्रित किया। उन्होंने उस दिन की कल्पना नहीं की थी, जब भारत में इस्लामी साम्राज्यवाद अतीत की दुःख स्मृतिमात्र रह जायेगी। उन्होंने यह नहीं सोचा था कि एक दिन भारत में इस्लाम के रिकार्ड को मानव मूल्यों की तराजू पर तोला जायेगा। अब बहुत देर हो चुकी है कि मध्यकालीन भारत में इस्लाम को उसकी रक्तरंजित गाथा से अलग करने की कोशिश की जाये। जब रूढ़िवादी मुस्लिम इतिहासकार मानते हैं कि मध्यकाल के मुस्लिम शासकों ने काफिर पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की हत्या करके, उन्हें बन्दी और दास बनाकर व उन पर अत्याचार करके एवं मूर्तिपूजा के स्थलों को अपवित्र करके, उन्हें तहस नहस करके और नष्ट करके व अपवित्र बहुदेवतावादियों का सब धन छीन कर इस्लाम के आदेशों का ही पालन किया, तब वे अपनी ईमानदारी का परिचय दे रहे होते हैं। अलीगढ़ से पढ़कर निकले इतिहासकार और उनके धर्मनिरपेक्षतावादी संरक्षक इतिहास में उल्लेखनीय गन्दा रोल अदा करने वालों का सही चरित्रचित्रण न करके जालसाजी का परिचय दे रहे हैं।

मैं पिछले लेखों में बता चुका हूं कि दिल्ली के शाही सिंहासन पर बैठे कुछ सुलतानों ने हिन्दुओं के साथ क्या बरताव किया। जब दिल्ली के सुलतान कमजोर पड़ गये, तब उनकी अधीनता से मुक्त होकर अपने छोटे-छोटे राज्य स्थापित करने वाले सरदारों ने भी हिन्दुओं से कुछ बेहतर सलूक न किया।

सूबों के मुस्लिम सरदार

सन् १३९१ में गुजरात के मुसलमानों ने दिल्ली के तुगलक सुलतान नसीरुद्दीन मुहम्मद से शिकायत की कि स्थानीय सूबेदार फरहत-उल-मुल्क हिन्दुओं के प्रति सहिष्णुता का बरताव कर रहा है। सुलतान ने तुरन्त मुजफ्फरखां को नया सूबेदार बनाकर भेज दिया। दिल्ली के सुलतान के देहान्त के बाद वह आजाद हो गया और सन् १३९२ में उसने मुजफ्फरशाह की पदवी धारण की। अगले ही वर्ष उसने सोमनाथ पर चढ़ाई कर दी और हिन्दुओं द्वारा पुनर्निर्मित मन्दिर को एक बार फिर तहस-नहस कर दिया। हिन्दुओं को उनकी 'धृष्टता' का मजा चखाने के लिए उसने अनेक हिन्दुओं की हत्या की और प्राचीन मन्दिर के स्थान पर मस्जिद खड़ी कर दी। हिन्दुओं ने उस मन्दिर का पुनर्निर्माण किया। सन् १४०१ में मुजफ्फरशाह विशाल सेना के साथ फिर आया। एक बार फिर उसने अनेक हिन्दुओं की हत्या की, मन्दिर को गिराया और मस्जिद की स्थापना की। सन् १४११ में मुजफ्फरशाह का स्थान उसके पहले अहमदशाह ने लिया। तीन वर्ष बाद अहमद ने सारे गुजरात में सब मन्दिरों को नष्ट करने के लिए एक विशेष दारोगा की नियुक्ति की। अहमदशाह ने सिद्धपुर पर आक्रमण किया, जहां उसने रुद्रमहालय में मूर्तियां नष्ट कीं और मन्दिर को मस्जिद में परिवर्तित किया।

सन् १४५८ में महमूद बेगढ़ा गुजरात का सुलतान बना। वह अपनी किस्म का निकृष्टतम जनूनी था। उसका एक गुलाम जूनागढ़ का मांडलिक था,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसने कभी भी सुलतान को उसका देय भाग देने से इनकार न किया था। इसके बावजूद महमूद ने सन् १४६९ के जूनागढ़ पर आक्रमण किया। मांडलिक के प्रोटेस्ट पर महमूद ने कहा कि धन में उसकी उतनी दिल चस्पी नहीं, जितनी इस्लाम के प्रचार में है। मांडलिक को जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया और जूनागढ़ का नाम बदलकर मुस्तफाबाद रख दिया गया। सन् १४७२ में महमूद ने द्वारिका पर आक्रमण किया, मन्दिर को नष्ट कर डाला और नगर को लूटा। महमूद ने चम्पानेर के शासक जयसिंह और उसके दीवान की हत्या कर दी, क्योंकि पराजित होने के बाद उन्होंने मुसलमान बनने से इनकार कर दिया था। उनके राज्य को नष्टभ्रष्ट किया गया और लूटा गया। चम्पानेर का नाम बदल कर महमूदाबाद रख दिया गया।

मालवाके महमूद खिलजी (सन् १४३६-१४६९) ने भी हिन्दू मन्दिरों को नष्ट किया और उनके स्थान पर मस्जिदें बनवाईं। उसने हिन्दुओं का अधिकाधिक अपमान किया। बंगाल के इलियास शाह (सन् १३३९-१३७९) ने नेपाल पर आक्रमण किया और काठमांडू में स्वयम्भूनाथ के मन्दिर को नष्ट किया। उसने उड़ीसा पर भी आक्रमण किया, अनेक मन्दिरों को नष्ट किया और अनेक स्थानों को लूटा। गुलबर्गा और बीदर के बहमनी सुलतानों ने अपना पाक फर्ज समझ रखा था कि प्रतिवर्ष एक लाख हिन्दू पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की हत्या की जाये। उन्होंने सारे दक्षिण भारत में मन्दिर गिराये और अपवित्र किये।

बाबर

जब बाबर लोधियों और राजपूतों से युद्ध में विजयी हुआ, तब एक बार फिर दिल्ली घटनास्थल बना। मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर को मुसीबत में धैर्य, आपत्तियों के मुकाबले में साहस, अनेक नदियों को तैर कर पार करने, फूलों और फलों के प्रेम आदि बातों के लिए बहुत प्रशंसा मिली है। लेकिन उसने स्वयं तुजके बाबरी में अपना जो चित्रण किया है, उसे यदि उसकी क्रूरताओं के रंग में रंगा हुआ देखा जाये, तो उसका व्यक्तित्व घृणित रूप में सामने आता है। उसने 'काफिरों' की हत्या के जो अनेक बीभत्स विवरण दिये हैं, उन्हें पढ़ कर इस बात में कोई सन्देह नहीं रहता कि उसे अपनी उपलब्धि पर बहुत गर्व था। उसने हिन्दुओं के साथ जो अनेक युद्ध किये, उनके दौरान और उनके बाद काटे गये हिन्दू सिरों का ढेर लगाने का उसे खास तौर पर बहुत शौक था। इस 'दृश्य' को देखने के लिए उसे अपने शाही तम्बू में बैठना पसन्द था। बन्दियों को उसके सामने लाया जाता था और उसके 'बहादुर' सिपाही उन्हें जिबह करते थे। एक अवसर पर जमीन पर इतना खून गिरा और वह कांपती लाशों से इतनी भर गई कि तीन बार उसके तम्बू को उच्चतर धरातल पर ले जाना पड़ा। वह युद्धबन्दियों को पकड़ने और लूटमार का सामान जमा करने का कोई अवसर न खोता था। उसने मन्दिर गिराने और मूर्तियां तोड़ने का 'पुण्य न कमाया' तो इसलिए कि फीरोज तुगलक और सिकन्दर लोधी सदृश उसके पूर्ववर्तियों ने उस (बाबर) द्वारा आक्रान्त क्षेत्र में कोई मन्दिर अथवा मूर्ति छोड़ी ही न थी। उसने जिस वंश की स्थापना की, उसके प्रत्येक सम्राट् का फर्ज था कि वह गाजी (इस्लाम का योद्धा) बनकर दिखाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शेरशाह सूरी

शेरशाह सूरी का नाम पेशावर से ढाका जाने वाली सड़क, काफिलों के लिए बनाई गई सरायों और जनहित की अनेक अन्य योजनाओं के साथ जोड़ा जाता है। यह सत्य है कि वह आदतन हिन्दुओं पर जुल्म न ढाता था। लेकिन जब सन् १५४३ में रायसेन में परीक्षा का समय आया, तब उसने इस्लाम को धोखा न दिया। शेख नूरुलहक ने जुबादतुल तवारीख में लिखा है कि 'सन् ९५० में रायसेन किले पर एच. पूरनमल का कब्जा था। उसके हरम में एक हजार औरतें थीं। इनमें अनेक मुसलमानियां भी थीं, जिन्हें वह अपने सामने नचवाता था। शेरखां ने मुस्लिम-सुलभ क्रोध के वशीभूत होकर इस किले को जीतने का फैसला किया। जब उसने किला जीत लिया, उसके कुछ दिन बाद तय हुआ कि पूरनमल को अपने परिवार, बच्चों और चार हजार चुने हुए राजपूतों के साथ किले से जाने दिया जाये और उसे किसी भी रूप में परेशान न किया जाये। इस्लामी कानून के अनेक आलिमों ने राय दी कि जो समझौता हुआ है, उसके बावजूद इन सबको कत्ल कर दिया जाये। परिणाम यह हुआ कि हाथियों समेत सारी सेना ने पूरनमल के शिविर को घेर लिया। राजपूत बहुत बहादुरी से लड़े। उन्होंने अपनी औरतों और बच्चों की हत्या करने के बाद रणभूमि की ओर प्रस्थान किया और उनमें से एक भी न बचा। (क्रमशः)

आदर्श उदाहरण

दहेज के पंजों तले दबे समाज का छटपटाता कमजोर वर्ग बेबसी से कराह रहा है। लेकिन कभी-कभी बिरले उदाहरण ऐसे भी देखने-सुनने को मिल जाते हैं कि सिर बरबस श्रद्धा से झुक जाता है।

मध्यप्रदेश के रिटायर्ड आई. जी. पी. श्री श्यामनारायण शुक्ल के बेटे का विवाह होना था। घर धूमधाम और खुशियों से भरपूर था।

पुत्र—जिसका विवाह होने वाला था—अपने मित्रों के साथ बैठा गपशप कर रहा था।

'कलेवा के नेग में क्या मांगोगे ?...स्कूटर ही मांगना।' किसी अंतरंग मित्र की उसे सलाह थी।

'मैंने भी यही सोचा था।' भावी दूल्हे ने कहा।

उसे पता नहीं था कि कानून का पाबंद उसका पिता सारी बातें सुन रहा है।

अगले दिन शुक्लजी ने बेटे को बुलाकर कहा—'तुम्हें स्कूटर चाहिये था ? वह खड़ा है, अभी खरीदा गया नया स्कूटर तुम्हारे लिए। लेकिन याद रहे, लड़की के दरवाजे पर जाकर तुम कुछ भी नहीं मांगोगे। तुम भिखारी नहीं हो !'

पुत्र का सिर लज्जा से झुक गया। श्रद्धा तथा आदर का भाव आंखों में छलक आया अपने गौरवमय पिता के प्रति।

—निर्मला तिवारी, जबलपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) नई दिल्ली-५	माघ २०३६	रजि० नं० १०७११६ ६५ डी-सी-२०१

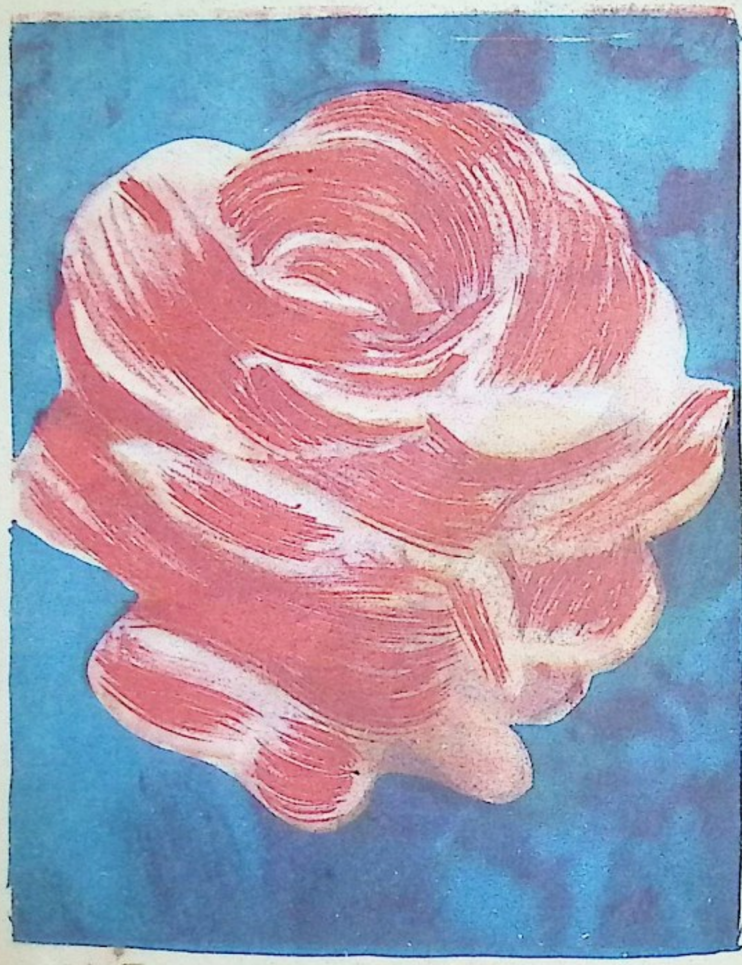

मुद्रक—प्रकाशक—संपादक
पंडिता राकेश रानी के लिए नरेन्द्र प्रैस दिल्ली में छपा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi